

वृषकल्पद्रुम
अर्थात्
पशुचिकित्सा



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई



श्री:

वृषकल्पद्रुम
अर्थात्
पशुचिकित्सा

तियरीग्रामनिवासी केशवसिंह ताल्लुकदारजी निर्मिता

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई-४.

संस्करण : जुन २०१३, संवत् २०७०

मूल्य : १०० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :

Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar
Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : <http://www.Khe-shri.com>

Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass
Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at
their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial
Estate, Pune 411 013

भूमिका



वर्तमान समयमें हमारे देशवासियोंका मूलधन कृषी (खेती) ही है। प्रायः सभी देशवासी इसीके द्वारा निर्वाह करते हैं और इसीके सहारे एक दो गौ-भैंस भी रख लेते हैं; परन्तु जब वे दरिद्रोपयोगी पशु दैविक अथवा भौतिक व्याधियोंसे ग्रसित होते हैं तब लोगोंको बहुत बड़ी कठिनायता होती है लेकिन विना उस विषयकी औषधी जाने बिचारे किसान कर ही क्या सकते हैं? उपरोक्त कठिनायताके निवारणार्थ यह देशहितैषी यन्त्रालय “पशुचिकित्सक” ग्रंथकी खोज ही में रहा करता था। निदान अब हमारे हितैषी ताल्लुकदार परमोदार केशवसिंह स्थान तियरी जिला उन्नावने यह ग्रंथ बनाय भेज दिया, इसमें बैल, गौ, भैंसादि पशुओंके रोगहारक यन्त्र और उनके चित्रसमेत शुभाशुभ लक्षण और सम्पूर्ण रोगोंके शमन करनेवाली अनेकाअनेक औषधियां वर्णित हैं। सब किसानों को यह परमोपयोगी पुस्तक अवश्य ही एक एक अपने घरमें रखना योग्य है, कारण कि इसके द्वारा वे पशुओंको भली भांति नीरोग रखके अपना काम ले सकेंगे।

आपका कृपापात्र—

छेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष ‘श्रीवेङ्कटेश्वर’ स्टीम् प्रेस, बम्बई

श्री :

अथ वृषकल्पद्रुमग्रन्थकी

विषयानुक्रमणिका

विषय.	पृष्ठांक.
देववन्दना	१
पशुशालारचनाविधि	२
चरहीकी विधि	"
पशु को सर्वरोग सर्वारिष्ट निवारण मन्त्र वा यन्त्र	३
यन्त्रविधि	"
गोवृष क्रय विक्रय मूहूर्तचक्र	४
पशुरक्षा, घरसें लाना या ले जानेका मुहूर्त	"
मुहूर्तका चक्र	५
वृषपशुयात्रा	६
पशुपीड़ानिवारण मन्त्र विधि	"
पशु वरदासि, रक्षाकरण मन्त्र	"
पशु रखने की विधि	७
हलकई वृषभ शुभाशुभ	९
गोवृष शुभाशुभ लक्षण	"
गोनेत्र अशुभ लक्षण	१०
अशुभ शृंग लक्षण	"
गोरंग अशुभ	"
अशुभदंत लक्षण	"
शीश वा मुख लक्षण	११
ग्रीवा लक्षण	"
खुरलक्षण	"
अङ्गलक्षण	"
जिह्वालक्षण	"
वदखुरिनके लक्षण	"
दुबरई वा ठाठिके लक्षण	१२

विषय.	पृष्ठांक.
अधिक वा हीन लक्षण	१२
अण्डकोषलक्षण	"
नसों वा रंगोंके लक्षण	"
मूत्र लक्षण	"
नेत्र लक्षण	१३
श्याम तारु जीभ ओठ लक्षण	"
श्वासलक्षण	"
लिंगलक्षण	"
शृंगलक्षण	"
रंगलक्षण	१४
फुलहारंगलक्षण	"
नेत्रलक्षण	"
कायरवृषभलक्षण	"
शुभलक्षण	१५
ओठ लक्षण	"
इन्द्रियलक्षण	"
अंगलक्षण	"
खुरलक्षण	"
छाती वा ठाठिके लक्षण	१६
त्वचा वा रोमलक्षण	"
शृंगलक्षण	"
पुच्छ लक्षण	"
नेत्र वा श्वासलक्षण	"
कंघलक्षण	१७
चालके लक्षण	"
जंघालक्षण	"
नेत्रलक्षण	"
अंगलक्षण	१८
अंडकोषलक्षण	"
हंसावृषभलक्षण	"

विषय.	पृष्ठांक.
लक्ष्मीप्रातिकरण वृषभलक्षण	१९
हलना दोष	"
डोलना दूसरा नाम नेहर	"
झुमनादोषलक्षण	"
अंगहीन वृद्धिदोष नांदिया वगैरह	२०
धूसरिदोषलक्षण	"
नसुडिया नहसुवा	"
अहिमुखीदोष	२१
चौकदार भडका करै	"
हरिणीपटिया दोषी	"
लमटंगा	"
पंगुदा वृषलक्षण	"
डिलमुहा योयिया	२२
पंडुरिया नाम वृष	"
कुसादरूह	"
अश्व सीना वृषलक्षण	"
तवर गँवर वृषलक्षण	"
कमरी वृषलक्षण	"
कुलिञ्जवृषलक्षण	२३
कुडकन्नावृषलक्षण	"
झुपिया वृषलक्षण	"
वेवरिहा वृषलक्षण	"
चकैया वृषदेहिका लक्षण	"
फतेपेशानी	"
मृगानेत्र अशुभ लक्षण	२४
कञ्जानेत्र अशुभ लक्षण	"
ताखीदीप लक्षण	"
कानानेत्र अशुभ लक्षण	"
ऐंचाताना व डेरानेत्र लक्षण	"
त्रे कोया चितला शुभ लक्षण	"

विषय.	पृष्ठांक.
नेत्रपलक चितला शुभ लक्षण	२५
भुङ्चिता-नेत्र अशुभ लक्षण	"
भुङ्-नेत्र गजनेत्रलक्षण	"
कोतेचक्षुष्य वृषलक्षण	"
चितखोवा नेत्र लक्षण	"
दन्तदोष छद्दिर लक्षण	२६
छद्दिर दन्तदोष लक्षण	"
नवदन्त अशुभ लक्षण	"
दन्तनिपोसा वृष अशुभ लक्षण	"
सुतरदन्त वृष अशुभ लक्षण	"
मरकदन्ता वृष मध्यम लक्षण	२७
दन्तलक्षण व प्रमाण	"
बूढे बैलकी पहचान	२८
खुर फैला वृषभ लक्षण	"
पोलिया खुर लक्षण	"
खुरचपाती वृष लक्षण	"
खुरखुरा वृष लक्षण	२९
खुरकटा वृषभ लक्षण	"
खुटघसीटा वृषभ लक्षण	"
कचखुरा वृषभ लक्षण	"
शृङ्गोंके लक्षण शुभाशुभ वर्णन	३०
मीराशृङ्ग लक्षण	"
वडशृङ्ग लक्षण	"
मेढियाशृङ्ग लक्षण	"
भेढियाशृङ्ग लक्षण	"
औघीचाचरिशृङ्ग लक्षण	"
वकियाशृङ्ग लक्षण	"
सरगापत्तालीशृङ्ग लक्षण	३१
कचाशृङ्गलक्षण	"
सरैयाशृङ्गलक्षण	"
कोकिलाशृङ्गलक्षण	"

विषय.	पृष्ठांक.
मैनाशृङ्गलक्षण	३१
डुण्डाशृङ्गलक्षण	३२
डुण्डावृषभपैदायशी	"
मुण्डाशृङ्गलक्षण	"
मुण्डापैदायशीशृङ्गलक्षण	"
मोटशृङ्गावृषलक्षण	"
चिरशृङ्गावृषलक्षण	३३
वेदियाशृङ्गलक्षण	"
खुरकपलीनाशृङ्गलक्षण	"
गरैलाशृङ्गलक्षण	"
खुरखुराशृङ्गलक्षण	"
कोडियाशृङ्गलक्षण	३४
वृषरंगशुभाशुभलक्षण	"
चौरारंगपूछका	"
चौरारंगदेहका शुभ	"
चौरासोनहरारंगलक्षण	"
कचेलियारंगलक्षण	"
कजरारंग	३५
श्यामकर्णरंग	३५
चंदुवा टिकुवारंग	"
मुहुधोवाश्वेतवदन	"
पीलारंग	"
रकसाधुमलयारंग	"
भूरारंग	३६
सकीलरंग	"
करदुम्मारंग	"
ललदुम्मारंग	"
कबरारंग अरुण	"
चितलारंग दुइतरहका है	३७
करआतेलियारंग	"

विषय.	पृष्ठांक.
करवा वृषरंग	३७
नीलवृषरंग	"
गोरवारंग	"
गीरसिरवा	३८
मुसरिहा रंग दोष	"
फुलहारंगकुष्ठिदोष	"
तिलहारंग	"
मखियारारंग	"
भोडावृषभ रंग	३९
कागवदन रंग	"
चौदह रंगके पृथक् २ लक्षण	"
गरियार रखादरवृषलक्षण	"
बैठुवाखादर लक्षण	"
मनखादर लक्षण	४०
चमकुल खादरलक्षण	"
मध्यमघीरा चलैके लक्षण	"
महिदोषघूसरिवर्णन	"
छंजन दोष	४१
खन्दयल दोष	"
मूसरि महिषको	"
महिषके शुभभौरी वर्णन	"
गिरिहा भौरीवृषभ अशुभ	"
पुठ्ठिया भौरी	"
मुडलइयाभौरी अशुभ लक्षण	"
महिषीमातन गर्भधारण विधि	"
जो महिषी नांघेपर ठहरती न होय उसका उपाय	४३
गो महिषीके विवायके महीना प्रमाण	४४
गो महिषी विवायके महीना अशुभ	"
यन्त्र सर्वपशुओंके बियातीबेर क्लेश होइ सो निवारण	"
महिषियोंके बियानेपर	"
दबा खानेकी	४५

विषय.	पृष्ठांक.
गो महिषीका दूध सूख जाता है तिसकी दवा	४५
गो महिषी दूध बढ़ानेको मंत्र	४६
तथा यंत्र	४६
तथा दवा	"
सब चीपायोंके रोगकी पहिचान; लक्षण	४७
पहिली पहिचान नेत्रलक्षण	"
दूसरी पहिचान मूत्र परीक्षा	"
तीसरी पहिचान गोबर लक्षण	"
चौथी पहिचान नाड़ी परीक्षा	४८
पांचवीं पहिचान कान छूनेकी दवा	"
छठईं पहिचान मिजाम परखैके लक्षण	"
चलनेकी थकवाहीकी दवा	४९
दवा मालिशकी	५०
सेंदुरुफ बटी	"
दवा अजमाई	"
थकवाहीपर औटी	५१
भरे वृषभके बुझावको बफारा देनेकी विधि	५२
महिष भरिजाय रस्ता चलेमें ताको उपाय	"
महिष वृषभ लादेते पीठ या छाती सूजि जाय तिसका उपाय	"
गरवा, पट्टारोग लक्षण दवा	५३
महिषकी मन्दाग्निका मसाला	५४
बमहा वृषभ लक्षण वा दवा	"
वृषभ तरवासेके लक्षण	५५
कूल तरनेकी दवा	"
दवा झिटका, चोट, मोंच, गुखरू डोले कूल वगैरे	५६
गुखरू अगले पैरके डोलेके उपाय	"
गुखरू दागेकी विधि	५७
सैंक	५९
कोई अङ्गमें गरमीते सूजनि होय ताकी दवा	"
कोई अंगकी गांठि-गिरह जोरमें जो कठोर बहुत हो जाय	"
गुम्बर निकर आवै ताकी दवा	"
कुम्हेडी रोग लक्षण	६०
नेत्रमें भेलावां लगानेके लक्षण	६१

विषय.	पृष्ठांक.
वृषभ वा महिषके कांधेमें झिटका लगानेकी दवा	६१
वृषभ वा महिषका कांध सूजै वा पाकै फूटे ताके लक्षण वा दवा	"
कांधे फूटि वहै वा पानी आवै ताको मलहम	६२
कांधेमें बार जामैका तेल	"
जखमपर यह दवा लगावे तो पाकै फूटे नहीं जल्दी सूखै	६३
फुरिया जखम घोनेका पानी	६४
जखम साफ करनेका मलहम	"
जखमसे खून बन्द करनेका	"
जखम साफ करनेका दूसरा मलहम	६५
जखममें पीव आनेपर मलहम	"
मलहम जखम जल्दी अच्छा करनेका	"
जान जखम अच्छा हो जाय सूखै न ताकी दवा	"
जखम अच्छेपर बार न जामेकी दवा	६६
कटी पूछपर बाळ जमनेका तेल	"
पशुका पेट फाटै आंतें निकसि आनेकी दवा	६७
वृषभके नासुरको मलहम	"
दागेके जखमपर लगानेका मलहम	६८
सब तरहकी फुरियोंके निकसनेका उपाय	६९
फुरिया पकावेकी दवा	"
फुरियामें मांस न बाढ़ै ताकी दवा	७१
वृषभके खुरफाटने व पीव पानी बहनेका मलहम	"
बदखुरिनकी इलाज	७३
कीराशाई नाशन विधि	"
बुझावकी दवा टठका, मन्त्र	७४
मलहम कीरा निवारण माछी न बैठे	७५
मलहम कंठमाला नाशक	७६
आदमियोंके लिये उत्तम मलहम	"
पनियारी रोग लक्षण	७७
बेलिपारोग लक्षण, दवा दागैकी विधि	"
घेघारोग लक्षण दवा बफारा, गोली, लेपन	७८
मसालासूजनि मिटानेकी	८०
दागैकी विधि	"
हैलुवा रोग लक्षण, दवा, लेपन, बफारा, मसाला	"

विषय.	पृष्ठांक.
आरजा, कण्ठदुःख, दवा, लेप, दाग	८१
हलकमें सूजन	८२
खुजलीकी दवा, लक्षण	८३
गजचर्मकी दवा	८५
खीरारोग लक्षण	८७
कच्छ राक्षस तैल, त्वचारोगनाशक	"
महामिरचाद्य तैल	८८
परिदुल रोगलक्षण, दवा,	८९
चुप्पारोग लक्षण, दवा,	"
पिगरोग दांतनका	९०
तारु रोग लक्षण व दवा	"
अनछरारोग लक्षण व दवा	"
मेझकीरोग लक्षण, (९१) दागकी विधि	९२
बहतारोग लक्षण व दवा	"
सूत वामरोग लक्षण व दवा	९३
अरजा मुखबन्द	"
वृषभके मुखमें कांटा हो जाते हैं	९४
बुमना रोग लक्षण वा दवा	"
बुमना रोग झरैरा मन्त्र	९५
उदर फूलके लक्षण व दवा	"
कटकवायुके लक्षण	९६
गुदामें बाती चलावैकी विधि	९७
सबतरहके पेटमें फूलैकी विधि	"
मन्त्र सावर पेट फुलैके झारैका	९८
दवा फूले वृषभकी	९९
शूल रोग लक्षण व दवा	"
हरकिस्मकी शूल व बदहजमीकी दवा	१००
शूल जो बहुत दिन होय ताते पेटमें सूजन आवे	१०१
करसारोग लक्षण दवा	१०२
गर्दनकी नस वा पठ्ठा चड्डियाय ताके लक्षण व दवा	१०३
नमका रोग लक्षण, दागनेकीविधि	"
अर्द्धांग रोग लक्षण, दवा दागनेकी विधि	१०५
आरजा निर्घंटका लक्षण, व दवा	१०६

विषय.	पृष्ठांक.
हृन् वायुके लक्षण, दवा	१०७
टनक वायु के लक्षण व दवा	१०८
दागकी शकल	१०९
वषला वायु लक्षण	"
सर्व रोग हरन उपाय	११०
कोई रोग न आवे ताकी दवा	"
मनियां फूट रोग लक्षण व दवा	"
ओदीरोग लक्षण, दवा टटका दागनकी विधि	११२
नेत्र पीड़ाके लक्षण व दवा	"
आंखिनकी फूलीमांडा ठेठरकी दवा	११३
रतौंधीकी दवा	११४
जारा, मांडा, फूली ठेठरके लक्षण व दवा	"
गोली जारा आंखिनको मिटानेकी दवा	११६
रजिना वृषभ लक्षण वा दवा	"
चपटी व किलोनिनकी दवा	११७
कमीला वृषलक्षण	११८
वृष महिषके झरीला रोग लक्षण व दवा	"
अण्डकोष सूज ताके लक्षण व दवा	११९
बफारा	१२०
गजचर्मरोग	१२१
जहरवात लक्षण व दवा	१२२
गरदब्या रोग लक्षण दवा	१२४
मटका रोग लक्षण दवा	१२५
बुडका नाम रोग लक्षण, दवा	१२६
धुरका नाम रोग लक्षण, दवा	"
बेघन रोग लक्षण दवा	१२७
चालीस मसाला चारों रोगपर	१२८
जहर खायेके लक्षण व दवा	१२९
शंखिया की गोली खायेके लक्षण व दवा	१३०
सिगिया जहरकी गोली खायेके लक्षण दवा	१३१
खुरपक्का ज्वरलक्षण वा दवा	१३२
तेल खुरपक्काके जखम परका	१३३
खूरपक्का खुरहाज्वर झारका मन्त्र सावर	१३५

विषय.	पृष्ठांक.
दूसरा सावर मन्त्र बुरका, दीड़ी, डोंवरा, खुरपका रोग नाशन	१३६
विषहरारोग लक्षण व दवा	१३७
विषरोग दूसरी किस्मका उसके लक्षण व दवा	"
शरदी वा वादीते वृषभ पोंकै ताके लक्षण व दवा	१३८
गरमीते वृषभ पोंकै ताकी दवा	१३९
महिषवृष रक्त पोंकै	१४०
पेसाव बन्द होइकै दवा	"
लोहजारोग लक्षण, दवा	१४१
पैरमें रस वादीउतरै ताके लक्षण व दवा	१४२
मसाला; लेप दागैकी विधि	१४३
पराकानाम रोग लक्षण दवा	१४४
सेरदमी रोगलक्षण व दवा	१४५
जारजा सांक दमीका	१४७
रोगखांसि वा घांसा	१४८
महाकल्याणपिंड	१५०
लेपन दिमागका	१५१
तिलानाम रोग लक्षण दवा	१५२
पकीबवाथ	१५३
सर्वविरण गरुड़मन्त्र	१५४
कोई पशु सूजी खाजाय ताके लक्षण, दवा	"
मसाला हाजमेका	१५५
सुजवा रोग लक्षण व दवा	१५६
महुवा बीसी रोग लक्षण व दवा	१५७
रस पित्ती उछरैके लक्षण व दवा	१५८
मसाला वसन्तऋतुका	"
मसाला ग्रीष्मऋतुका	१५९
मसाला वर्षाऋतुका	"
मसाला शरदऋतुका	१६०
मसाला अनेठि शरद व हेमन्तऋतुका	१६१
मसाला हेमन्तऋतुका घुंघुवारी पिंड	"
मसाला औटी शिशिरऋतुका	१६२
मसाला तनु पुष्ट करन हेमन्त ऋतुका	"
नास हिमऋतुका	"

विषय.		पृष्ठांक.
मसाला एलुआ पाग	...	१६३
मसाला सेंडुरुफ	...	"
मसाला छोहारा बाटी पाग	...	१६४
मसाला क्षुधाकर	...	"
मसाला हजमा व पाचनका शिशिरऋतुका	...	१६५
मसाला सर्वरोग उदर व्याधि वगैरहपर	...	"
मसाला कमताकतिका	...	१६६
मसालाका नाम अठरोजा	...	"
मसाला सब उदरव्याधिपर	...	१६७
मसाला बदहंजमी व देह सूजका	...	"
सारा मसाला	...	"
मसाला तयारीका	...	१६८
मसाला बदहजमीका	...	"
मसाला बादी बदजमीका	...	"
मसाला बहुत फायदेका	...	१६९
फस्त खोल वधिर लेवेकी जगह ल रगनके नाम	...	"
गोशांति	...	१७२

इति अनुक्रमणिका समाप्त





चि. १



पृ. ९

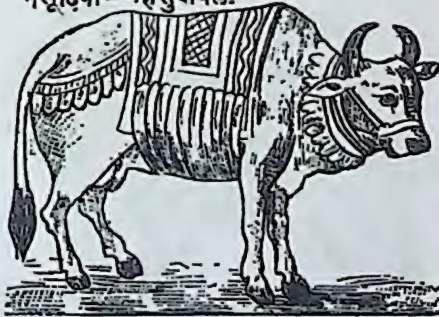
चि. २



पृ. १२

नसृदिया = नहसुबाबेल.

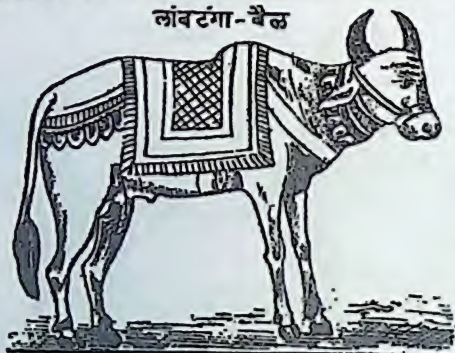
चि. ३



पृ. २०

લાંબટંગા - વૈલ

ચિ. ૪



પૃ. ૨૧

અશ્વસીના વૈલ.

ચિ. ૫



પૃ. ૨૨

તલારોવૈન વૈલ.

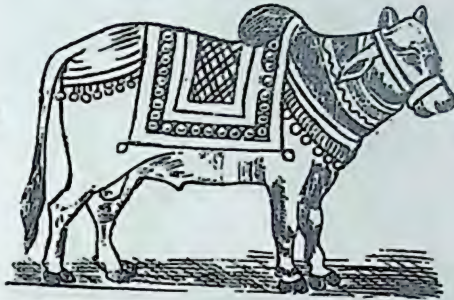
ચિ. ૬



પૃ. ૨૨

सुरफेला बैल.

चि. ७



पृ. २८

सुरपालिया बैल.

चि. ८



पृ. २८

सुरचपाती बैल.

चि. ९



पृ. २८

खुरखुरावैल.

चि. १०

पृ. २९



खुरकरावैल

चि. ११

पृ. २९



खुरघसियावैल.

चि १२

पृ. २९



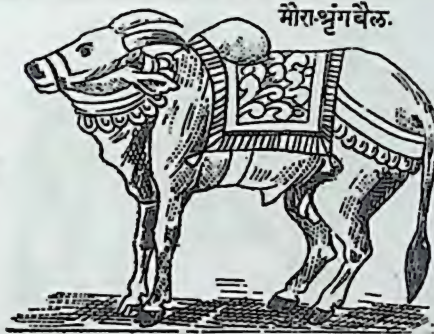
चि. १३



कचसुरा बैल.

पृ. २९

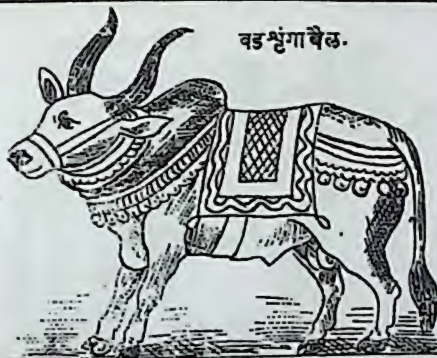
चि. १४



मौराशृंग बैल.

पृ. ३०

चि. १५

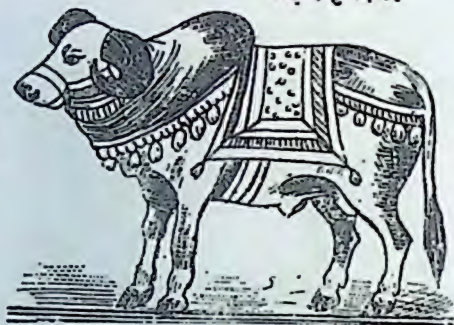


वडशृंग बैल.

पृ. ३०

भेडिया शृंगवैल.

चि. १६



पृ. ३०

भेडिया शृंगवैल.

चि. १७



पृ. ३०

ओंधी चाचरि वैल.

चि. १८



पृ. ३०

चि. १९



बकिचाभुंगबैल.

पृ. ३०

चि. २०



सरगापतालीबैल

पृ. ३१

चि. २१



कैंचाभुंगबैल.

पृ. ३१

चि. २२



पृ. ३१

चि. २३



पृ. ३१

चि. २४



पृ. ३१

चि. २५



डुंडाशृंगवैल.

पृ. ३२

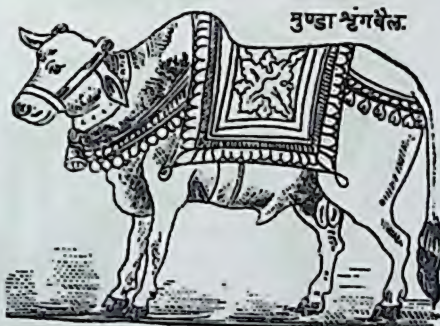
चि. २६



डुंडाशृंगपैदायसीवैल.

पृ. ३२

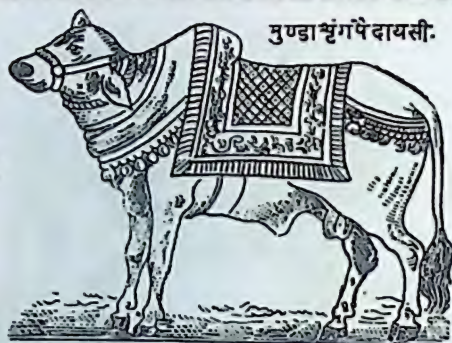
चि. २७



मुण्डा शृंगवैल.

पृ. ३२

चि. २८



मुण्डा शृंगपेदायसी.

पृ. ३२

चि. २९



मोट शृंगवैल.

पृ. ३२

चि. ३०



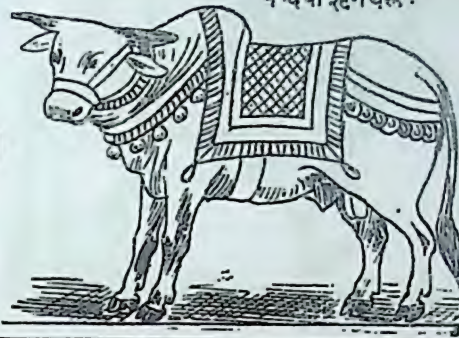
विर शृंगवैल.

पृ. ३२

वेदिया शृंगवेल.

चि. ३१

पृ. ३३



खुरकपली नाबैल.

चि. ३२

पृ. ३३



गरेला शृंगावैल.

चि. ३३

पृ. ३३



चि. ३४



सुटरबुदा शृंगवैल.

पृ. ३३

चि. ३५



को दिहां शृंगवैल.

पृ. ३४

चि. ३६



चौरा रंग देहका वैल.

पृ. ३४

चि. ३७



चीरा सोनहिता रंगका बैलः

पृ. ३४

चि. ३८



कचेलिया रंगका बैलः

पृ. ३४

चि. ३९



कजरा रंगका बैलः

पृ. ३५

श्याम कर्ण रंगकावैल.

चि. ४०



पृ. ३५

चदुवा टिकुवावैल.

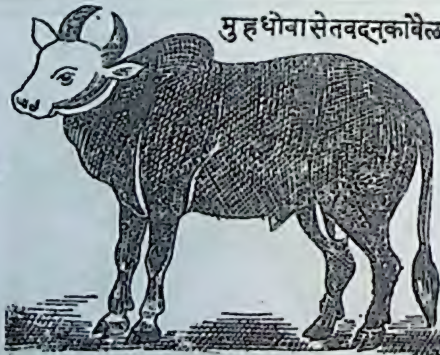
चि. ४१



पृ. ३५

मुह धोवा सेतवदत्तावैल

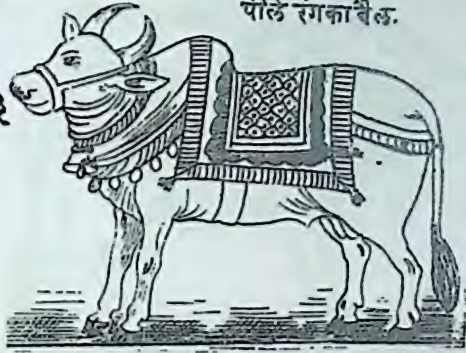
चि. ४२



पृ. ३५

चि. ४३

पीले रंगका बैल.



पृ. ३५

चि. ४४

रकसाधुमैले रंगका बैल.



पृ. ३५

चि. ४५

भूरे रंगका बैल.



पृ. ३६

चि. ४६

सकीलरंगकावैल.



पृ. ३६

चि. ४७

करदुम्भारंगवैल.



पृ. ३६

चि. ४८

ललदुम्भारंगवैल.



पृ. ३६

चि. ४९



कबरे रंगका बैल.

पृ. ३६

चि. ५०



बितलारंग बैल.

पृ. ३७

चि. ५१



कलुवा ते लिया रंगका बैल.

पृ. ३७

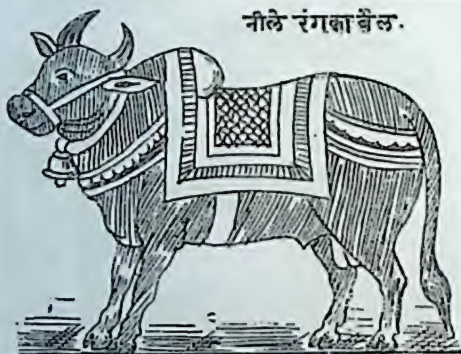
चि. ५२



कलुवा रंगका बैल

पृ. ३७

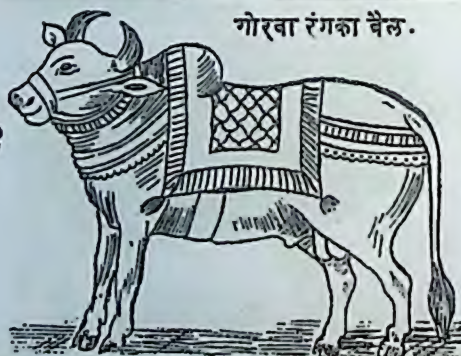
चि. ५३



नीले रंगका बैल.

पृ. ३७

चि. ५४



गोरवा रंगका बैल.

पृ. ३७

गोरखिखा रंगका बैल

चि. ५५



पृ. ३७

मुसरिहारंगका बैल.

चि. ५६



पृ. ३८

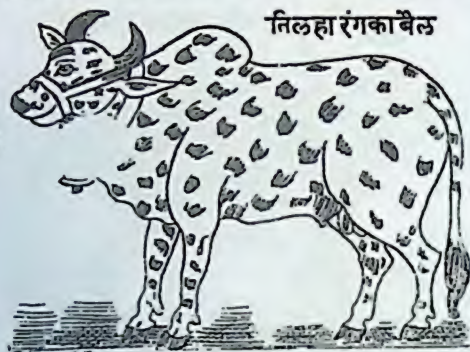
कुलहारंगकुष्ठी बैल

चि. ५७



पृ. ३८

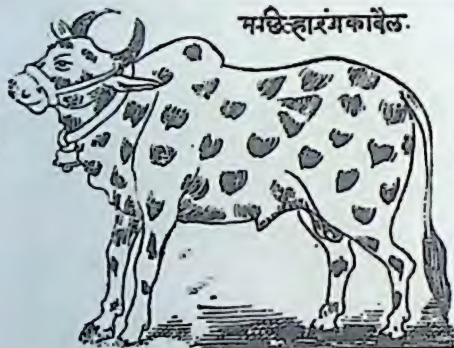
चि. ५८



तिलहारंगकावैल

पृ. ३८

चि. ५९



मछिहारंगकावैल.

पृ. ३८

चि. ६०



भोडारंगकावैल

पृ. ३८

चि. ६१



चंदन रंगका बैल

पृ. ३९

चि. ६२



भेडहाक रंगका बैल.

पृ. ३९

चि. ६३



कोवाक रंगका बैल.

पृ. ३९

(२४)

वृषकल्पद्रुम

केहरी रंगका बैल.

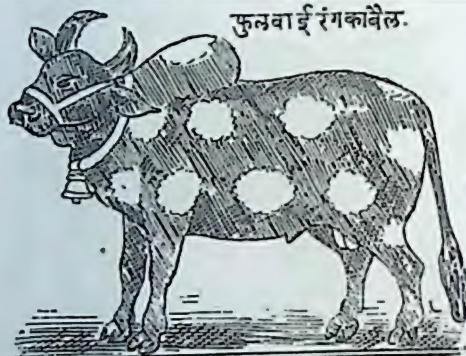
चि. ६४



पृ. ३५

फुलवाई रंगका बैल.

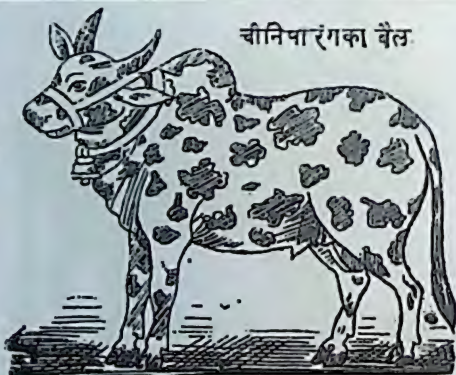
चि. ६५



पृ. ३५

चीनि पारंगका बैल.

चि. ६६



पृ. ३५

संदली रंगका बैल.

चि. ६७



पृ. ३९

किसमिती रंगका बैल.

चि. ६८



पृ. ३९

कांसियारंगका बैल.

चि. ६९



पृ. ३९

(२६)

वृषकरपट्टम

चम्पई रंगकावैल.

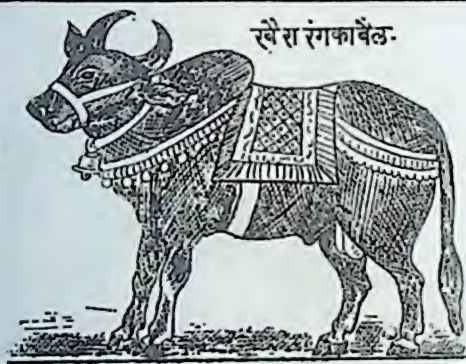
चि. ७०



पृ. ३९

खैरा रंगकावैल.

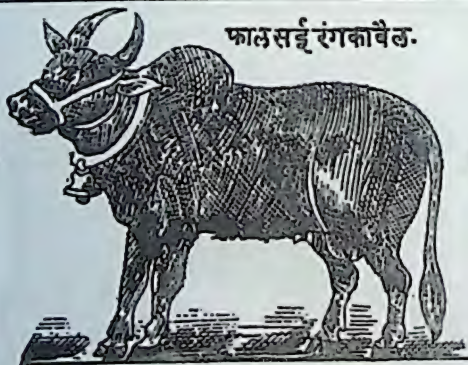
चि. ७१



पृ. ३९

फालसई रंगकावैल.

चि. ७२



पृ. ३९

चि.
७३

पेंढकुलियारंगका बैल.



प.
२९

चि.
७४

सोनहळे रंगका बैल.



प.
२९

चि.
७५

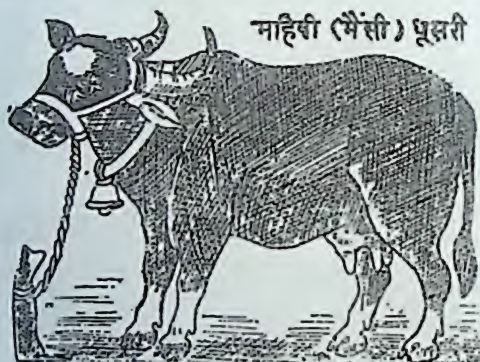
बादरके रंगका बैल.



प.
२९



चि. ७६ पृ. ३९



चि. ७७ पृ. ४०

श्रीगणेशाय नमः

वृषकल्पद्रुमप्रारंभः

*

दोहा-गणपति गिरिजा ईश अरू, विधिवंदौं करजोरि।
विष्णुचरणको ध्यान धरि, भाषों ग्रंथ बहोरि॥
कवित्त-सिद्धिके सदन गजवदन विशालतन दरश कियेते
वेगि हरत कलेशको। अरुणपरागको ललाटमें
तिलक सोहै बुद्धिके निधानरूप तेज ज्यों दिने-
शको॥ मंगलकरन भवहरन शरन गये उदित
प्रभावजाको विदित महेशको। जेते शुभकाजतामें
पूजिये प्रथमताहि ऐसे जगवंदन सोनंद महेशको॥

दोहा-वृषकल्पद्रुम ग्रन्थका, नाम कीन उच्चार।
कछु निदान रुजको कहौं, पशुसुख हेतु विचार॥
और दवा कछु दो सुनी, ग्रन्थनमें अवलोक।
लिखिहौं आगे ते सबै, हरन पशुनको शोक॥
वरणि शुभाशुभ कछुक विधि, थोरा और विधान।
बिगरो जो यह में लखो, सो सुधर विद्वान॥
संवतरसगुणग्रहशशी १९३६ पौषबदीतिथितीज।
ग्रन्थ अरंभन कीन तब, वृषतन ताको बीज॥
अवध राजधानी जहाँ, शहर लखनऊ जान॥
ताके पश्चिम जानियो, सोरह कोश प्रमान॥

जिला लिखौ उन्नावको; मियाँगञ्जके पास ।
 आसीवनको परगना, तियरि ग्राममें वास ॥
 तालुकदार कहावहीं, केशवसिंह अहीर ।
 तिन संग्रहकरि ग्रन्थ यह; हरन वृषभकी पीर ॥
 कुण्ड०-हिन्दुस्तानी फारसी, अंगरेजी मत और ॥
 तीनोंको संग्रह कियो, वृष पशुको शिरमौर ॥
 वृषपशुको शिरमौर, चिकित्सावरणिबखानौ ।
 दवा करौ ततकाल, रोगको जो पहिचानौ ॥
 कहैं केशवपरसाद, जौन नर बुद्धिसयानी ।
 तिनको मतलखि लिख्यो, ग्रन्थ यह हिंदुस्तानी ॥

अथ पशुशालारचना विधि

छ० कुकुभा-शीतउष्ण अरु बायु बचावै गृहकी रचा कीजै ।
 जामें रोग निकट नहि आवै सो प्रकार लखि लीजै ॥
 चारौ दिशा दिवाल अनूपम खिरकी बहुत रखावै ।
 शीतलमन्दसमीरवायु जहँ सुख पशुको उपजावै ॥
 ओस नीर आतपहि बचावै छाया पुष्ट करीजै ।
 एक झरोखा ऊपर राखै तेहि दुर्गधि हरीजै ॥
 मल अरु मूत्र साफ बहुराखै तहाँ रोग नहि आवै ।
 ऐसी पशुकी रक्षा कीजै सकल सुख उपजावै ॥
 दोहा-ढारूजमी बनाइये, जहां पशुनको स्थान ।
 दुःख बहुत बहुसुख बढै, जानौ यह मतिवान ॥

अथ चरहीकी विधि

श्लोक-स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तरसंयुतौ ।

वसुभिश्चहरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥ १ ॥

पशुरोगः पशोर्नाशः पशुलाभः पशुक्षयः ।

पशुरोगः पशोर्वृद्धिः, पशुभेदो बहुप्रदः ॥ २ ॥

अर्थ-दोहा-पशुकै चारा खायको, चरही नाप विधान ।

शुभ अरु अशुभ विचारिकै, रचना करौ सुजान ॥

चौ०-पशुमालिकके हाथन पाई। लंबाई चकलई मिलाई॥

आठभागदेजोबढ़िरहै। भिन्नभिन्नफलताके कहै॥

एकबचैपशुहानिकरावै। दुइकेबचेनाशफलपावै॥

तीनबचैपशुलाभसदाई। चारिबचेतेक्षयहोइजाई॥

पाँचबचैपशुरोगबढ़ावै। छःकेबचेवृद्धि उपजावै॥

सातबचैपशुभेदैजानौ। आठबचैबहुवृद्धिबखानौ॥

अथ पशुको सर्वरोगसर्वारिष्टनिवारणमंत्र वा यंत्र ।

अथ मंत्र परईका

श्लोक-अर्जुनःफाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।

बीभत्सुर्विजयीकृष्णः सव्यसाचीधनंजयः ॥

ॐ क्लीं श्रीं कुं कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ॥

ॐ गोरक्ष ॥ ॐ गोरक्ष ॥ ॐ गोरक्ष ॥

अथ यंत्रविधिः

चौ०-यकपरईमाटीकीलावै। पेंदीमधिमें छिद्र करावै॥

कलमकरैदाडिमकीलकरी। मसिसेलिखिपरइकेभितरी॥

मंत्र और श्लोकसमीता। रविदिन शुभजानौतेहि मीता॥

तेहिपरईकोधूपकरावै । अन्नदान कछु विप्र देवावै ॥

दरवाजेऊपरबँधवावै । गो वृष महिषकोरोगहटावै ॥

अथ गोवृषक्रयविक्रय मुहूर्तचिंतामणिमत

दोहा—छिप्र अत्य अरु कृत्तिका, इंद्र पुनर्वसु चन्द ॥

शतवशु क्रयविक्रय कहत, गाइनको मुनिवृन्द ॥

अन्यमत

दोहा

अन्यमत गोक्रय विक्रय मुहूर्त		
ति.	वा	नक्षत्र
१	सू.	ह.
२	चं.	पु.
३	बु.	रे.
४	वृ.	उये.
५	शु.	श.
६	श.	
७		
८		
९		
१०		
११		
१२		
१३		
१४		
१५		

रिक्ता अमातिथि अशुभ,
अरु मंगलको वार। जेनक्षत्र
शुभते कहौं कुरु तिनको
निरधार ॥ हस्त अश्विनी
पुष्य कहिं, और रेवती
जान। कृत्तिका इंद्र पुनर्वसु,
मृगशिर शतभिषमानु ॥
वासवमिलिशुभनखत ये,
क्रयविक्रय कहि सोय ।
सदा अनंदित रहत है
मनचीते फलहोय ॥ अथ
पशुरक्षा-घरमें लायके
चारा देना और दूसरे
मुहूर्त जेहि स्थानमें
राखन होय तेहिका
प्रवेश वा वहांते प्रथम
यात्रा । छन्द घनाक्षरी ॥

वृषकरूपद्रुम

(६)

मत मुहूर्तचिंतामणिका ॥ राशि शुभखगनकी अठवाँ
सदन शुद्ध जौनयाकीयोनि औ चरनखतगाये हैं । ऐसे
समयसदनमें पशुनको राख्यो जिन दिन तिनही असे
सुखपाये हैं ॥ रिक्तादरशआठैमंगलश्रवण ध्रुवचित्रामें
सदनते जिन बाहरे पठाये हैं । पाये सब दुःखतिन इनहीमें
राखे जिन तिन निजजीको भूरि शोक उपजाये हैं ॥ १॥

पशुरक्षा मु. ल. २ । ३ ४ । ६ । ७ । ९ । १२ । अष्टमशुद्धनिजमोती नक्षत्रमें प्रथम घर लानेका	पशुका प्रथमपशुस्थानमें प्रवेश और वहांसे प्रथम यात्रा या जुवां धरनेका मुहूर्त	पशुयात्राव्यवहार- समुच्चयका मत
---	---	-----------------------------------

ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	सु.	स्वा.	१		अ. म. कृ.	१	सू.	पू. ६.
२	चं.		२	सू.		२	चं.	ज्ये ध.
३			३		मृ. आ. पुन.	३		
६		पुन.	६	चं.	पु. ऽश्ले. म.	६	बु.	मृ. रे.
६	बु.		६	बु.		६		
७	बृ.	श्र.	७	बृ.	पू. ३ह. स्वा.	७	बृ.	वि. अ.
१०	शु.	ध.	१०	शु.		१०	शु.	ऽश्ले.
११			११		वि. ऽनु. ज्ये.	११		
१२	श.		१२	श.		१२		
१३		श	१३		सू. म. श.	१३		
१४			१४			१४		
१५			१५		रेवती.	१५		

अथ वृषपशुयात्रा

(व्यवहारसमुच्चयग्रन्थका मत)

दोहा-लिखो मुहूरत वृषभपशु, यात्रा करै जो कोय ॥
 यकव्यवहार समुच्चय, ग्रन्थमते कहि सोय ॥
 रिक्ता आमा अष्टमी, अरु मंगलके बार ॥
 इनमें जो यात्रा करै, ताको अशुभ विचार ॥
 मघा विशाखा अश्विनी, और ज्येष्ठा जान ॥
 तीनों पूर्वा रेवती, चंद्रशर्व वसु मान ॥
 ताको सदा सुमंगल, सुख भोगै बहु सोय ॥
 जो यहि मारगमें चलै, शोधि मुहूरत कोय ॥

अथ पशुपीड़ानिवारणमंत्र

भीमासुरिपशुबाधां हरहर पशूनव अवस्वाहा । इति मंत्र ॥

अथ विधिः

दोहा-यहि मन्त्रते झारई, सर्व पशुन सब रोग ।
 कागजपर मसिसे लिखै, तौन यंत्रको योग ।
 ऊपर सूत लपेटिकै औरो करो विधान ।
 आहुति घृतकी दीजियो, इकशत आठप्रमाण १०८
 हरि आहुतिमें मंत्र पढि, सुवाछुवावै यंत्र ॥
 फिर पढिकै बांधौ गरे, हरै रोग यह मंत्र ॥

अथ पशुवरदासि रक्षाकरण

ॐ भीमासुरिपशुबाधां हरहर पशूनव अवस्वाहा ॥

दोहा-जौन पशुनको ताकते, चारा पानी होय ।

तेरोगी कम होत हैं, जानि लेउ सब कोय ॥
 कम ज्यादा जिन पशुनको, चारा पानी देय ॥
 ते बेराम रोगी रहैं, ग्रन्थमते कहि सोय ॥
 स्वामी अपने पशुनको, राखै ख्याल कराय ।
 तासों अच्छा जानियो, रोगनते बचि जाय ॥
 जिनके पशु बहु दुखित हैं, स्वामीको है पाप ।
 अन्त नरकमें जात हैं, उनहिन केरे शाप॥

चौ०—जो जो रोग लिखे यहि माहीं। हवा ते बाजे होत वृषाहीं
 पवन समान रोग हैं जेते । बुरो समीर लागते होते ॥
 और कछुक रुज बाकी जे हैं । सकल पशुन दुख देत महा हैं ॥
 स्वामी पशुके रहैं भुलाने । चारा पानी देखि न जाने ॥
 यहि मैं लक्ष बहु रोगनके । खुले हवाल लीखे हैं तिनके ॥
 पशुन के रिअच्छे न कीरीती । स्वामी देखि राखि नित प्रीती ॥
 यहि पर ख्याल करै जे नाहीं । रोग पशुन पर फैलि जो जाहीं ॥
 पशुके स्वामिन को यह चहिये । घास पयार जमा करि धरिये ।
 पवन बुरो औ सूखा साला । समय मेह बहु बाढे ताला ॥
 आगे काम आइ है धरौ । चारा की गफलत मति करौ ॥
 दोहा—चारा जब नाहीं मिलै, तब पशु छोडि चराय ॥

नीक नकारा जो कछू; सो आगे चरिखाय ॥

चौ०—जहरदार घासै बहु पाता। तौ न खाय रोगी है शाता ॥
 घटे तलाव घास बहु जामैं । शरद प्रकीर्ति होत है तामैं ॥
 यहि के खाये रोग बढावै । पशुको वनमें नहीं चरावै ॥

दोहा-मतलबते ज्यादा चही, चारा जमा कराय ।

जेहिमा पशुघरके सकल, अच्छा चारा खाय ॥

चौ०-छाहींथानबंदेरहैजिनकोबीमारीतेबचिहैं तिनके॥

वर्षा और धूपते जानौ।शीतलनिशिकोपवनबखानौ ॥

इनतेबचैनीकसोकहियो।याप्रकारवरदासिकरैयो ॥

वरषैमेघभीजिदुखपावै।घास दुपहरी तनुदहकावै ॥

शीरोपवनरातिकोपाला।मारिजाडेनभयोविहाला ॥

ओसरातिकीतनुमेंलागी।इनसबतेदुखहोयअभागी॥

औरएकविधिरोगबढतहैं।मैला बुरा नीर पीवतहैं॥

बहुतसाफपानीकोदीजै।सुखीरहैतनुवृद्धिकरीजै॥

वृषकल्पद्रुमरीतिजोकरिहै।ताकोभलासदाईरहिहै॥

वृषकोताकुकरोदिनराती।सुखपावैवहसोबहुभाँती॥

सुनो खुराकएकवृषकेरी।थोरेदामन मिलै घनेरी॥

औरबातएककहाँ सुनाई।गो वृषतें है लाभ सदाई॥

वृषभजोतिमेहनतिबहुकरै।गाईदूधबेच्चअनुसरै॥

दोहा-अपनी जौन खुराकते. लाभ करै अधिकार ।

छाँडि दूसरो देति हैं, स्वामी पशु बीमार ॥

ग्रामनगरपुर लघु बडे, सकल बजार बखान ।

थोरे दामनसों मिलै, दवा जानु बुधवान ॥

लिखिहों याहीग्रन्थमें; सकल दवा परमान ।

पक्कों तौल तुलाइये, याको यही विधान ॥

अथ एक हलपर कई वृषभशुभाशुभ चाहिये ।

पाराशरमतेनोक्तम्

श्लोक-हलमष्टगवं धर्म्यं षट्गवं मध्यमं स्मृतम्
चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं वृषघातिनाम् ॥१॥

दोहा-एकै हलपर राखिये; कई वृष सुनौ प्रवीन ।
उत्तम मध्यम नीचके, लक्षण कहौ नवीन ॥

चौ-उत्तमजेहिकिसानकोभाखै।आठवृषभइकहलपरराखै
षट्बृषमध्यमसोपहिचानौ।चारिउकोयाहीविधिजानौ॥
अतिनिवृष्ट पशुघाती जोई । दुइवृषभे हल जोतै सोई
अथगोवृषशुभाशुभ लक्षण ॥ (देखो चित्र न० १) ॥
वाराहमिहिरकृत बृहत्संहिताका मत ॥ छन्दकुकुभा॥
बारहीकृत बृहत्संहिता ज्योतिषमत है जोई ॥
ताके अर्थ लिखौ भाषा में समुझै नर सब कोई ॥
गोवृषलक्षण कछुक शुभाशुभ प्यारे कहौ बखानी ॥
यह बिचारिकै जो कोइपालै ताकी होई न हानी ॥
धेनुदोषको नहीं बिचारो मुनिन कछुक लिखिराखा ॥
गो निन्दा मुखते मति भाषै मानुषतनु सुनि राखा ॥
श्लोक-पराशरःप्राह बृहद्रथाय गोलक्षणं तत्क्रियते

ततोऽयम् । मया समाप्तः शुभलक्षणास्ताः
सर्वास्तथाप्यागमतोऽभिधास्ये ॥ १ ॥

अर्थ-दोहा-पाराशरमुनिजो कह्यो, अन्यमुनिनसों भाखि।
ताहीको संक्षेप यह, गो वृषलक्षण राखि ॥

चौ०-गोवैं शुभलक्षणकी खानी ।

शास्त्ररीति शुभ अशुभ बखानी ॥

अथ गोनेत्र अशुभ लक्षण ।

श्लोक-अस्त्राविलरूक्षा मूषकनयनाश्च न शुभदा गावः ॥

प्रचलच्चिपिटविषाणकरटाःखरसदृशावरणाश्च ॥२॥

अर्थ

चौ० आंसूढारगऊजो जानौ । अरुमलीन आंखें पहिचानौ ॥

कछुक रुखाई नेत्रन होई । मूषकसमदृगजानौ जोई ॥

लक्षण इनमें एकौ देखै । महादोष ताको अवरैखै ॥

याको कछु संदेह न कीजै । अपने मुखते नाहिं भनीजै

अथ अशुभशृङ्गलक्षण

दोहा-हलना चपटा शृङ्ग जो, सकल अशुभकी खानि ।

ताहीको पहिचानियो, मुनिमत कह्यो बखानि ॥

अथ गोरंग अशुभ

दोहा-अरुण बरण गोगात सब, गुंजाके सम होय ।

पाराशर मुनिके मते, अशुभ रंग है सोय ॥

जौन गऊको देखिये, गर्दभरङ्ग समान ।

ताके लक्षण अशुभ हैं, मुनिमत कह्यो बखान ॥

अथ शुभदंतलक्षण

श्लोक-दशसप्तचतुर्दत्यः प्रलंबमुण्डाननाविनतपृष्ठाः ॥

ह्रस्वस्थूलग्रीवा यवमध्या दारितखुराश्च ॥३॥

अर्थ-दोहा-मुखमें देखौ दशन जो दशन गिनतीमें होय ॥

ताकेलक्षणअशुभहैं, जानि लेव सब कोय ॥
सातदशनजो देखिये, कीतौ चारि निहार ॥
याहूलक्षणअशुभहैं, मुनिमत कह्यो विचारि ॥

अथ शीश वा मुखलक्षण

दोहा-लंबे मुंडकि गाइ जो, की लंबा मुख होय ॥
और पीठिखाली लखौ, अशुभ जानियो सोय ॥

अथ ग्रीवालक्षण

दोहा-ठमकामाटी घोंच लखि, जवाकार जो होय ॥
पाराशरमुनि अशुभ कहि, जानि लेव सबकोय ॥

अथ खुरलक्षण

दोहा-फाटे खुरकी गाइ जो, सदा रहै खुर फाट ॥
पाराशरमुनि कहत हैं लेन न जायो हाट ॥

अथ अंगलक्षण

श्लोक-श्यावातिदीर्घजिह्वागुल्फैरतितनुभिरतिवृहद्भि-
र्वा अतिककुदाः कृशदेहा नष्टा हीनाधिकांग्यश्च ॥ ४ ॥

अथ जिह्वालक्षण

दोहा-लोहिया रँगकी जीभ है, बहु लंबा जो होय ।
अशुभ होत मुनिके मते, जो पहिचानै सोय ॥

अथ बदखुरिनके लक्षण

दोहा-जेहि गाईके बदखुरी, अति लंबी जो होय ।
की बहु छोटी देखिये, महादोष है सोय ॥

अथ दुबराई वा ठाठिके लक्षण

दोहा-जौन गऊ तनु दूबरी, ठाठि कि भारी होय ।

याहू दोषनमें गन्यो, सकल अलक्षण सोय ॥

अथ अधिक वा हीनलक्षण

दोहा-जेहि गाईके देहमें कोई अंग जो हीन ।

की तौ कोई अधिक लखि महादोष संगीन ॥

अथ वृषशुभलक्षण । (देखो चित्र नं० २)

श्लोक-वृषभोऽप्येवं स्थूलातिलंबवृषणः शिराततः ॥

क्रोडास्थूलशिराचितगण्डस्त्रिस्थानंमेहतेयश्च५

अथ अंडकोश लक्षण

दोहा-अंडकोश जेहि वृषभके- अतिमोटे जो होय ॥

अरु लंबे बहु देखिये; महादोष सो होय ॥

नसैं वा रगोंके लक्षण

दोहा-जौन वृषभके कोखमें, बहुत नसैं दिखराय ।

तेहि राखे घर अशुभ है, सब धन देइ बहाय ॥

चौहरि दोनोंमें लखो; बहुत नसैं जो होय ॥

अति बहुमोटी देखिये, महाअशुभ फल सोय ॥

मूत्रलक्षण

दोहा-मूतै वृष तब देखिये, तीनि जगह देइ मूति ।

बड़ो दोष है अशुभ अति, यासों करौ न प्रीति ।

श्लोक-मार्जाराक्षःकपिलः करटोवानशुभदोद्विजस्येष्टः

कृष्णोष्ठतालुजिह्वः श्वसनो यूथस्य घातकरः ॥६॥

अथ नेत्रलक्षण

अर्थ-दोहा-नेत्रहोयँ मारजारसम, कपिलरंग वृष जानि ।
अथवा गुंजाकी तरह, ब्राह्मणको शुभदानि ॥
और जातिको अशुभ है, याहि न लीज्यो कोय ।
जो घर राखै अस वृषभ, सब सुख डारे खोय ॥

श्यामतारू जीभ ओंठ लक्षण

दोहा-तारू ओंठ अरू जीभ लखि, श्यामवरण जो होय ।
महाअशुभ वृष जानियो, ताहि न राखो कोय ॥

अथ श्वासलक्षण

दोहा-बहुश्वासा जेहि वृषभके, आवै साफ गँभीर ।
यूथ नाशकर होय सोई, स्वामी रोग शरीर ॥

अथ लिंगलक्षण

श्लोक-स्थूलशकृन्मणिशृङ्गः सितोदराकृष्णसारवर्णश्च
गृहजातोऽपित्याज्यो यूथविनाशावहो वृषभः ॥७॥

दोहा-जौन वृषभके लिङ्गकी, पलई मोटी देखि ।
यूथनाशकर जानियो, मुनिमत कह्यो विशेषि ॥

अथ शृङ्गलक्षण

दोहा-पलईतक मोटे लखौ, शृंग बराबरि होय ।
यूथनाशकर जानियो, याहि लेउ मति कोय ॥

अन्यमत—

सोरठा-नाम सुरलिहा सोय, गोलशृंग बेनोकके ।
उपर बरोबरि होय, महादोष वृष त्यागिये ॥

रङ्गलक्षण

दोहा-मृगारङ्ग तनु देखिये, पेट सफेदी होय ।
यहू यूथको नाशकर, भूलि लेउ मति कोय ॥

अथ फुलहारंगलक्षण

श्लो०-श्यामाकपुष्पचितांगोभस्मारुण संनिभोबिडा-
लाक्षःविप्राणामपि न शुभं करोति वृषभः
परिगृहीतः ॥ ८ ॥

अर्थ-फुलहारंग लक्षण

दोहा-भस्मरंग तनु अरुण कछु, श्यामवर्णके फूल ।
चारों वर्णनको अशुभ, मति लीज्यो कोई भूल ॥

नेत्रलक्षण

दोहा-नेत्रबिलारीसम लखौ, सो दोषी वृष जान ।
देय कष्ट स्वामीनको, चारों वर्ण सुजान ॥

अथ कायरवृषभलक्षण

श्लोक-येचोद्धरंतिपादान्पंकादिव योजिताःकृशग्रीवाः।
कातरनयना हीनाश्च पृष्ठतस्तनभारसहाः ॥९॥

अर्थ-दोहा-जौनवृषभहलशकटरथ, चलतलेउ पहिचान।
पग मानौ चहला गडे, बोझ न सहै सुजान ॥

पतरी घींचको वृषभ जो, बोझे काचर होय ।
पीछेको धर हीन लखि, ऐसे जान्यो सोय ॥
आँखें जो भययुक्त हैं, भार न सहै सुजान ॥
ईचारौ लक्षण निरखि, वृष कायर पहिचान ॥

अथ शुभलक्षण

श्लोक—मृदुसंहतताम्रोष्ठास्तनुस्फिजस्तालुजिह्वाश्च ॥
तनुद्वस्वोच्चश्रवणाःसुकुक्षयःस्पष्टजंघाश्च॥१०॥

अर्थ—अथ ओष्ठलक्षण

दोहा—जाहि वृषभके ओंठलखि, अतिकोमल जो होय ।
और बराबरि देखिये, तांबेरंग शुभ सोय ॥

इंद्रियलक्षण

दोहा—इंद्रिय छोटी तामरंग, तारूपहि सम होय ।
जिह्वा यह रंग देखिये, महा सुलक्षण सोय ॥

अंगलक्षण

दोहा—छोटगठा तनु देखिये, ऊँचे श्रवण निहारि ।
कोखी सुन्दर होय दोड, ते लक्षण शुभकारि ॥
जांचैं दोनों श्रेष्ठ बहु, चपटी मिली न होय ।
याहू शुभ लक्षण कह्यो, जो पहिचानै कोय ॥

श्लोक—आताम्रसंहतखुराव्यूढोरस्कावृहत्कुदयुक्ताः ॥
स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वग्रोमाणस्ताम्रतनुशृंगाः ११॥

अथ खुरलक्षण

अर्थ—दोहा—लक्षण देखौ खुरनके, मिले एकमें होय

रंगति तांबेकी कछुक, महा सुलक्षण सोय ॥

छाती वा ठाठिके लक्षण

दोहा-छाती चौड़ी वृषभकी, भारी ठाठि जो होय ।

महाबली शुभ जानियो, याहि लेउ सब कोय ॥

त्वचा वा रोमलक्षण

दोहा-खाल रोम लखि नम्रता, चिकने होयँ महीन ।

पाराशर मुनि कहत हैं, ये लक्षण शुभदीन ॥

शृंगलक्षण

दोहा-छोटे शृंग तांबे वरण, सकल सुमङ्गल खानि ।

पाराशरमुनिको मतो, दीन्यों कछुक बखानि ॥

श्लोक-तनुभूस्पृग्वालंधयोरक्तांत विलोचनामहीच्छासा

सिंहरकंधास्तन्वल्पकंबलापूजिताःसुगताः॥१२॥

अथ पुच्छलक्षण

अर्थ-दोहा-पतरी लम्बी पूँछ जो, भूमें लागत जाय ।

यह शुभ लक्षण जानियो, मुनिमत दियो बताय ॥

नेत्र वा श्वासलक्षण

दोहा-नेत्रनको कोरैं लखौ, अरुण वरण जो होय ।

नथुननकी फुफकारमें, शब्द गँभीरी सोय ॥

ये लक्षण शुभ जानिये, कछु क्रोधी चितमाह ।

ऐसे वृषको पालिये, दिन दिन बढै उछाह ॥

कन्धलक्षण

सिंहवर्ण जो काँध है, बहु मोटो दरशाय ।

शुभलक्षणको वृषभ है, राखो घरमें लाय ॥

गरेकी खाल माने कमर ताके लक्षण ।

दोहा-कमरगरेकी खाल जो, लटकाते रहे हमेश ।

छोटे कोमल देखिये, यह लक्षण शुभ वेश ॥

चालके लक्षण

दोहा-चाल मनोहरको वृषभ, स्वामीको सुखदेत ।

ऐसे वृषभको राखिये, काम होय मनचेत ॥

अथ जंघालक्षण

श्लोक-वामावर्तैर्वामे दक्षिणपार्श्वे च दक्षिणवर्तैः ॥

शुभदाभवत्यनडुहोरेखाभिश्चैगकनिभभिः १३ ॥

अर्थ-दोहा-बाँइ जाँघके रोम लखु वामावर्त देखाय ।

दक्षिण जंघाके निरखु, दहिनवर्त सोहाय ॥

मृगाजंघ सम जंघ दोउ, यहि लक्षण शुभयोग ।

यह वृषपालै सुघर नर, सो करिहै सुख भोग ॥

श्लोक-वैडूर्यमल्लिकाबद्धदक्षिणाः स्थूलनेत्रवर्ष्माणः ।

पार्ष्णिभिरस्फुटिताभिः सर्वेऽपि भारवहाः ॥ १४ ॥

अथ नेत्रलक्षण

दोहा-वैडूर्यमणिके सदृश, जनु चँबेलिके फूल ।

पानिके बुछानसम, नेत्र होयँ सुखमूल ॥

फाटे नहीं देखिये, यतने लक्षण जानि ।

बहुभारी बोझा सहैं, बहुत बलनकी खानि ॥

श्लोक—घ्राणोद्देशे सबलिर्माज्जरमुखः सितश्च दक्षिणतः ॥

कमलोत्पललाक्षाभः सवालधिर्वाजितुल्यजवः १५ ॥

अथांगलक्षण

अर्थ—दोहा—नथुना पर त्रिवली परी, मुख मंजारि समान ।

कमलमध्यसम रंग तन, दहिने सित कछु जान ॥

अथवा लाखके रंग तन, सुन्दर पूँछ बखानि ।

घोडे तुल्य जो वेग हैं, सकल सुमंगल खानि ॥

श्लोक—लंबैर्वृषणैर्मदोदरश्च संक्षिप्तवंक्षणाक्रोडः ॥

ज्ञेयो भाराध्वसहोजवेऽतितीव्रोऽश्वतुल्यजवः ॥ १६ ॥

अथ अंडकोशलक्षण

अर्थ—दोहा—अंडकोश जेहि वृषभके, लंबे पतरे होय

मेष उदारसम उदार हैं, साँकरि कोख बनोय ॥

सो भारी बोझा सहैं, चलै बहुत मग माह ।

ऐसे वृषको राखिये, नितप्रति करै उछाह ॥

श्लोक—सितवर्णः पिंगाक्षरताम्रविषाणो महावक्रः ।

हंसोनाम शुभफलो यूथस्य विवर्द्धनः प्रोक्तः ॥ १७ ॥

अथ हंसावृषभलक्षण

अर्थ—दोहा—श्वेतवर्ण तनु वृषभको, नेत्र बडे रँगपीत ।

ताँबेके सम शृङ्ग दोड, मुखको भारी मीत ॥

शुभफलको दातार है; यूथकि वृद्धि कराय ।

यहिरँग हंसा जाहि घर; सब दुख देत बहाय ॥

श्लोक—भूस्पृग्वालधिराताम्रवक्ष्णो रक्तदृक्कुक्षी च ।

कलमाषश्व स्वामिनमचिरात्कुरुते पतिलक्ष्म्याः ॥१८॥

अथ लक्ष्मीप्राप्तिकरणवृषलक्षण

अर्थ—दोहा—दोनों आँखें ताम्ररँग, धूमा सकल शरीर ।

पूँछ होइ भुँइमो लटकि, आँखें लालगँभीर ।

और ठाठि भारी लखो, यहि पाँचौ शुभयोग ।

जो अस वृषको पालै, तहँ लक्ष्मी सुखभोग ॥

श्लो०—यो वासितैकचरणोयथेष्टवर्णश्चसोऽपिशस्तफलः ।

मिश्रफलोऽपिग्राह्यो यदि नैकांततःप्रशस्तोऽस्ति ॥१९॥

अर्थ—दो० श्वेतचरणतनु औररँग. शुभ लक्षणको सोय ।

जो सब अच्छे ना मिलें, तौ मिलेरँगका होय ॥

इति श्रीवाराहमिहिरकृतबृहत्संहितायां गोलक्षणम्

अथ हलनादोष

सोरठा—साम्हुँ हालै जौन, ताहूको हलना कहैं ।

जानिलेउ बुध तौन, याहूको त्यागन करै ॥

अथ डोलना ! दूसरा नाम नेहर ।

सोरठा—नेहरि दोष लखाय, ठाढ रहैं वृष थानपर ।

चरण उठाय उठाय, आगू पाछू जो धरै ॥

अथ झुमनादोषलक्षण

सोरठा—झुमनादोष बताय, सकल चौपयाको कहै ।

हाला करै बनाय, दहिने बायें झमि झुकि ॥
 अथ अंगहीन वृद्धिदोष नाँदिया वगैरह ।
 दोहा-सकल अंगमें देखिये, जटाखुरी कुछ होय ।
 ताहि नाँदिया कहत हैं, याहि न राखौ कोय ॥
 याके जोते अशुभफल, करै द्रव्यको हीन ।
 दुखी रहैं तनरूज बढै, मानौ साँच प्रबीन ॥

अथ धूसरिदोषलक्षण

दोहा-पूँछके नीचे गुदाटिग, अगल बगल पहिचानि ।
 अमिषवृद्धि गूँथी लखै, ताहि धूसरि मानि ॥
 सोरठा-देखत दूरिकराय, माहादोष याको कहैं ।
 सकल सुख हरिजाय, जो घरराखै असवृषभ ॥
 अथ नसुडिया । दूसरा नाम नहसुवादोष ।

(देखो चित्र नं० ३)

दोहा-दोष नहसुवा कठिन है, जो वृषके तनु हेरि ।
 आधी पसुरी देखिये, जौन किनारे केरि ॥
 छबिस पसुरी होति हैं, सकल वृषभ तनुमाहिं ॥
 अर्द्ध किनारेकी लखौ, महादोष कहि ताहिं ॥

अथ श्यामतारूप शुभाशुभलक्षण

दोहा-सकल पशुनकौ भेद यह, जाको तारूश्याम ।
 बड़ो दोष गंभीर है, ताहि न राखौ धाम ॥
 चौ०-बगलैश्याम अरुणजोतारू। ताको नहिं कछु दोष वि-
 चारू ॥ तारू मध्यश्याम दरशावै। ताहि दोष सब ग्रंथ बतावै ॥

अथ अहिमुखीदोष

दोहा-वृषमुख जिह्वा देखिये, निकसी रहे हमेश ।
ताको कहिये अहिमुखी, लपलपाय नहिं वेश ॥
कितनो होय धनाढ्य नर, यहि वृष राखै कोय ।
सो दरिद्र रुज तनु बढै, सब सुख डारैं खोय ॥
कोउ कोउ नर सांपिन कहैं, दूसर नाम बखान ।
महादोष गंभीर है, याहि न राखु सयान ॥

अथ चौकन्दारभडका करै

दोहा-चौंके बिचुखे घूरके, तेहि मति लेउ सुजान ।
जिसको दुश्मन जानिये, लक्षणते पहिचान ॥
कछु खटकै बाजा सुने, छत्रनीलपर देखि ।
भटकै भागै गिरिपरै, सो दुख देत विशेखि ॥

अथ हरिणपेठियादोष

दोहा-चपका पीठीमें उदर, मृगसम कहौं बखान ।
हरिणपेठिया नाम वृष, तालो सुनो सुजान ॥
सेवा जो बहुविधि करौ, कबहु न देह मुटाय ।
दूबर कम ताकति रहै, महादोष सो आय ॥

अथ लमटंगा (देखो चित्र नं० ४)

दोहा-लमटंगा सारस चरण, नाम कहीं वृषकेर ।
बदसूरत कमजोर है, चालु चलै मगथेर ॥

अथ पंगुवावृषलक्षण

दोहा-लंबे पग टेढो लखौ, सकल जोरि बँददेखि ।

बहुत खराब निहारिकै, ताहि न लेब विशेषि ॥

अथ ढिलमुँहथोथिया

दोहा—ढीलमुख अरु थोथिया, नाम कहौ वृषकेर ।
लिंग कि पलई लटकि बहु, हालै चलते बेर ॥
कमताकति तेहि जानियो, यासों करौ न प्रीति ।
बहुत बुरा त्यागन करौ, यह किसानकी रीति ॥

अथ पँडरियानामवृष

दोहा—सुनो पँडरिया वृषभको, कबहुँ न देह मोटाय ।
भैंसी भैंसापर चढै, मेहनति करि हँफि जाय ॥
गाइन तन देखै नहीं, कबहुँ न मन ठहराय ।
ऐसेको त्यागन करौ, बहुत अनीति लखाय ॥

अथ कुसादरूह

दोहा—चेहरा मुख जो वृषभको, फैला चकला होय ।
सो कुसादरूही कहौ, बहुत मरकहा सोय ॥

अथ अश्वसीना वृषलक्षण (देखो चित्र नं० ५)

दोहा—अश्वाके समहृदय वृष, जबरदस्त तेहि जान ।
कछु बढसूरति देखिये, ठोकर लेय निदान ॥

अथ तबरंगवनवृषलक्षण (देखो चित्र नं० ६)

दोहा—पिछिला धरजो वृषभको, बहुत हीन जो होय ।
बढसूरति कमजोर है, तबरंगवन कहि सोय ॥

अथ कमरीवृषलक्षण

दोहा-कमरीवृष सो जानियो, कमरझुकी बहु होय ।
खाली पीठि निहारिये, कमताकति है सोय ॥

अथ कुलिचवृषलक्षण

दोहा-जाहि वृषभको देखिये, कूँच पाछिले पायँ ।
चलते लगै एकमें, पग पगमें मिलि जायँ ॥
देखत में फूहर लगै चलै बहुत मगथोर ॥
ऐसेको त्यागन करौ, लीन होउँ तेहि फेर ॥

अथ बडकन्नावृषलक्षण

दोहा-बडकन्ना वृषको कहौ, जाके बडबडकान ।
सुस्त रहै मग कम चलै, मेहनतिकाचर जान ॥

अथ झुंपियावृषलक्षण

दोहा-सुना झुंपियानम वृष नाक कहत सब कोय ।
पूँछकि बालरिमें लखौ, बार अधिक घन होय ॥
चौ०-पूँछ झुंपियाछोटेकान। ऐसा वृषभ कमाऊ जान ॥

अथ नैवारिहा वृषलक्षण

दोहा-जो वृषके नेवर लगै, मगमें चलत कलेश ।
रुधिर बहै खुर रगरते, बारंबार हमेश ॥
यहि वृषको मति लीजियो, नीक न कबहूँ होय ।
जबलग जीवै ग्रहविषे, सोच किसाने सोय ॥

अथ चकैयावृषदेहीका लक्षण

दोहा- सुनौ चकैया वृषभके, लक्षण कहौ बखानि ।
सकल अंग देही गढी, जोरबंद शुभ जानि ॥

सो लम्बा कम होत है, सकल काममें जोर ।
ताकत बरनीको लगै, सब वृषको शिरमौर ॥

अथ फतेपेशानीलक्षण

दोहा-मस्तक चौडा चाकला, वृषको बहुत जो होय ।
रूपवान बल अधिक है, चलै बहुत मग सोय ॥
कछुक जबरई करत है, सुनो सकल दै कान ॥
ताको वर्णन नाम करि-फतेपेशानी जान ॥

अथ मृगानेत्र अशुभलक्षण

दोहा-जाके नेत्र विलोकिये, नीचे लखौ प्रवीन ।
जगह नेत्रकी दूसरी, मृगानेत्र कहि दीन ॥

अथ कंजानेत्र अशुभ लक्षण

दोहा-जाहि वृषभको देखिये, नेत्रपूतरी जौन ।
सो भूरेरंग होत है, कंजा कहिये तौन ॥

अथ ताखीदोषलक्षण

दोहा-एक नेत्र कंजा लखौ, दूजो वरण जौ श्याम ।
सो वृषताखी अशुभ है, हरै सकल धन धाम ॥

अथ कानानेत्र अशुभलक्षण

दोहा-काना कहिये तीनि विधि, फूली ठेठर कूट ।
ताके फल मध्यम कहौ, कछुक पेटको खूट ॥

अथ ऐंचाताना वा ढेरानेत्रलक्षण

दोहा-ढेरा वृष सो जानियो, तिरछाकोर निहारि ।
नेत्र पूतरी उलटि है, फूहर अशुभ विचारि ॥

अथ नेत्रकोयाचितलाअशुभलक्षण

दोहा-वृषभचक्षु भीतर लखौ, कोयाचितला जान ।

श्याम सफेदी होत है, महाअशुभ फलमान ॥

अथ नेत्रपलकचितला अशुभलक्षण

दोहा-पलकें नेत्रनकी लखौ, चितली श्याम सफेद ।

तेहि वृषको मालिक सदा, दुखी रहै सुनु भेद ॥

अथ भुँइचितानेत्र अशुभलक्षण

दोहा-भुँइचित्ता वृष जानियो, सदा रहै भुँइ चीत ।

ताके लक्षण अशुभ हैं, जानि लेड तुम मीत ॥

भैसा बरदा आदिभी, अरु भुँइचित्ता तुरंग ।

ऐब करै मानै नहीं, करै सकलसुख भंग ॥

अथ गजनेत्रलक्षण

दोहा-गजसमान जेहि वृषभके, नेत्र होयँ बहु छोट ।

सो काचर खादर कहौ, मारु खाय भुँइ लोट ॥

अरुण आँखियामें लखौ, तौ जानौ वृष तेज ।

शुभ अरु अशुभ न होत है, कछु रिसकोप रहेज ॥

अथ कोतेचश्मवृषलक्षण

दोहा-कोटी आखिनको वृषभ, बहुत अरुणता होय ।

कोतेचश्म सो नाम है, सकल अलक्षण सोय ॥

अथ चितखोवानेत्रलक्षण

दोहा-चितखोवा जो वृषभ है, नेत्रनते पहिचान ।

भारी भयकारी लखौ, दुश्मनकेर समान ॥

अथ दन्तदोषछदरिलक्षण

सोरठा-सुनौ सकल दै कान, वृषभ दोष लक्षण कहौ ।

छदरि लीजो जान, होत रदन षट जासुके ॥

अथ सदरिदन्त दोषलक्षण

दोहा-सातदशन मुखमें गनौ, सदरि कहौ बखानि ।

महादोष वृष जानियो, करै सम्पदा हानि ॥

छदरि कहै सुसदरिते, चलु केहू घरजाइ ।

चारिउ कोन बटोरिकै फेरि किसानै खाइ ॥

अथ नवदन्तअशुभलक्षण

दोहा-नवदन्तावृष जानियो, महादोष गम्भीर ।

जेहि किसानग्रह देखियो वाके रोगशरीर ॥

अथ दन्तनिपोसावृषके, अशुभ लक्षण

दोहा-दन्तनिपोसा वृषभके लक्षण सुनो सुजान ।

नीचेकेरो अधर, लखु, लटका रहै निदान ॥

दन्त देखि यहिसों परै, महादोष गम्भीर ।

तेहि वृषको स्वामी सदा, रोगी रहै शरीर ॥

अथ सुतरदन्तवृष अशुभलक्षण

दोहा-जाहि वृषभके वदनमें, रदन बड़े जो होंय ।

ऊँटकि समता जानियो, सुतरदन्त कहि सोय ॥

ऐसे दशन वृषके हवै, सो जलदी घिसि जाय ।

गिरै पोपला होय मुख, पिङ्गरोग होइ जाय ॥

दोहा-मध्यदोष सो जानियो, याको सुनिये भेद ।

सेति न लीजै अस वृषभ, दूरिहि दूरखरेद ॥

अथ भरकदन्तावृषभमध्यमलक्षण

दोहा-जाहि वृषभके वदनमें, रदन गिरे यकवार ।

ताहि भड़कदन्ता कहै, याको सुनौ विचार ॥

फिर जामैयक सूतसब, कछुक अशुभफलसोया ।

जाके गृहमें अस वृषभ, झगरा रोजै होय ॥

चौ०-बहुतमहिषवृषतीनिवर्षमें। आठौदन्तउखारतमुखमें
भरकदन्तसो नाम कहावै। कोऊ शुभ कोऊ अशुभ बतावै

अथ दन्तलक्षण वा प्रमाण

दोहा-मानुष अश्वके मुख रदन, तर ऊपर दुहु और ।

गोवृष महिषके जानिये, होत एक ही छोर ॥

चौ०-विन दाँतनको ऊपर जानो । खाली मुसकुर

तहां बखानो । जबहीं गोबियाय तबही देखै । दुइ रद

बच्चामुख अवरैखै ॥ पेटते दुइदाँत जमाई औरौ कछुक

कहौ सुनु भाई ॥ एकमास वीते तेहि मानौ । दूध दाँत

मुख निकरत जानौ ॥ तीनि वर्षलगु तेहि कह जानै ।

बच्चा कहि कहि सकल बखानै ॥ फिरि यकदाँत दूधको

उखरै । कछु दिन पीछे दूसरौ झरै ॥ फिर दुइ दाँत

जमावै भाई । तब दुइदन्ता नाम कहाई ॥ जो वृष होय

अंगको भारी । औ महिषीको कहौ विचारी ॥ वरष

अढाईमें तेहि जानौ । दूधदाँत उखरतहैं मानौ ॥ प्रथम

एकरद उखरै भाई । तब दुइदन्ता नाम कहाई ॥ फिरि
वह दूसर दाँत उखारै । इक दुइमासके बादि निहारै ॥
दोहा—तेहि पीछे एक वर्षके, फिरि दुइदन्त उखार ।

चारदाँत तब कहत हैं, जामें तौन उदार ॥
चौ० फिरि पीछे दुइडेढवर्षके, उनके ढिग रद जौन दूधके ॥
तेहि उखरे छः दन्त बखानै । पाँच वर्ष तेहि पूरो जानै ॥
तबही वृषभको कहै जुवाना । लेइ काम तेहि अधिक सुजाना ॥

अथ बूढे बैलकी पहिचान

दोहा—वृद्धापन वृषको कहौं, रदननते पहिचान ।

खिसै होय अरु बड़े बहु, हालत यही प्रमान ॥
चौ०—तीनवर्ष वरधावरधाई, तिरिया जोबनवर्ष अढ़ाई ॥
मर्दके जौवन नितनित धारा, भोजन पावै दुइदुइटारा ॥

अथ खुरफैला वृषभलक्षण । (देखो चित्र नं० ७)

दोहा—खुर फैला सो जानियो सदा रहै खुर फैल ।

पैदाइशते होत है, कमताकति वह बैल ॥

देखतमें फूहर हवै, मगमें चलि लँगराय ।

ऐसे वृषको परिहरो, लीन होय फिरि जाय ॥

अथ पोलिया खुरलक्षण । (देखो चित्र नं० ८)

दोहा—बहुफैले टेढे लखो, बड़े बड़े खुर देखि ।

ताको पोलिया नाम कहि, कमताकत वृषलेखि ॥

अथ खुरचपाती वृषलक्षण । (देखो चित्र नं० ९)

दोहा—सुनो चपाती खुरवृषभ, जेहि लक्षणको होय ।

चपटे चपटे गोड लखि, कम ताकति है सोय ॥

वारूकेरे रेतमें, औ ग्रीषमको घाम ।

चलै न पावै सो वृषभ, जौन चपाती नाम ॥

अथ खरखुरावृषभलक्षण । (चित्र नं० १०)

दोहा—जौन वृषभ खुर देखिये, (गर्दभटाप समान ।

सो बदसूरत चालुकम, महा अशुभ फल जान ॥

अथ खुरकटावृषभलक्षण । (देखो चित्र नं० ११)

दोहा—खुरकट वृष लक्षण कहौं; चलत रहा पहिचान ।

पिछिले पग अगिलेनके, पीछू परत सो जान ॥

राह चलत सयलाय नहिं, और दोष कछु नाहिं ।

याको बुरा न मानिये, वृष राखौ घरमाहिं ॥

अथ खुरघसीटावृषभलक्षण । (देखो चित्र नं० १२)

दोहा—खुरघसीटा वृषभके, लक्षण सुनौ सुजान ।

पुहुमी खुर रगरत चलै, बडा दोष पहिचान ॥

खुरखियाँय ताके बहुत, जखमी सो होइ जाय ।

औरो कछु दूषण नहीं, ठाढो रहै बनाय ॥

अथ कचखुरावृषभलक्षण । (देखो चित्र नं० १३)

दोहा—कहौं कचखुरा वृषभके, लक्षण सुनौ प्रवीन ।

श्वेत अरुण भूरे लखौ, मेहनतिमें बहुदीन ॥

अथ शृङ्गोंके लक्षण शुभाशुभवर्णन

दोहा—वृषलक्षण जो शृङ्गके, चारि भांति संयोग ।

नाम शुभाशुभ बदसकल, और कछु है रोग ॥

शृङ्ग वृषभके देखिये, जाविधि विधिरचि दीन ।

भिन्न भिन्न लक्षण कहौं, जानौ परम प्रवीन ॥

अथ मौराशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं १४)

दोहा-मोरावृष सूवर बहुत, चलै राहमें जोर ।

पलई शृङ्गनकी झुकी, कछुक ठाठकी ओर ॥

मौरा जिनके वृषभ हैं, नित उठि तिनहिं उमंग ।

पाताखटकै वृक्षको, उडै पवनके संग ॥

अथ बडशृङ्गावृषलक्षण । (देखो चित्र नं० १५)

दोहा-बडशृङ्गा जो वृषभ है, बढसूरति देखराय ।

थोरे दिनमें देहकी, सब ताकति घटिजाय ॥

अथ मेढियाशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं० १६)

दोहा-मेषशृङ्गसम शृङ्ग है, मेढिया वृषभ कहाय ।

शुभ अरु अशुभ न जानिये, राखो घरमें लाय ॥

अथ भेण्डियाशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं० १७)

दोहा-शृङ्गनकी नोकै दुवो, झुकि टेढ़ी बहुहोय ।

नेत्रनके ढिग सामु है, भेडिया कहिये सोय ॥

अथ औंधीचांचरिशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं० १८)

दोहा-औंधी चांचरिको वृषभ, शृङ्ग झुके मुख ओर ।

नीचे जरलचिजाति है, ताको कछू न खोर ॥

अथ वकियाशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं० १९)

दोहा-वकियावृषको देखिये, ठाढसूध यकशृङ्ग ।

यक सूधो मुखतनहवै, जो राखै सुखभंग ॥

अथ सरगापत्तालीशृङ्गलक्षण (देखो नं० २०)

दोहा—जो सरगापत्तालि वृष, सकल अशुभकी खान ।

जो किसान घर राखई, ताको दुःख निदान ॥

एकशृङ्ग सूधो खडा, इकलटको भुईं ओर ।

ताहि कुलक्षण जानियो, हरै सकल धन चोर ॥

अथ कैचाशृङ्गलक्षण (देखो चित्र नं० २१)

दोहा—कैचावृष बदसूरती, कछुक अशुभ फल देय ।

एकशृङ्ग अनते गयो, एक अनत्को होय ॥

अथ सरैया शृंगलक्षण (देखो चित्र नं० २२)

दोहा—वृषभ सरैया जानियो, सूधे शृङ्ग प्रमान ।

शक्तीके सम देखियो, बडो लडैया जान ॥

अथ कोपिलाशृङ्गलक्षण (देखो चित्र नं० २३)

दोहा—कोपिला वृषको देखिये, आगे शृंग झुकाय ।

कोइ कोइ कोतिया कहति हैं, फूहर महादेखाय ॥

हालि झूलि लटकै कछू, सो कम ताकति होइ ।

याहू दोषनमें कछुक, जो पहिचानै कोइ ॥

दाँत घिसे अरु खुर घिसे, शृंग गये कोपिलाय ।

ज्वानी बलविधना लयो, रह्यो बुढापा छाय ॥

अथ मैनाशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं० २४)

दोहा—तरवारीके म्यानसम, शृंगाकार निहारि ।

मैनावृषको नाम कहि, लक्षण कहाँ विचारि ।

बहुबलिष्ठ मजबूत है, शुभ लक्षणकी खानि ।

चौंके भडकै, बहुतकै, वृद्धापा लग मानि ॥
चौ०-मैना वृष भबड़ाबलवाना । छोटी गरदन ठाढेकाना

अथ डुण्डाशृंग जो टूटिगा

होय ताके लक्षण । (देखो चित्र नं० २५)

दोहा-एकशृंग जो टूटि लखि, काहू विधिते जानु ।

डुण्डावृषभ कहावई, कछुक अशुभ फलमानु ॥

अथ डुण्डावृषभ पैदायशी, । देखो चित्र नं० २६)

दोहा-यक डुण्डा पैदायशी, एक शृङ्गका होय ।

एक शृङ्ग जामें नहीं, महा अशुभ कहि सोय ॥

अथ मुण्डाशृङ्गलक्षण । (देखो चित्र नं० २७)

दोहा-मुण्डावृषके शृङ्गके, लक्षण सुनौ सुजान ।

मूठी हाथनकी तरह मुठियारे सो जान ॥

अथ मुण्डपैदायशी शृङ्गलक्षण । देखो चित्र नं० २८)

दोहा-बाजे बाजे वृषभके, शृंग न मस्तक माहि ।

असली मुंडा सो कही, बधियाके सम ताहि ॥

आयु बढी सीधा बहुत, अरु दमकस मजबूत ।

अंगहीन या वृष अशुभ, गृह राखे भयभीत ॥

अथ मोटशृंगावृषलक्षण । (देखो चित्र नं० २९)

दोहा-मोटे मोटे शृंग लखु, जाहि वृषभको होय ।

मोटशृंगा तेहि नाम है, खादर जानौ सोय ॥

मोटशृंगाको चातुरे, कहैं न लीजै कोय ।

मोहन भोग खवांइये, थूथू खादर होय ॥

अथ चिरशृंगावृषलक्षण । (देखो चित्र नं ३०)

दोहा—वृषभ शृंगको देखिये, उपर फैलि बहु जाय ।

चिरशृंगा ताको कहैं, फूहर बहुत दिखाय ॥

अथ वेदिया शृंगलक्षण । (देखो चित्र नं० ३१)

दोहा—वृषभशृंग फैले लखौ, जो जरतै अधिकाय ।

दोनों दिशि सूधै हुवैं; वेदियानाम कहाय ॥

अथ खुरकपलीनाशृंगलक्षण (देखो चित्र नं० ३२)

दोहा—खुरकपलीना नाम वृष, लक्षण सुनो सुजान ।

शृंगउपर पानी बहै, तौन श्रवण वहि आन ॥

ताहिपरे दुख ऊपजे, दरद करै अधिकार ।

ऐसे वृष नहिं लीजिये, है बहुदोष अपार ॥

अथ गरेलाशृंगलक्षण (देखो चित्र नं० ३३)

दोहा—शृंगफटे जेहि वृषभ के, सदा रहै जो फाट ।

ताहि गरेला कहते हैं, मत लीजो तेहि हाट ॥

चौ० भारी रोग अशुभ तेहि जानो । नीक न कबहुँ सोपहि-

चानौ ॥ बाजेनरबहुकरैं उदाई शृंगछिलाय दवा चुपराई ॥

दवा-मीठातेल मोम अरुकाजर । शृंगचुपरिकैकरैं उजागर ।

कछुक दिना नीको देखरावैं फिर फाटैं वैसेहै जावैं ॥

दोहा—शृंगगरेल वृषभको, अरु मानुष तनु कोढ ।

यह नीके नाहिं होति हैं, चहौ बढौ तुम होढ ॥

अथ खुटखुटाशृंगलक्षण । (देखो चित्र नं ३४)

दोहा—वृषभ खुटखुटा जानियो, खुटाकावै बहुशृंग ।

रातदिना आठौपहर, करै राजको भंग ॥

दोहा—खुंटा लकरी चरनिमें, और देवाल निहार ।
 दैदें मारे शृङ्गको, भितरी कर्म उदार ॥
 पक्षी पशु सब रैनिको, नित्त करें विश्राम ।
 होय खुटखुटा महिषवृष, खुटखुटहीसे काम ॥

अथ कौड़िहाशृंगलक्षण । (देखो चित्र नं० ३५)

दोहा—वृषभ शृङ्ग दोउ नोकपर, श्वेतटीकरी होय ।
 ताहि कोड़िया दोषबर, भूलि लेउ मति कोय ॥

अथ वृषरंगशुभलक्षण

चौरारंगपूछका शुभ

दोहा—चौरारंग वृष पूछमें, जानों ताहि प्रवीन ।
 आधेकच नीलेवरण, अर्द्धश्वेत कहि दीन ॥
 सब शुभदायक जानियो, जाघर चौरा होय ।
 और वृषभके दोषको, सकल मिटावें सोय ॥

अथचौरारंगदेहका शुभ । (देखो चित्र नं० ३६)

दोहा—चौरारंग वृषसो कहौं, श्वेतवर्ण सब अंग ।
 सो शुभदायक जानियो, यहिको करौ प्रसंग ॥

अथ चौरासा नाहुलारंग वृषलक्षण (देखो चित्र नं० ३७)

दोहा—चौरारंगसो नाहुला, श्वेत होय सब गात ।
 कछुक पीतरोमा झलक, जोते सुस्तचलात ॥

अथ कचेलियारंगलक्षण । (देखो चित्र नं० ३८)

दोहा—रंगकचेलियाको वृषभ, शुभदायक सो जान ।
 दुमनीचे अरु गुदातक, सियनिअण्डपरिमान ॥

नीलवर्ण इन ठौर हैं, लिखों नाम पहिचान ।
शुभदायक बल अधिकतनु, जानौ चतुर सुजान
अथ कजरारंग । (देखो चित्र नं० ३९)

दोहा-नेत्रनके चारों तरफ, नीलरोम रंग होय ।
कजरा कहि नाम तेहि, बहु बलिष्ठ हैं सोय ॥
कजरा और कचेलिया, दूनौ रँग जिहि माह ।
ताहि वृषको बल अधिक, कहत कविनके नाह ॥
अथ श्यामकर्णरंग । (देखो चित्र नं० ४०)

दोहा-श्यामकर्ण शुभबहुत है, कर्ण होई दोड श्याम ।
अथवा पलई कछुक है, तऊ सुखनको धाम ॥
अथ चँदुवाटिकुवारंग । (देखो चित्र नं० ४१)

दोहा-चँदुवा टिकुवा वृषभको, नाम कहत सब लोक ।
माथेटीका सुभग लखि, रूपवान सुख भोग ॥
अथ मुँहधोवाश्वेतवदन । (देखो चित्र नं० ४२)

दोहा-जाहि वृषभको तनु सकल, नीलवर्ण जो होय ।
श्वेतवदन ताको निरखि, मुँहधोवा कहि सोय ॥

चौ०-रूप अधिक तेहि जानौ भाई ।
गुण अरु दोष न कछु लखाई ॥

अथ पीलारँग । (देखो चित्र नं० ४३)

दोहा-रोम होई तनुके जरद कछुक सफेदी जान ।
पीलारंग नहि सुस्त है, नहि तेज परमान ॥

अथ रकसधुमैलारंग । (देखो चित्र नं० ४४)

दोहा-रकसधुमैला रंग वृषभ, लक्षण तेहि पहिचान ।

रोम अरुण अरु श्वेत हैं, कछु भूरा परमान ॥

अथ भूरारंग । (देखो चित्र नं० ४५)

दोहा-वृषभ अंगकी त्वचा जो, अण्डकोश अरु रोम ।

सुरखीतेज निहारिये, भूरारंग शुभकोय ॥

कोया नेत्रनके लखौ, दुम गीचे सो जान ।

चमकदार सुरखी हवै, सो भूरा पहिचान ॥

अरुण श्वेत मिलि चमक बहु, शृंगवृषभके होय ।

सो भूरा पहिचानियो, कहैं चतुर नर सोय ॥

अथ सकीलरंग । (देखो चित्र नं० ४६)

दोहा-कहि सकलरंग वृषभको भला बुरा नहिं कोय ।

माथेते नथुनातलक, एक लकीर सो होय ॥

अथ करदुम्भरंग । (देखो चित्र नं० ४७)

दोहा-जाको तन सब श्वेत है, पूँछ उपरतक श्याम ।

सो वृष मेहनतिमें अधिक, करदुम्मा तेहि नाम ॥

अथ ललदुम्भारंग । (देखो चित्र नं० ४८)

दोहा-जौन वृषभ को देखिये, कोई रंग तनु माहिं ।

अरुण पूँछ बाकी लखौ, ललदुम्मा कहि ताहि ॥

अथ कबरारंग अरुण । (देखो चित्र नं० ४९)

दोहा-अर्द्ध अर्द्ध दुइरंग है, सो कबरा पहिचान ।

भिन्न भिन्न वर्णके करौं, जानौ परमसुजान ॥

कबरा वृषभ बखानिये, अरुण श्वेत रंग एक ।
नीलश्वेतके वर्ण इक, दूनौ एकहि एक ॥
अथ चितला रँग दुइ तरहका है । (देखो चित्र नं० ५०)

दोहा-श्वेत कहूँ कहूँ नील कहूँ, जगह जगह तनु होय ।
दूजो चितला अरुण वृष, याही विधिकी सोय ॥
अथ करुवातेलियारंग । (देखो चित्र नं० ५१)

दोहा-करुवा तेलिया रंगकहों, वृषभरोम दुमनील ।
सकल अंग यहि वरण हैं, दूजो नहीं समील ॥
रूप अधिक बल देहमें ताबेदार हमेश ।
याको घरमें राखिये, कहैं सकल बुधवेश ॥

अथ करुवावृषभरंग । (देखो चित्र नं० ५२)

दोहा-करुवारँग मजबूत बहु, रूपवान अधिकार ।
चलै बहुत मग थकै नहि, याको यही विचार ॥
डहुवा पुट्ठा दुहुनमें, गर्दन लगु वृषजान ।
और पूँछ नीलेवरण, चमकै बहुत सुजान ॥
अथ नीलवृषरंग । (देखो चित्र नं० ५३)

दोहा-नीलरंग वृष कहतहौं, श्वेत नीलकच होय ।
मिले एकमें देखिये, मध्यम कहिये सोय ॥
अथ गोरवारँग । (देखो चित्र नं० ५४)

दोहा-गोरवारँग वृषको कहों, मध्यभाग तेहि जान ।
अरुणवरण सब अंग हैं, जिमि गुञ्जापरमान ॥

अथ गोरखिरवा । (देखो चित्र नं० ५५)

दोहा-जाहि वृषभको देखिये बहुतलाल नहिं होय ।
बहुत सफेदी ना लखौ, ग्वरखिरवा कहि सोय ॥
सुस्तचुस्त है देहको, काचर बहुत सुभाय ।
याको घरते परिहरौ, सेंति न राखो लाय ॥

अथ मुसरिहारंगदोषः । (देखो चित्र नं० ५६)

सोरठा-मूसरिदोष कहाय, पुच्छावाला रँग युगल ।
गंडासम दरशाय, ताहि वृषभको त्यागिये ॥

अथ फुलहारंगकुष्ठीदोष । (देखो चित्र नं० ५७)

दोहा-फुलहा वृष कुष्ठीलखौ, महादोष गम्भीर ।
श्वेतवर्णकं देखिये, फुल्ला सकल शरीर ॥
मानुषके तन कुष्ठ हैं, गोवृष फूल लखाय ।
इसकी छाहीं त्यागिये, धरते देड बहाय ॥

अथ तिलाहारंग । (देखो चित्र नं० ५८)

दोहा-सकल अंगमें तिल निरखि, भलाबुरा नहीं कोय ।
कोई कोई कहत है, कठिन दोष कहि सोय ॥

अथ मखियारारंग । (देखो चित्र नं० ५९)

दोहा-जाहि वृषभको देखिये, सकल शरीर बखान ।
माछी ऐसी बैठिलखि, महादोष तेहि जान ॥
वृद्धापनमें जानिये, यह रुज वृषतनु होय ।
बाजे बाजे नरकहै समुझ देखु यह सोय ॥

अथ भोडा वृषभरंग । (देखो चित्र नं० ६०)

दोहा-भोडा बदसूरत वृषभ, नीलवर्ण तनु होय ।

आनन श्वेत बखानिये, अशुभ जानियो सोय ॥

याके मुख ऊहर कहौं, कचलम्बे घन होय ।

ताको भोडा नाम है, याहि लेउ मति कोय ॥

अथ कांगवदनरंग । (देखो चित्र नं० ६१)

दोहा-सकल शरीर सफेद है, मुखकारो पहिचानु ।

ताकौ मालिक रोगवश, सदा रहै यह जानु ॥

अथ चौदहरंगके लक्षण । (देखो चित्र नं० ६२)

छंद-भोडिया वृषभ भडहाके रंग । सो अशुभकर

नहिं करू प्रसंग ॥ कागिया होय कौवा समान । ताको

नहिं लीजो बुद्धि निधान । रँग व्याघ्र होय केहरी नाम ।

वृषभ मध्य है राखौ सुधाम । चीनियाँ होय चीनीके रंग ।

वृषफुलवाई कहि फूल अंग ॥ संदलीश्वेत चंदनसुमार ।

किसिमिसी रंग नहिं अशुभकार । चम्पईफूल चम्पा

समान । कांसियां रंग काँसे प्रमान । वृषखैरा अरु फलसई

सोय । सो घरमें राखो नीक होय ॥ कहिरंग सोनहिला

शुभनिदान । पैठकुलिया सो पैठ कुल समान ॥ जो

बाँदरकेरंग वृषभ होय । तेहि मध्यम कहिये कछुक सोय ॥

अथ गरियारखादरवृषलक्षण

दोहा-वृषलक्षण गरियारके, सुनो सकल है कान ।

भिन्नभिन्नवर्णन करौ, सेतिम ताहि जान ॥

अथ बैटुवाखादरलक्षण

दोहा-गाडी हलको देखिकै, जुवाँधरे गिरिजाय ।
मारे कूटे उठै नहिं, चरणदेह फैलाय ॥

अथ मनखादरलक्षण

दोहा-मनखादर वृष जानियो, ताके लक्षण जौन ।
अतिधीरा मारग चलै, मतिलीजो वृष तौन ॥
पीठि लचावैं मारुते, बहुतै धीरा होय ।
ठढगरियारा कोउ कहैं, सकल अलक्षण सोय ॥

अथ चमकुलखादरलक्षण ।

दोहा-चमकुल खादर एक है, ढिगकै गये चमंक ।
जुवाँ धरे देही कँपे, कभी गिरै निहशंक ॥

अथ मध्यधीराचलैके लक्षण

दोहा-जाके कचमोटे लखौ, धीरा वृषभ सो जान ।
और पूँछ स्थूल है, ताहि न लेउ सुजान ॥

अथ महिषदोषधूसरिवर्णन

दोहा-पूँछ मूलतर महिषके, गुदाके ऊपर जान ।
गिलटी गोल निहारिये, धूसरि ताहि बखान ॥
सोरठा-देखत दूरि कराय, महादोष याको कहैं ।
सकल सुख हरिजाय, जो घर राखै अस महिष ॥
जो धूसरि दरशाय, भाग अरु गुदके बीचमें ।
मध्यम दरदाय, जेहि गोबर ऊपर गिरै ॥

सोरठा-देखत दूरि कराय महा अशुभ तेहि जानियो ।
छजन दोष बताय, महिष ऐनथन काबरे ॥

अथ खँधयलदोष

दोहा-काँधे ऊपर आस्थि कहि, जहाँ ठाढि कोठाँऊ ।
तौन ठौर खाली लखौ, गडहासम सुनु भाऊ ॥
खँधयल नाम कहावई, दोष कठिण तेहि जानु ।
धन अरु धामको नाशकरि, ग्रन्थ कहै प्रमानु ॥

अथ मूसरि महिषको

सो०-अधिक नोकीलो होय, काँधे ठाठिको अस्थि जो ।
महादोष कहि सोय, मूसरि ताहि बखानिये ॥

अथ महिषके अशुभ भौरीवर्णन

दोहा-साँपिन भौरी महिषवृष, ताहि लेउ पहिचानि ।
ठाढि तीरते प्रगट, पूछ हैं लगे सो जानि ॥
भृङ्ग एकहै केहु वृषभ, केहुके दुइ जान ।
काहुको मुख अग्र लखि, केहुके पीछे मान ॥
लक्षण साँपिनके अशुभ, जो यहि वृषको लेत ।
डसि किसानको खात है, भक्षै दुःख गोत ॥

अथ रिरिहा भौरीवृष अशुभ

दोहा-रिरिहा भौरी रीरढिग, अरु पुट्ठनके तीर ।
ऐसा वृष त्यागन करौ, महादोष गंभीर ॥

(४२)

वृषकल्पद्रुम

अथ पुट्ठियाभौरी दूनौ पुट्ठनपर दुइ
दोहा—दोनो पुट्ठन पर लखों, वृषके भौरी होय ॥
महा अशुभ फल देति है, सब धन डारै खोय ॥

अन्य

एकै जो पुट्ठाऊपर, होय भ्रमरको वास ।
जो लक्षण ऊपर लिखे, करिये वित्त विनाश ॥

अथ मुडुलुइयाभौरीशुभ लक्षण

दोहा—शृङ्ग जरनके तीर है, मुडुलुइयाको धाय ।
ऐसो वृष त्यागन करौ, नहिं राखौ यक याम ॥
केहू वृषके एक लखि, काहूके दुइ जान ।
शृंग मूलके कोउ नाम कहि, ताको करे बखान ॥

अथ महिषीमातनगर्भाधारण विधि

दोहा—जो महिषी मातन चहौ, कीज्यौ यही विधान ।
गर्भाधारण होति है, जानौ सकल सुजान ॥
चौपाई—गेहूँ चारसेर मँगवावै । मेथी डेढ़सेर मिलवावै ॥
महिषीतक्र लेउ दशसेरा । तीनों एक वर्तनमें घोरा ॥
मोहरा ताय गाडु धूरेमे । बीसरोज राखौ ताहींमें ॥
फेरिनिकासिमहिषिको दीजै । पांचसात दिन यतन करीजै ॥

अन्य

रम्भासुमनतीनिमंगवावै । तिनिरोजलग महिषि खवावै ॥

अन्य

लेउ कबूतरबीट मंगाई । जो जङ्गलमें रहै सदाई ॥
एक छटांक प्रात नित दीजै । तीनिरोजमें महिषिमतीजै ॥

अन्य

दोहा-बबुरकांटको काटिकै, ग्रहको लेय बनाय ।

ताके भीतर किर्म जो वाको लेउ मंगाय ॥

चौ०-सातकर्मनितप्रातखवावै । पांचरोजयाहीविधिपावै

अन्य

मेथीकी भुसि लेउ मँगार्ई । आठ रोजलग देउ खवाई॥

अन्य

मेथी डेढपाव उसवावै । तीनि चारि दिन प्रात खवावै॥

अन्य

माँचडकी जड खोदि मँगार्वै । प्रातै एक छटाँक खवावै ॥

पहिला महिषीको यह दीजै । सतयें दिनतेहिमातीलीजै ॥

अन्य

पीतवर्ण जो वर् दिखावै । ताको छतरा नौचि मँगार्वै॥

जेहि छतरामें अंड न होई । एकछटाँक पिसावो सोई॥

जामुनिवृक्ष त्वचाको जारा । ताहिबराबरिपीसिविचारा॥

महिषीको दिनसात खवावै । एक खुराक प्रमाण बतावै॥

पहिषीमातन दवा बखानौ । यामें कछु सन्देह न मानौ ॥

अथ जो महिषीनाँघेपरठहरतीनहो उसका उपाय

दोहा-जब महिषी माती लखै, गेहूं देउ भिजाय ।

चारिसेर पक्के तवलि घरमें राखु धराय ॥

चौ०-मैथुनकर्म होय जब भाईतेहिपाछेसबगेहूँखवाई॥

अन्य

लेड लसो हरपात मंगाई । दुइसेरपक्के देड खवाई ॥

अथ गोमहिषीके बियायके महीनाका प्रमाण
नौदिन नौमहिना चलिजाई। कहैंसुजनतबगाय बियाई॥
दशदिन दशमहिना है जावै। तब महिषी बच्चाको व्यावै

अथ गोमहिषीके बियायके महीना अशुभ

दोहा—ऋतुवर्षा भादौ जबै, सिंहकेर रवि होय ।

गाय बियानी जानियो, महा अशुभफल होय ॥

चौ०-माघमासमेंमहिषीव्यावै। जोसंक्रांतिमकरकहिगावै
कठिनदोष है शुभ सो नाहीं । तुरत ब्राह्मणे दीजै ताहीं ॥

गोमहिषीइनमासमें व्यावै। कीजियजायकिसानैखावै ॥

अथ यंत्रसर्वपशुओंकीबियातीबेरकेशहोइसोनिवारण ॥

५५	६२	९५	७	दोहा—सकल पशुनको देखिये, व्याति
६	७	५९	५८	होइ तेहि बेर । दुख पीड़ा बहुतै हुवे
६६	५१	१८		ताको यंत्र निवेर ॥ केसरि गोरोचन
४५	७	६६	६५	मिलै, भोजपत्रपर लेखि । कण्ठविषे

बंधन करे, मेटे दुःख विशेष ॥

अथ जो महिषियोंके बियानेपर भेली निकलती है

उसके लक्षण और दवा

दोहा—बाजी महिषिनको सुनौ, व्यानेपर पहिचान ।

भगमा भेली नीकरै, दवा करौ बुधवान ॥

चौ०—पहिलेथोरीनिकरिदिखावै। धीरेधीरेबहुबढिजावै॥
कोइकोइकी आँतैंसबनिकरैं। सोमहिषीयमपुरकोसिधरैं॥
दवा मीसि दुइतील मँगावै। ताहि चुपरि भेली बैठावै॥
महिषीको बैठन नहिं दीजै। एक रोजतक ठाढिरहीजै ॥

अथ दवा—खानेकी चौपाई

अगियानामघासइकजानो। तालखनकिसकैलबखानो॥
शरद जगहमें जामत सोई। गिरह गिरह चौपतिया होई॥
लंबेपतरे पातसोजानो। विकटकाँटनकोतेहिपहिचानो॥
ताकीजड पैसाभरि लीजै। यवके आटा मिलै सुदीजै॥
तीनि दिवसलग प्रात खवावै। भेली नहिं कबहुँ दरशावै॥

अथ सुखरनारोग—गोमहिषीका दूध

सूखि जात है तेहिकी दवा

दोहा—रोगसुखरना जानियो, गो महिषीतनु सोय।

जबहीं बच्चाको जनै, दूध अधिक करि लोय ॥

चौ०—कछु दिन पीछे जाय सुखाई। उतरै दूध न आवे भाई॥

याकी दवा सुनौ मनलाई। तनको दूध जो करो उपाई॥

दवा

पथरचटाकी जड मँगवावै। गोलपातको जौनदेखावै ॥

छोटे बिरवाको पहिचानो। एक छटांक प्रमान बखानो ॥

लेड करेलापात मँगार्इ। आध पाव ताको तौलाई ॥

दोनों दवा महीन पिसावै। सांझभोरदिनसातपियावै॥

दोहा-सोंठ मिठाई पाव यक, साँझ भोर दिन सात ॥
यवपिसानमें दीजिये, बढै दूध अधिकात ॥

अथ गोमहिषी दूध बढावैको मंत्र-

इंद्रजालका है

ॐ ह्रींकरापुरुषं मुखं हं श्रीठं ठः”

मन्त्रविधि

चौ०-गाँडरका तृण देत मँगाई । तेहिते चारों थन झरवाई । पढै मंत्र मुख फूँकत जावै । अष्टोत्तरशत १०८ देर करावै ॥ सात दिनालौ साँझ सकारे । बढै दूध तन अधिक पियारे ॥

अथ यंत्र-गोमहिषीके दूध बढानेको गरेमें बाँधनेका

इंद्रजालका है

दोहा-भोजपत्रपर यंत्र लिखि, अष्टगंध सो जानि ।

गोरोचन केसरि कितौं, यामें कहौं बखानि ॥

गूगुरकी तेहि धूपदै, बांधि कंठमें देय ।

दूधबढै गोमहिषीतनसकलरोगहरिलेय

अथ गोमहिषिके दूधबढनेकी दवा ॥

दोहा-दूधबढावाजोचहो, कीजो दवा

विधान-रोज दुहौ नितनित बढै, जानौ चतुरसुजान ॥

चौ०लेउ सतावरिमूल खोदाई । आधपाव नितपीसि पियाई ॥ एकमासलग या विधिकरै । बाढैदूधदुःखतनुहरै ॥

२८	३६	२	७
६	३२२	३१	
३४	२९	८	१
४	५३०	३३	

अथ सर्वचौपायोंके रोगकी पहिचान और ताके लक्षण
दोहा-बहुत पशुनको कहतहौं, लक्षण रोग प्रकीत ।

षटविधिते पहिचानिये, सुनौ श्रवणदै मीत ॥

पित्त वात अरु शीतते, रोग होइ पशुअंग ।

लक्षणते पहिचानियो, दवा किये रूजभंग ॥

अथ-पहिलीपहिचान-नेत्रलक्षण

दोहा-प्रथम जबै अच्छा हतो, पशुके नेत्र विलोकु ।

फेरि जबै रूजमें ग्रसो, देखु पपोटासोकु ॥

चौ०-अच्छेमें कारंगति होती। रोग भयेतेहि कैसी गती ॥

अरुणवर्ण जो कोया देखै । तो गरमीको खलल विशेषै ॥

सकल शरीर हरारति होई । याकी दवा करी अब सोई ॥

श्वेतवर्ण नेत्रनके कोया । शरदीते तेहि रोग दबोया ॥

पीतवर्ण जो कोया देखै । वातते वादी तनु अवरखै ॥

अथ दूसरी पहिचान-मूत्रपरीक्षा

चौ०-अरुणवर्ण अरु थोरा मूतै । तौ गरमीहे पित्तकि बहुतै ॥

श्वेतवर्ण मूतै अधिकारी । शरदी तनुमें बहुतै भारी ॥

पीतरंगको मूत्र देखावै । वातते वादीरोग तब होवै ॥

अथ तीसरी पहिचान-गोबरके लक्षण

चौ०-गीला पतरा गर्म जो होई । गरमीते अस गोबर सोई ॥

बहुत सूख जो हगै बनाई । याहु गरमीते ठहराई ॥

ढीला पतरा शीतल हगै । शरदीकी बदहजमी लगै ॥

अथ चौथी पहिचान-नाडी परीक्षा

चौ०-श्रवणननीचेमूलमेंजानौ। दुइरगदूनौओरबखानौ॥
धमकैचलतिहवैसोईनित। बहुतख्यालकीन्है आवैचित॥
अतिहिउताल नाटिकाचलै। तो जानो गरमीतेहिखलै॥
सुस्त नाटिका चलै बनाई। वातधर्म शरदीते आई॥
इकलक्षण नारीलखि कहौ। वातपित्त कफते रूजलहौ॥

अथ पाचवीं पहिचान-कानछूनेकी परीक्षा

चौ०-श्रवणपकरिकेदेखोभाई। गरमगरमसोजानौआई॥
तौ गरमीतेरोगबखानौ। दवाकियेतनुनीकोजानौ॥
शीतल श्रवणदेखिकैकहिये। शरदीतेरूजयाको लहिये॥
अथ छठई पहिचान मिजाज परखैके लक्षण ।

पशुको हवा देखाना चाहिये

दोहा-जो चारा कम खात है, सो गरमी पहिचान ।

सुस्त बहुत बैठे उठे, दरद पेटमें मान ॥

चौ०-चुपकेठाढरहै पशुजबहीं। शरदीतेरूज कहिये तबही
जो घबरायछिनकअकुलाई। तौ गरमीतेरूजअधिकाई॥
जानशास्त्रमेंलक्षण नरके। तौ न नहीं कहुभाषै पशुके॥
उतने ही लक्षण अवरेखै। शरदी गरमी कफ तेहिलेखै॥
हाथ पांयपशु सकलशरीरा। कवन जगह रोगगँभीरा॥
इतनादेखिचिकित्साकरिये। रोगघटैमनधीरज धरिये॥
अथमंजलिबहुकोशजोजाय। चलाजायफिरिबंदहोजाय
चलन न पावैबहु थकवाई। उसकी दवा होइ अजमाई

दोहा-जाय बंदभरि जाय वृष, सो होवै बेकाम ॥

ताके लक्षण परखिकै, दवा लिये आराम ॥
छंद-जेहिबाहरचलैवृषबहुतकोस। भरिजायतबहिंपावैकलेस
लंगराय चरण गरुष परंत। मग फैलेपायनबहु चलन्त॥
रगमोटीचारोंचरणहोय। वृषथोराचलिफिरिरुकैसोय॥
बहु सुस्तर है ठाढ़ौ अधीर। अति मेहनतिमें यह रोगपीर॥

दवा

चौ०-बाँधोवृषजहँपवनलागे। बंदमकानउजियारोभागे॥
कम्मर ऊपरकसौदुइचारी। गरमी तन लागे बहु भारी॥
फिरिमदिरादुइवेर पियावै। साँझ भोर याही विधि पावै॥
निकसे अंग पसीना जबहीं। खुलि जैहै यह जानौ तबहीं॥

अन्य

चौ०-गूगुर सज्जी आंबा हरदी। टकाटकाभरिर्कीजैगरदी॥
तोला एक अफीम मँगावै। थोरे पानीमें घोरवावै ॥
यह आटाको लेउ मँगाई। वहि पानीमें ताहि सनाई॥
ताकी एक टीकिया करौ। वाके बीचमें औषधी धरौ॥
लुगुदी जौन अफीमकी होई। धरौ मध्यमें दवेके सोई॥
फिरि गोलायक लेउ बनाई। तापर माटी देउ थोपाई॥
आगीकी भुलिभुलिमें धरै। जब परिपाकहोय तब निकरै॥
माटी फोरि फेकि तेहि दीजै। आटासहितपीसिकरिलीजै॥
षट गोलीतेहि लेउ बनाई। शामसुबा यक एक खवाई॥
तीनिरोजजो वृष वह पावै। चरण भरे जलदी खुलिजावै॥

अन्य दवा—मालिसकी

गोलिदार कटैया लावै । ताके पाता सब तोरवावै ॥
 पीसिकूटिरस लेउ निकारी । दुइसेर पक्के वजन विचारी ॥
 गेरु एक छंटाक पिसावै । रेडीतेल दुगुन मिलवावै ॥
 आगीमें कछु गरम करीजै । गुनगुन वृषतन मरदन कीजै ॥
 जूडनीर दाना मतिदीजै । अरु परहेज बहुत विधिकीजै ॥
 पानीकी बहु प्यास देखावै । कछुकजवायनि मिलै चुरावै ॥
 वाही जल वृष पियनकै । अरु शरदीते बहुत बचावै ॥

अन्य—सेन्दुरफ वटी

दोहा—सेन्दुरफवटि खवाइये, जायबन्द भरि जाय ।
 मैजलिमें थकि जाय बहु, चलै न एको पाय ॥
 चौ०—याकी दवासुनौ मन लाई । खायेते जलदी खुलिजाई ॥
 सेन्दुर और सोहागा लीजै । जौन चौकिया नाम कहीजै ॥
 मालकांगनी गौघृत लावै । गुडपुरातन तेहि मध्यमिलावै ॥
 तोला एक एकसम करौ । पीसि छानि एकैमें करौ ॥
 सकल दवा घृतमें भुजवावै । ताकी गोली पांच बनावै ॥
 गोली एक प्रात तेखाई । जायबदनको खोज नशाई ॥

अन्य । (मैंने अजमाई)

दोहा—वृषभ भरै पग ना चलै, जाय बन्द ह्वै जाय ।
 चौ०—नरकचूर अरु आं बाहरदी । पक्के पावपाव करुगरदी ॥
 गूगर एक छटांग पिसावै । तीनों दवा मिलाय धरावै ॥

गोघृत लेउ मिठाई भाई । पाव पाव दोनों तौलाई॥
 एक सेर गूदा घिगुवारी । पक्की तौल लेउ अनुसारी
 घिघुवारीघृत और मिठाई । बटुईमेंतीनों धरवाई॥
 एकछटाँकदवामिलवावै । अग्निपकाइवृषभमुखनावै
 साँझसमय यहऔटीदीजै । सतयेंदिनतेहिनीकोलीजै
 एकपहर तेहि कैजा कीजै । जायनंद पगभरो हरीजै
 अन्य औटी

चौ०-कुटकी कचरी घोढवचलावै डेढपावतीनोपिसवावै
 बीलनाम यक दवा कहावै । ताको तोला एक मँगावै
 गूगुर ताहि बराबरि डारौ । सकलपीसिबटुईमें धारौ
 एकसेरपानी भरिदीजै । अग्निचढायपकायसोलीजै
 दुइ उबाल वामें जब आवै । तब उतारिसीरोकरवावै
 पीछूबीलपीसिमिलवावै । नारिभरायसाँझमुखनावै
 पवनबचावन बहुते करै । भरोदुःखसतयें दिनहरै
 अन्य औटी । (रास्ता चले थकिगा होय तेहिकी)

दोहा-बूना हरदी लीजिये, आध पाव परमान ।
 सेर मिठाई डारु तेहि, औटी करौ विधान ॥
 साँझसमय वृष, दीजिये, जो थकबाही जानु ।
 भोर भये नीके चलै, याहीते पहिचानु ॥

अथ भरेवृषभके दागैकी विधि

दोहा-जौन वृषभ भरिजात है, ताको करौ बखान ।
 बहुत दवा करि नीक नहिं, दागौ ताहि सुजान॥

चौ०-नथुनापर दुइ दाग देवावै। नीचे दुइ कोहान के लावै
 दोनों दुइ कोखिनमें दीजै। पीठी ऊपर दुये करीजै
 दुमकी जरमें दुये देवावै। कंधा ऊपर दुइको लावै॥
 दुवो जंघमें दुये करावै या विधि वृषको दाग देवावै॥
 भरे वृषभके बुझावको वफारा देनेकी विधि

चौ०-बंदमकान वृष भलै बाँधै। फिरि रचनाया ही विधिसाधै
 ईंटे चारि तप्त करवावै। एक चरणतर एक धरावै॥
 खट्टा तक्र लेउ मँगवाई। तेहिपर थोरा थोर ढराई॥
 निकसै वाफ चरणमें लागै। ताही सों दुख वृषको भागै
 जब सिराय वह ईंट बनाई। दुहरे पद या विधिकरवाई
 सातरो जलग करौ विधाना। चारों चरण दवा परमाना
 बहुत नीक यह करै जो कोई। नीक न होय तो दागै सोई
 दागै सकल रूप हरिजाई। दाग बचाय दवा करवाई॥
 रास्ता चलैमें महिष भरि जाय ताको उपाय ।

दोहा-महिष भैं पग ना चले, ताको करो उपाय ।
 चारो चरणके जंघमें, अरु चुतरीमें जाय ॥

चौ०-छूरा भे मछना लगवावै। रक्त गिरै दुख दूरि करावै॥
 अथ महिष वृषभ लादे ते पीठि वा छाती

सूजि जाय ताको उपाय

दोहा-महिषा अरु वृष जो लदै, लादे पीठि सुजाय ।
 ताकी छाती सूजे अधिक, वाकी दवा कराय ॥

चौ०-खैचिलदान कसेते सूजै। तापर कपडा भिजै धरीजै॥

जबलगसूज मिटै नहिं धरौ। ऊपर जलटपकावा करौ॥

यहिते जो अच्छा नहिं होई और दवा कीजै पुनि सोई॥

अन्य-दोहा-गाईकेरे दूधमें, थोरा निमक मिलाय ।

आगीमें पकवायकै, कम्मरटूक भिजाय ॥

चौ०-तीनि रोज बाँधौ उठि प्राता । सोथ मिटै

तनुदुख मिटजाता ॥

अन्य-

सोवाबीज छटांकपिसावै। पाततमाखूभस्मकरावै।

ताको दुइ तोला मिलवाई। और दवा सुनिलीजो भाई

गरगौवाकी बीट मँगावै। तोला एक ताहि मिलवावै

सकल पीसि पानीमें धरौ। गरम कराय सूजमें चुपरो

लेउ सुसब्बरको मँगावै। जौनकमंगरिनाम कहाई

पीसि गरम पानीमें करिकै। लेपन करौ सूजपर धरिकै

अथ रोगको नाउँ गरवा दूसरा नाउँ पट्टा

दोहा-महिष महिषके होति है। गरवारुज मुखमाहि ।

दूसर पट्टानाम कहि, कोउ कोउ बरणै ताहि ॥

लक्षण

दोहा-मोटी रग परिजाति है, जीभतरे रँगश्याम ।

ता रुजको पहिचानियो; दवा करो अभिराम ॥

चौ०-चारा खाय तनुक नहिं जानो । चिपिर चिपिर

मुख करि सो मानो ॥ जीभ काढि नथुनाको

चाटै । रसना नासातक नहिं आँटै ॥

(५४)

वृषकल्पद्रुम

नितप्रति देह जाय दुबराई। याकी दवा करावो भाई ॥
गिरातरेरगमोरि दिखावै। नीलवरणतेहिफस्तखोलावै ॥
जौनझलारिहसारिकहीजै। कांटासहित तोरि तेहिलीजै ॥
तेहिकांटाभेरगचिरवाई। निकरै रुधिर नीक होयजाई।
तेहिपाछे हरदी पिसवावै। भुरजी छानि करहु बाँलावै ॥
दोनों मिलै मलौ रगऊपर। नीकहोयरुजमुखकोदुखहर।

महिषीके मन्दअग्नि होइजाय ताका मसाला।

दोहा-मन्दअग्नि हो जाति है, महिषीके तन आय।

भूख घटै तन बहु लटै, चाराको नहिं खाय ॥

चौ०-कुम्भीको विरवामँगवावै। पावएकताकोपिसवावै ॥

यव आटा सँगदेउखवाई। आठरोजपरमान बताई ॥

अथ घमहावृषलक्षण

दोहा-जौनवृषभके देहमें, घाम अधिक दुख देय।

जलमें पैठे शीघ्रही घमहां कहिये सोय ॥ ॥

चौ०-जलमें ठाढरहै नहिं डोलै। घामदेखिबहुतै दुखझेलै

पहिचान

बडे बडे रोम फटे जेहि देखो। घमहां वृषभ ताहि अवरखो ॥

जो किसानलेहै यहिकाहीं। सदा सोचकरिहै मनमाहीं ॥

कामलियेपरजीवचोरावै। दवा किये कोइ नीक देखावै ॥

दवा

सर्षपतेलआधसेरलीजै। प्रातनारिभरि पियनको दीजै ॥

पक्कीतौलकिहैपरमाना। चालिसदिनलगिकरौविधाना।

फिरिछाँहीते घामें बैठे । कबहुँ नाही जलमें पैठे ॥

अथ वृषभतरवासेके लक्षण

दोहा-वृषभ चलै मारग बहु, कठिन भूमि जो होय ।
ताके पगतरवाँसिहैं, तरवा रगै सोय ॥

चौ०-मगकोचलनत्यागनकीजैपशुकोअच्छाजलदीजै ॥
कीकछुवस्तर ठाटभिजावै । चारोंचरणनमेंबँधवावै ॥
ऊपरतेजलतेभिजवाई । नीकन होयतोऔर उपाई ॥

अन्य-मोमगरमगुनगुन टपकावै । तरवापुष्टहैबलपावै ॥
वृषभहोयतरवाँसाजोई । चारोंचरणलंगकरिसोई ॥
भरोचरणदुइलंगकरावै । यहिलक्षणतेअलगबतावै ॥
औरोयतनभरेकीकरिये । वासोनीकहोयसुखलहिये

अथ कूल उतरेकी दवा

दोहा-पिछले पदको जोरजो, खिसिकि जाय लँगराय ।
चल न पाव दुखित बहु, ताको करौ उपाय ॥
उतरै कूल जो वृषभको, गुखरू डोलै जानु ॥
एकै विधि दोनों हुवै, कछुक फरक पहिचानु ॥
अगिले पदकी गुखरू, पिछिलेपद कहि कूल ॥
एकै दवा उपाय यक, दुनहुनमें है शूल ॥

चौ०-हाथमेंवृषकूलचढ़ावै । शूकरवश बहुदिनमलवावै ॥
यासोपुष्टबहुतविधिहोई । औरउपायकरोमतिकोई ॥

दवा—झिटकाचोटमोच गुखुरूडोलै कूलउतरैकी ॥
 चौ० झिटकाचोटमोचजेहिलागै। वाकीदवाकरौदुखभागै
 षोडशमुरगीअंडमगावै । तोलाएकअफीममिलावै ॥
 आधासेरशूकरबसलीजै । सर्षपतैलपावइक दीजै ॥
 आधापावलेआंबाहरदी। पीसिमहीनकरौबहुगरदी॥
 गेरूएकछटाँकपिसावै । सकलमिलायघेपिधरवावै ॥
 मालिसखूबकरैबहुगरै । कंडाभेडसैंक फिरिकरै ॥
 साँझभोरदुहुबेरलगावै । सूजै चोटनीकतेहिभावै ॥
 पंद्रहदिनयाहींविधिकरै। तनुकीचोटसकलविधिहरै॥

गुखुरू अगिलेपैर के डोलनेका उपाय

दोहा—गुखुरू तबहीं टरति है, जब करि है बहु जोर ।
 गुखुरू वाको कहति हैं, जौन जोरको ठौर ॥
 गफलत मति वाकी करै, ताछन दवा कराउ ॥
 मूँजक आँडर काथ ले, दूसर पग बँधवाउ ॥
 गंठा घुटुनापर कसो, जासों बहु लँगराय ॥
 यह उपाव जो कीजिये, तासों नीक दिखाय ॥
 चौ०—अधिकबूततेहिपगपरकरै। गुखुरूवालासोभुइधरै॥
 तीनिचार दिनजोबँधवावै। नीकनहोयतोदवाकरावै॥

अन्य

पैर हाथधरि खैंचो भाई । गुखुरूटरी बैठि जबजाई ॥
 पट्टा बाँध देउ दिनराती । आरसीतेलनाउबहुमाँती ॥

अन्य

याहूते नहिं नीक देखावै । सुवरकि चरवी वस मलवावै॥
और कछुक दिन देउ खवाई गुखुरूनीकि बैठितबजाई॥
दोनों दवा बहुत अजमाई । पट्टी खुलि वसको मलवाई॥

अन्य

सुवरकि विष्ठा गरम करावै । गुखुरूऊपरताहिमलावै॥

अथ गुखुरू दागनेकी विधि

दोहा-चारों तरफ गरेरिकै, गुखुरू देउ दगाय ॥

नोक होय लँगरा मिटै, करौ यतन यहै जाय॥

“कोई अंगमें चोट लगनेसे सूजि आवेताकी दवा”

दोहा-जौन पशुके अंगमें, चोट चपेट लगाय ॥

तासो सूजन देखिये, दवा किये दुख जाय ॥

चौ० आँबागुरदीचंदसुरलीजै । श्यामातिलतीनोंसमकीजै

बहुत महीन पीसि पानीमें । अग्निपकायलेपुसूजनमें॥

साम सुबहु दुहुँबेर लगाई । नीक न होय तो और उपाई॥

अन्य

रेंडी बेनवर गूदी लीजै । अरसी श्यामतिलसमकीजै॥

चारों दवा पीसि पकवावै । पशुकी सूजनिपर चुपरावै॥

अन्य

हरदी तोले दुइ पिसवाई । साबुन तोला एक मिलाई॥

अग्निमध्य चुरवौ पानीमें । लेप करौ पशुकी सूजनमें ॥

अन्य

अँबिलीऔरसँभालूलीजै । रनिमकोयसबपातभनीजै ॥
छालीलेउसहोरचिटिकुवाँ । औटिपात्रतेहिदीज्योधुवाँ ॥
जबैनीरकछुजायसेराई । देउ तरेरा मलि मलि भाई ॥

अन्य

दोहा-माटी लोना लीजिये, जो दिवालमें होय ॥
पानीमें औटायकै, मलु सूजनपर सोय ॥

अन्य

चौ०-जोनदवामेंनीकदिखावै।तोसूजनपोटरीसिकवावै॥

दवा

दुइगांठी ले प्याज मँगाई । तोला दुइ हरदीतेहि लाई॥
चमसुरजाको हालिम कहिये । दुइतोलाताहीमेंलहिये॥
आधपाव गेहूँकी मैदा । घृतमें सानि करी बहु फेदा ॥
सकल पीसि पोटरी दुइकरै।सहत सहत सेके दुखहरै ॥

अन्य

जो नहिं अच्छी देह दिखाई। बारमुडाय जोक लगाई॥
“सूजन कोई अंगमें शरदीते होय ताकी दवा”
दोहा-गेरू अजवाइन पिसे, पानी मिलै पकाय ।
सूजन शरदीकी जहां, लेप किये बहि जाय ॥

अन्य

गेरू कारी जीरलै, पीसि गरम करवाय ॥
गुनगुनकरि लेपन करो, शोथ नीक ह्वै जाय ॥

अँबरबेलि मकोयले, और संभालू पात ।
तीनों पीसौ गरम करि, लेप करो उठि प्रात ॥
रेंडी बेनवरकी मिगी, तोले चारि मँगाव ।
तोला एक मुसब्बरे, पानीमें पिसवाव ॥
आगीमें तेहि चुरैकै, शरद सूजमें जान ।
लेपन करु दिन तीनलग, प्रात सांझ परमान ॥

अन्य

गूद लेड घिगुवारिको, एक छटांक नवीन ।
तोला एक मुसब्बरे, पीसि मिलै तेहि दीन ॥
आगीमें गुन गुन करौ, मलु सूजनपर सोय ।
पांच सात दिनके किये, वृषभ अरामी होय ॥

अन्य सेंक

पथरा एक मँगायकै, कितौ ईंट करु तात ॥
धीरा धीरा सेंक वृष, शरदसूज मिटि जात ॥
“कोई अंगमें गरमीते सूजन होय ताकी दवा”
चौ०—जो गरमीते गरमदेखावै । ठंडी दवा लेप चुपरावै
गेरु धनियां ईसरगोला । यवको आटा ताहिसमूला ॥
सकलदवासम लेड पिसाई सिरकामिलैपकाय लगाई ॥
“कोइ अंगके गांठि गिरह जोरमें जो कठोर बहुत
है जाय गुम्बर निकरि आवै ताकी दवा”
दोहा—गांठि गिरह पशुकी लखो, जो कठोर है जाय ।
सरदी गरमी दुहुनते, ताकी दवा कराय ॥

चौ०-अतिकठोरगुम्मजहैजावै। सुरतरहैमगचलैनपावै॥
 सोंठि पीसिसिरकामेलीजै। गरम कराय लेप करि दीजै

अन्य

कोचिला गनिकैसात मँगावै। अंबरबेलिरूसकीलावै॥
 घोडवचलहसुनसमपिसवाई। सर्पपतेलमध्यपकवाई॥
 शरदसूजपर मालिस करै। अठयेदिन गुम्मजसबहरै॥
 जो गरमीते सूजन जानौ। ठंडी दवा उपरते आनौ॥
 वाही विधिते लेप करावै। नीकहोयतबसुखउपजावै॥

कुम्हेडीरोगलक्षण। शृंगनके नीचे

हाड गल जाता है

दोहा-नाम कुम्हेडी रोग है, वृषभशृङ्गमें होय।
 ताके लक्षण कहत हौं, जानि लेउ सब कोय॥
 चौ०-नथुनातेपानीबहिआवै। प्रथमकछुकदिनकमदेखरावै
 धीरा धीरा बढति है। शृङ्गमूलको अस्थिगलति है॥
 थोरा थोरा टेढ देखावै। फेरि लटकि माथेपर आवै॥
 शीशकेरि जो अस्थि कहावै। तोनसरै कछुमूद गलावै॥
 शोणितमिला नीर बहुबहै। कछुकलबाबदार तेहि कहै॥
 खाल सरै माथा गलिजाई। शृङ्गगिरै नहिं कछूवसाई॥
 महाकठिनयहरोगबखानो। जानौकाल आय नियरानो॥
 हम यह देखा रोग कलेशा। ताते लक्षण लिखै सुदेशा॥
 महीना दुइ चारिक रुज रहै। पीछे वृषभ मृत्युको गहै॥

“पशुको दुश्मन अँधाकै डारते हैं भेलावां लगाइकै”
दोहा—जो कोउ पशुके नेत्रमें, देय भेलावँ लगाय ।

सो आंधर होय जात है, सूजनि अधिकदेखाय ॥

चौ०—कुटकी बहुत महीन पिसाई। वृषकेनेत्रनदेउभराई॥

“वृषभ वा महिषकेकांधमेंझिटकालागनेकीदवा”

दोहा—झिटका लगे कांधमें, वृषको दरद कराय ।

वाकी दवा कराइये, मालिसते सुख पाय ॥

चौ०—मुरगीके अंडा मँगवावै । सांभरिनमकपीसिमिल-
वावै॥चारिपांचदिनमासिकरै। पीरजायझिटकासबहरै॥

वृषभ वा महिषका कांधे सूजै वाके फूटे

पीब आवै, ताके लक्षण व दवा

दोहा—जौन वृषभ हल शकटरथ, कबहूँ चला न होय ।

एका एकी जोतिये, सूज कांध लगि सोय ॥

चौ०—भैसाकोगोबरमँगवावै। जलसोंमिलैपकायलगावै॥

अन्य-लेंडीऊँटकेरिपिसवाई। खारीनमकमिलायपकाई।

सूजन कांधपर थोपावै। नीक होयबहुत सुखपावै॥

सूखी हरदीपीसिमिलावै। याहूतेसूजन मिटिजावै॥

शूकरकी चरबीबस चुपै। सूजजायमजबूतीपकरै ॥

लेउगोहकीवसमँगवाई। काँधमलाय पुष्ट करवाई॥

मैंजलिचलैकांधजेहिसूजै। तापरदवालेपयहकीजै॥

आटा चनाकेरमँगवावै। आंबाहरदीपीसिमिलावै॥

गेहूँकी मैदा समतीनो। दूध घोराय पकावनकीनो॥

कांधेपर जो लेपन करै। सूजन मिटै काँधदुखहरै॥

हरदी दुइतोला पिसवाई । मासेतीन अफीम मिलाई ॥
 सर्पपतैले एकछटाँका । एकैमें करु गरम सुपाका ॥
 वृषभकाँधमें मालिस करै । सूजन जाय दुःखको हरै ॥
 अरसीको जो तेलमलावै । जबतब सो तूतीलावै ॥
 “काँधफूटि बहै वा पानी आवै ताको मलहम ।”
 चौपाई-संगजरातमोमकोलीजै । डारिसफेदा तामें दीजै ॥
 टका टकाभरि लेउ सुजाना । ताके पीछे और
 निधाना ॥ फूँकि बनात पुरानी लीजै । जूथी चर्मकि
 भस्म करीजै ॥ गो गोबरका विनुवाँ कंडा । लेडी गोल
 सोइ सब खंडा ॥ अग्निमध्य याको फुकवावै । तीनों
 एक छटाँक मिलावै ॥ डेढ़ पाव अरसीको तेल । अग्नि
 पकाय देह सब घेला ॥

दोहा—चुपरौ काँधेमें सुघर, यह मलहम मनलाय
 जबलग घाव न पूरि है, मेहनति बंदकराय ॥
 “काँधेमें जो बार न जमैं सो जमैंका तेल ।”

दोहा—जाहि वृषभके काँधेमें जो बार जमैं नहिं होय ।
 ताको तेल बनायकै, एकमास मलु सोय ॥
 चौ०—सेहुडा पलई नरम जो होई ॥ एक हाथ भरि
 काटि सो लेई ॥ कांटा बकला सब छिलवावै ।
 गटिया टुकड़ा मिहीं करावै ॥ सर्पपतेल मध्य पकवावै ।
 भस्म होइ तब घोट करावै । यह मलहमकी मालिस
 करै । जामैं बार काँध रुज हरै ॥

घोंघा लेउ सजीव मैगाई । सर्षपतेलमें भस्म कराई ॥
यह मलहम कांधेमें चुपरौ । जामें कच धीरजमनधरौ ॥

अथ जखम लागेपर जो यह दवा लगावै तो

न पाकै न पीव आनै जलदी सूखे

दोहा-मिरचा अरुण पिसाइकै, सांभरिनमक मिलाय ॥

सर्षपतेल मिलाइकै आगीमें पकवाय ॥

चौ०-जखमके ऊपर देउ बंधाई।नीकहोयजलदीसुखपाई

पाकै नहीं पीव नहिं आवै । दवा करो मनमें भावै ॥

अन्य

हलुको घाउ गहिरनहिं कोई।ताकीदवा करौ सब कोई॥

अँबिलीकी पपरीले आवै। जाहिपेडमें सूखि दिखावै ॥

ताहि जरायकै कोइला करो।पीसि जखमके ऊपर धरो॥

जलदी रक्तबन्द है जावै।नीक होय पशु बहुसुखपावै ॥

अन्य

कपराकी गद्दी भिजवाई । घाउकेऊपरकसि बधवाई ॥

पानी ऊपर चुवाबा करै । पहर तीन चारि कम न धरै॥

अन्य

खील सोहागा पीसि भरावै । यहू रक्तबन्द करवावै ॥

अन्य

कच्ची रार सफेद पिसाई । वस्तरफूँकि भस्मकरवाई ॥

जखमके भीतर जो भरिदीजै । रक्तबन्दकरदुखहरलीजै॥

पहले जखमको देउ लियाई। तेहि पाछेकरु दवा उपाई ॥

अथ जखम धोवैका पानी फुरियावगैरहमें

दोहा-फुरिया जखम धोवाव जो, तौ पानी बनवाव ॥

याहीते नीको रहै, पीछू दवा लगाव ॥

चौ०-नींबपातपानीउसनावै। कितौफटकरीडारिपकावै ॥

यासों फुरिया घाव धोवाई। जलदी नीकहोय सुनुभाई ॥

अथ जखम साफकरैका मलहम

चौ०-जौनजखममें पपरी परै। भीतरदवाअसरनहिं करै ॥

ताको मलहम करि चुपरावै। पपरी नरम होय गिरिजावै ॥

गोघृत साँभरिनमक मिलाई। बहुतमहीनपिसायलगाई ॥

जखम लागेते जो खून न बन्द होय ताके

बन्द करनेकी दवा

दोहा-रक्त चलै पशुके जखम, बन्द नहीं देखराय ॥

शृङ्गवगैरह टूटमें, ताको जतन कराय ॥

चौ०-कम्पर लेउ पुरान मैगाई। भेडरोम जामें लगवाई ॥

की तो पटरेशमी मैगावै। अथवा रुईपुरानोलावै ॥

इन तीनोंमेंएकजरावै। भस्मकरायकेजखमभरावै ॥

भरतै रक्तबंद हैजाई। जो कोइ या विधि करै उपाई ॥

अन्य

जारा मकरीको चपकावै। याहू रुधिर बन्द करवावै ॥

अन्य

माटीका यह टिकरालैके। बांधि देउ छतऊपर धरिकै ॥

रंडककोरव सूख मँगावै । ताहि जराय धुवाँ सेंकवावै ॥
पहर एक दुइलों जो करै । रुधिर बन्दकरि दुखको हरे ॥

अथ जखम साफकरनेका मलहम

चौ०-सीपी चूनकरहुवाँलावै । समकरिअरसीतेलमिलावै
यह मलहम जो कोई चुपरे । साफकरै अरुजलदीपूरै
अन्य

हालिम हरदीसम पिसवावै । पानीमिलै घेपि चुपरावै ॥
कपरापरफीहाकरि धरिहै । जखमसाफताहीक्षणकरिहै ॥

मलहम जखममें पीब आनेपर लगावै

दोहा-मलहम भाषों पशुजखम, पीबपरे चुपराय ।

जलदी नीको करत है, कीजो यही उपाय ॥

चौ०-नरियरकरतेल मंगवाई । थोरा थोरा छतचुपराई ॥

मलहम जो जखम को । जलदी अच्छा करै ।

चौ०-सुरदाशंख तूतियारारै । पैसा पैसा भरि तेहि डारै ॥

नींबकीपातीकोमलवावै । तोलातीनिमहीनपिसावै ॥

गोधृतआधपावमिलवाई । अग्निचढ़ायदवापकवाई ॥

जरिकैभसमहोइजबजानौ । पथराभेतवरगरिबखानौ

कपरा चुपरि घावपै धरे । जलदीनीक होइ दुखहरे ॥

जौनजखम अच्छा होइजाय सूखै न आवै

चौ०-जौन जखम अच्छहोइ जावै । अमिष बराबरिसो

देखरावै ॥ सूखै नहीं पिचपिचा लालै । वाकी दवाकरौ

ततकालै ॥ चुनागच पुरान पिसवाई । जखमके ऊपर

सो बुरकाई ॥ गदहालेंडी सूखि पिसावै । घाव पिच-
पिचापरनिथरावै । ऊँटकि पसुरी फूँकि पिसाई । जख-
मके ऊपर सो छिटकाई ।

जखम अच्छा हैगा होइ बार न जामैं वाकी दवा
दोहा-जौन जखम नीको हवै, त्वचा मास भरिपूर ।

जो कच वामें नहिंजमैं, कीज्यो दवा जरूर ॥
चौ०-जामें बार दवा जो करिये । यह विचारिके
मनमें धरिये । लीलकि बट्टी लेउ मँगवाई । मानुष थूक
डारि पिसवाई ॥ एकमासभरि या विधि चुपरौ । जामें
बार धीर मन करौ ॥ श्यामा तिलको भस्म करावै ।
पानी मिलै पिसाय लगावै ॥ साबुन अरु लिलवरी
मिलाई । पानी पीसि देउ लगवाई । मुरगीके अण्डा
मगवावै । तेसब पानीमें पकवावै । ताहि फारि जरदीले
लीजै । वाहि कराहीमें धरि दीजै ॥ तप्त कराही जबहीं
जानौ । जरदी तेल छाँड़िहै मानौ ॥ सो यह तेल
पीछिकै धरिये । चुपरौ बार जमैं जो करिये ।

अब वृषभकी पूँछ की बालरिबारसुधा डंडीकटि
गिरजाय तामें बार जामैंको तेल ।

दोहा-वृषभपूँछकी बालरी, कौनेउ विधि कटिजाय ।

ताको तेल बनाइके, चुपरौ कच जमिजाय ॥

चौ०-मछरी एक चरँगवा कहिये सर्षपतेल मध्यजरैये ।

पथरामें तेहि देउघोटाई । एकमास बालरि चुपराई ॥

“पशुका पेट फाटें आँतें निकसि आवैं वाकी दवा”

दोहा-वृष महिषी पशु और जे, पेट फाटि जो जाय ।

आँतें बाहर नीकरैं, ताको करौ उपाय ॥

चौ-पक्षीबयाकिझोंझमँगवावै । घृतमेंभिजैअग्निफूँकवावै ।

ताकी आँच आँच सिकवाई।आपै आप बैठि सब जाई॥

दोहा-माछी कछुक पिसायकै, आँतनमें चुपराउ ॥

याहूते धसिजाति है, तुरतै करै उपाउ ॥

चौ०-जोपै आँतफाटिकछुजाई।रेशमफूँकिदेउ चुपकाई॥

तापीछे यह जान करावै।जखम मूँजमे तुर्त सियावै ॥

अथ वृषभके नासूरको मलहम

दोहा-रहै बहुतदिन जखम जो, तौ नसूर ह्वै जाय ।

पीब बहै पानी चलै, दवा करौ मनलाय ॥

छन्द पञ्जटिका

सरसोंके तेलले एक पाव । तेहि मोम तीनि तोला

मिलाव॥सो अग्निमध्य लीजो पकायफिर दवा पीसि

पीछे मिलाय ॥ सुरदारशंख हरदी बखान । ले गुलेनार

सूखे सुजान ॥ सुरमाकी बटी तामें मिलाय । फटकरी

लेउ लावा बनाय॥ अरु बारहसिंगाको मँगाय । नाखून

अश्व तामें मिलाय ॥ दूँ अग्निमध्य धरियो सँभरि ।

जब भस्म होय तब ले निकारि॥सब तोला तोलासम

प्रमान । फिरि तेल मोममें देउ सान ॥ अरु आगीमें

थोरा पकाय धरि राखो अपने धाम लाय॥ करु बाती
कपराकी सुवेश । तेहि चुपरि नसूरै करु प्रवेश ॥ जो
बहुत महिनो छेदयुक्त । तौ बाती वैसय करौ उक्त ॥
सो विवर नसूरैमें देवाय । दुहुँबेर मासभरि करु उपाय॥

अन्य मलहम

गोघृतै अधपावै मँगाड। अरु मोम टकाभरि जर्द लाड॥
पिघलाय ताहि दीजो मिलाय । सिंदूररार तूतिया जाय ॥
सुरदाशंख समले प्रवीन । इक तोला तोला करु महीन ॥
घृतमोम मिलै पिसवाड नान्ह । पूर्वोक्त करै बाती विधान्ह ॥

अथ दागे जखमपर लगानेका मलहम

दोहा-मलहम दागे जखमको, बहुत नीक सो जान ।
जो वृषके लेपन करौ, नीक होय पहिचान ॥

छंद-तोमर

कहि श्वेततिलको तेल । एक पावभरि तेहि मेल ॥
अरु फल भेलावाँ जानु । गनिकै सो पंद्रह आनु ॥
तेहि काटि दुइदुइ लेउ । सब तेलमें भरिदेउ ॥
अरु अग्निमध्य पकाय । जब जरि भेलावाँ जाय ॥
फिरि फल निकासि फेकाड । तब और दवा मिलाड॥
एक टका भरि लेलार । गंधक नयनियाँ डार ॥
तूतिया दुवो परमान ! तेहि एक तोला जान ॥
सब पीसि तेल मिलाड । कछु अग्निमध्य पकाड ॥
एक दिवसमें बहुवार । छत लेप करु सँभार ॥

यक पाव तिष्ठिक तेल । तेहिमें सोहागा मेल ॥

नवसादरै परमान । दोनों अधपई जान ॥

तेहि अग्निमध्यपकाड । मलहम सो ताहि बनाड ॥

“फुरिया सब तरहकी निकसै ताको उपाय” ॥

दोहा—फुरियनकेरी दवा यह, जो सूजन पटकाय ।

हजम करे सब वरमको, पहिले करो उपाय ॥

चौ०—सेमरछालीऔकचनारा । जलमेंपीसिपकावोथारा ॥

फुरिया ऊपर देहु बँधाई । सूजनहजम करै सुनुभाई ॥

अन्य

गेरू जामुनि छाल पिसावै । नींब मकोइयापात मिलावै ॥

पानी मिलै गरम करवाई । गुन गुन लेप बँधावो जाई ॥

नींबछाल अजवायनिलीजै । रूसपात समपीसि करीजै ॥

गुनगुनकरियाहूको बाँधौ । नीकन होय और विधिनाधौ ॥

अन्य

सोवासागुके बीज मँगावै । हरदी धनियाँ ताहि मिलावै ॥

पातबबूना सब सम कीजै । पानीमिलाय पीसितेहिलीजै ॥

गरम कराय बँधावै कोई । नीक होय सूजन सब खोई ॥

फुरिया पकानेकी दवा

दोहा—दवावरम कीजो ऊपर, बहुविधि लिखी बनाय ।

जो वासों पटकै नहीं, कीजै और उपाय ॥

चौ०—फिरि पाकैकी दवा धरावै । जामें फूटिबहै सुखपावै ॥

चाउर तक्र मिलै पिसवाई । नमक मिलाय अग्निपकवाई ॥

यहपुलटिसफुरियापरधरौ।पाकिबहैविधिवत जो करौ॥
 मोरेठी अरुपात सँभारू।लेड मयनफल सम सब डारू॥
 पीसि नीरमें गुनगुन कीजै।फुरिया ऊपर सो धरि दीजै॥
 याहू पकवै पीव बहावे ! और दवा सुनु जो मनभावे॥
 गेहूँ दरिया दही मिलाई।बहुत महीन ताहि पिसवाई॥
 अगिनिपकाय देहु बँधवाई।फूटिबहै जो करौ उपाई॥
 दोहा—जो इतने पकि फूटि बहि, तौ है नीक विधान॥
 नाहीं तौ यह दवा करू, जौन लिखों परमान॥

चौ०-गूगुरसहत मिलाय पिसावै।गुनगुन करि लेपन
 करवावै॥अजवायनगुडमेंपिसवाई।नीरमिलायअग्निपक
 वाई॥॥गुनगुरलेपकरौपशुकेरे।फुरिया फूटि कहाँ मैं
 टेरे॥विष्ठा लेड कबूतर केरी।मुरगी अंडा मिले बहोरी॥
 देसी राई जल पिसवावै।तीनों मिलै अगिनि पकवावै॥
 फुरियापर तेहि देड बँधाई।फूटि बहै नहि और उपाई॥
 तौ नस्तरमें ताहि चिरावै।बहे मवाद नीक है जावै॥

दोहा—फिरि नीबीके पात लै, थोरा नमक मिलाय।
 पानीमें तेहि पीसिके, टिकिया रचो बनाय॥
 फुरिया चीरीपर धरौ, तीनि रोज दुहुँबेर॥
 साफ भये मलहम करे, नीक होय नहिं देर॥
 कीतौ टीकियापर चुपरू, थोरा सहत लगाय॥
 याहू करि है साफ बहु, तब मलहम लगवाय॥

चौ०-जेमलहम ऊपर लिखिआये, तेहिलगवाएते सुख-
पाये । फुरियामें मांस न बाढै तेहिकी दवा

चौ०-जो नहिं मांस बढै फुरियामें । तौ यह यतन
विचारौ मनमें ॥ गिरिगिट एक मारि लै आवै । चरण
पूँछ सब काटि फेंकावै ॥ पेट चीरि आंतै निकराई ।
तिल्लीतेल मिलाय पकाई ॥ आधपाव परमान करावै ।
बहुत भस्म होने नहिं पावै । यहै तैल फुरियामें
चुपरौ । जलदी मांस बढै जो करौ ॥

अथ मलहम

विनवाँकंडा भस्म करावै । सीपचून तेहिमें मिलवावै ॥
टका टकाभरि दोनों लीजै । अरसीतेल पावभरि कीजै ॥
यह मलहम जो नित्य लगावै । नीक घाउ ह्वै है सुख-
पावै जेहि वृषभके खुर फाटा करैं पीव वा पानी

बहै ताको मलहम

दोहा-खुर फाटै जेहि वृषभके, सदा रहैं तेहि काट ।
ताके मलहम चुपरिकै, पशुहि बचावो चाट ॥
कामीला अरु मस्तगी, दुवो बराबरि लेउ ।
बकरा चर्वी मिलै, पीसि मिहीं करि देउ ॥
चौ०-यहमलहमजोदेउलगाईजलदीनीकहोयसुखपाई ॥

अन्य

कुरुकुटअंडकि बलकी लावै । बकरी शीशको अस्थि
मगावै ॥ दोनोंअग्निमेंदेउजराई । दुइदुइतोलाभस्ममिलाई

राँग ककुस्तावंग कहावै । तोला एक ताहि मिलवावै ॥
 श्वेततिलनको तेल मिलाई । खुरनके ऊपर चुपरो भाई
 तेहि पीछे विधि और करावै । जलदी नीकहोयसुखपावै
 ताते जलकरि खुरतहि बोरै । कितौ उपर टपकावा करै
 एक पहर नित है परमाना । जबलगनीकनहोय सुजाना

अन्य

सोनमखी अरु लेउ कसीसा । पत्थरचून तूतिया पीसा ॥
 निबुकागदी रसमें भीजै । मिहीं पीसिखुर जखम भरीजै ॥
 ताके ऊपर पट कसवाई बहु मजबूत देउ बँधवाई ॥
 सेन्दुरुफ दुइमाशे पिसवावै । माशे चारि लौंग मिल-
 वावै ॥ बकराचरबी मोम मँगाई । टका टका भरि
 दुवो मिलाई ॥ पाव एक गोघृतकोलीजै । अग्नि चढाय
 पकावन कीजै ॥ सो मलहम खुरऊपर चुपरो । एक
 मासलग यहि विधि करौ ॥ अजयपुत्र शिर गूद
 मँगावै । श्वेत तिलनको तेल मिलावै ॥ बहुत लेपिकै
 देउ लगाई । रोग खुरनको जाय नशाई ॥ श्याम तिल-
 नको मिहीं पिसावै । और सफेदा ताहि मिलावै ॥
 पाव एक द्वौ लेउ तुलाई ॥ केसरि माशे सात मिलाई ॥
 तीनों दवा पीसि धरि दीजै । फेरि यतन औरौ विधि
 कीजै ॥ मुरगी अंडकी जरदी लीजै । कल्लुक दवा वह
 ताहि घे पीजै ॥ चारों खुरमें नित प्रति चुपरै । रोग
 जाय वह दुख हरै ॥

अथ बदसुरिनका इलाज

दोहा-बैंगन पानीमें पके, बदसुरि, देउ मलाय ।
श्यामातिलकी भस्म करि, पानी पीसि लगाय ॥
झिकवामटरी लायकै, नीरसंग पीसवाय ।
बदसुरि ऊपर लेप करि, रोग दूर हैजाय ॥

अथ प्रथम कीराशाई नाशन

दोहा-जखम फूरिया पीबमें, माछी लगै बनाय ।
तौन हगे सोई कहै, फिरि कोरा हैजाय ॥
चौ०-दिनभरिकीकछुख्यालनकीजै । सांझभये साईल-
खिलीजै ॥ ताहि गिरायदेउलकरीते । घाउधोवाउनीरहु
क्काते ॥ फिरिकीरानाईएकदेखावै ॥ मलहमलैतामेंचुपरावै ॥

अन्य

जो कीरा बहु देय देखाई । बडे बडे बहु दिनके आई ।
घोडवचपीसि जखममें भरै । कीरामरैसकल झरिपरै ॥

अन्य

कितो सरीफापात पिसाई, भरौ घाउमें बहुपिसवाई ॥

अन्य

पात तमाकू और फिटकरी, पीसि घाव कीरनमें भरी ॥

अन्य

लकरी एक मुलीम कहावै । ताहि मँगाई पिसि भरवावै ॥

अन्य-दवा बुझावाकी

कण्डाकी आगी बनवावै । सर्षपतेलहि ताहि बुझावै ॥

भरौ जखम कीराजरि जावै । नीक होय जलदी सुख पावै ॥

अन्य

कछाबाँस तेल सर्षपमें । ताहि पीसी भरि देउ जखममें ॥

अन्य-टटका

मोरपंखकी ठिकुली लीजै । गनिकै सात भौम दिन दीजै ॥

आटामें तेहि सानि खवाई । कीरा मरै सकल भरि जाई ॥

इनमें दवा जो एकौ करि हैं । कीरा मरै गिरै दुख हरि हैं ॥

मन्त्र कीरानिवारण--इन्द्रजालग्रन्थको मत है

महते पटवारी अरु जगाती । वथाजिताके पायो कीरा गया ॥

दोहा-कीरा गो वृष महिषके, जो तनुमें परिजायँ ।

ताको मंत्र विधान करू, रविवासरदुख जायँ ॥

चौ० जहचौरहा होय सुनु भाई । तहँ कीठिकरी सात मँगई ॥

लैलें नाम वही पशुकेरा, जौन किर्म दुख भयो घनेरा ॥

पढिकै मंत्र बेर करू तीनी । पशुके मालिक को दै दीनी ॥

और वचन वाही सों भाखै । कीरा गये धीर मन राखै ॥

सो मालिक वहि ठिकरी लै पशुके मारै अरु यह कहिकै ॥

कीरा गये वचन यह भाखै । चौथे दिवस छतैको देखै ॥

ॐ नमो कीरारेतू कुंडकुडी लालाल पूँछ तेरा सुख कीला ॥

मैं तोहि पूछौं कहाँ ते आये तोरि मास तैं सब कोखाये ॥

अब सब जाय भस्म हो जाय । गुरुगोरखनाथ तो लागहु

पाय ॥ शब्द साँचा पिंड काँचा ॥

विधि

दोहा- नीबीकी इक डार लै, सातबेर पढि मंत्र ॥

कीरा झारे पशुनके, नीक होय यह तंत्र ॥

मलहम कीरानिवारण-माछी न बैठें

दोहा-पशुके तनुमें जो कहूँ, जखम किर्म है जायँ ।

ताको तेल बनाउ यह, लागे सकल नशायँ ॥

चौ०-सर्षपतैल लेउ सेर एका । नींब तैल इक पाव
सो नीका ॥ कनयरकी पाती मँगवावै । और पियाज
कुचिलिमिलवावै ॥ पाव पाव दोनों पिसवाई । एक
छटांक मिलाय पिलाई । तोला दुइक तूतिया लीजै ।
ताहि पिसाय महीन करीजै । तेल अग्निमें देउ चढाई ।
सकलदवा तामें जरवाई ॥ भस्म होय तब रगारि मिलावै ।
याही मलहम जखम लगावै ॥ कीरा मरें और नहिं ।
परिहैं । माछी ताको निकट न जेहैं ॥

दोहा-जखमके ऊपर लावई, यह मलहम जो कोय ।

माछी नहिं संग्रह करैं, जलदी नीक सो होय ॥

चौ०-कुचिलि भेलाव गूद निम्बकोरी । आधपाव
दोनों समघोरी ॥ आधासेर सर्षपको तेल । अग्नि
में दवा तेहि मेला । भस्म होय तब लेउ उतारी ।
तेल भये रगरू बहुभारी ॥ काचीरार छटाक मँगवावै ।
श्याम मिर्च दुइ तोला लावै ॥ दोनों पीसि महीन
मिलाई । तब याको क्षतपर चुपराई ॥

मलहम कंठमालाका दूसरा नाम गंडमाला
 दोहा-घींचनरी गरदनसकल, गिलटी बहु परि जायँ ॥
 पाकै फूटै पीबबहि, कंठमाल रुज आय ॥
 गंडमाल कोऊ कहैं, महाकठिन तेहि जान ॥
 मेहनते दवा कराउ बहु, तब नीको पहिचान ॥
 चौ०-दण्डीचरखीकीमँगवावै।सो पावकमें तप्तकरावै ॥
 जेहिदिशिघुण्डीगोलदेखावै।तेहिदिशिमें गूथी दगवावै॥
 जितनो गूथी देयँ दिखाई।तिनपर बुन्दा देते जाई ॥
 सबगिलटी गूथी दगवावै।एकौ बाकी नहि रहि जावै ॥
 ता पाछै विधि और करीजै।गंडमाल रुक्ष तासोंछीजै ॥
 दुमुहाँ सर्प मारि इक लावै।माटीके बरतन धरवावै ॥
 खोदिजमीनगाडितेहिदीजै।चालिसदिनपीछेतैहिलीजै॥
 धोयसाफकरिअस्थिनिकारै।ताकोमालाकरि उर धारै॥
 की कूकुरकी खोपरी लीजै।वृषके गरे बांधि तेहि दीजै॥

ये दोनों मलहम आदमियोंके

वास्ते बहुत अच्छे हैं

चौ०-दवादारसाबुनमँगवावै।आधपावकीतौलकरावै॥
 तीनिपावसर्षपकोतेला।एकछटांकमनुष्य कच मेला॥
 अगिनिचढायतेलकोदीजै।तामें बार डारिसब दीजै ॥
 जब कच भस्म होयँसुनु भाई।तबसाबुनतेलैमिलवाई॥
 यहमलहमहैनीकबखानौ।कंठमालदुखहरतविधानौ॥
 जोमानुषकेयहरुजहोई।ताकोमलहमकरुयहसोई ॥

रविदिनमारि छछूँदरिलीजै । सर्षपतेलजारि तेहिदीजै॥
सोमलहम रुजपर चुपरावै । नीकहोयबहुसुखउपजावै॥

अथ पनियारीरोगलक्षण

दोहा--मुख चौहैं नीचेनकी, खाली जहँ दर्शाय ।

ताहिमध्य सूजै अधिक, पनियारी सो आय॥

दाढीते ग्रीवा लगे, सूजि अधिक मुख जाय ।

चारा पानी नहिं करै, ताको करो उपाय ॥

चौ०--अजयार्शीशकगूदमँगावै । पत्थरकाचूनामिलवावै
दोनों घेपि चुपरि नितदीजै । फूटिवहैकबैठिकहीजै
तेहिपाछेमलहमचुपरावै । नीकहोयतनु सुख उपजावै ॥

अन्य

की तो लोहतप्तकरि दागै । याहूते रुज जलदी भागै॥

अथ वेलियारोगहलकके नीचे घूटीमें

गेंदप्रमाण गोल निकलता है ।

चौ०--घूटीहलककेनीचेजानौ । घींचकेऊपरगोलबखानौ॥

गेन्दसमानरोगतेहिनिकरै । एकैतरफ कि दोनों बोरै ॥

याकोवेलियानामकहावै । दवाकियेतेसबमिटिजावै ॥

दवा

नींबकी पाती लै उसवावै । देउ बफारा धार छोडावै ॥

फिरि पाती वह देउ बँधाई । नीक न होय तौ और उपाई

दागनेकी विधि

ताहि गंरेरि गोल दगवावै । सीधी बेडी लीककरावै ॥

(७८)

वृषकल्पद्रुम

लीखौ दाग जेहिसुरतिकेरौ।वाविधिकरौनकछुअरुझेरौ॥



जो दागे नहीं नीक देखावै । तौ फिरिया की दवा करावै॥
बासो पकै फोरि तेहि दीजै । पहियेही या लेप करीजै॥
कोराजीर मेथि अरु सोवा । तीनों बीज पीसिकै पकवा॥
गुनगुन करि लेपै रुज ऊपर।बेलिया फूटि बहै यह दुखहर॥

अथ हाउनाम रोग दूसरा नाम घेघा

दोहा--हाउ रुजको करत हैं, दूसरा घेघा नाम ।

ताके लक्षण परखिकै, दवा करौ अभिराम॥

चौ० मुशकिल से यह नीको होई । महाकठिन तेहि जानो
सोई ॥ जौन तराइमें पशु रहैं । तिनको हाके होय सब
कहैं ॥ नदी किनारे घास मटीली ॥ तेहिउ चरे रोम
यहु खीली ॥ थैली ऐसी लटकि जो आवै ॥ हलकके
नीचे सो देखरावै ॥ तबहिं दस्त बहु पशुको आवै ।
दिनदिन दूबर होते जावै ।

दवा

श्यामधतूरकी पाती लावै।और मकोय समूल मिलावै॥

काराजीरी मयदालकरी । जलमें पीसिनान्हिके धरी ॥
सकल दवा सम तप्तकरावै । घाउके ऊपर सो लिपवावै ॥

अन्य बफारा

नींब बकैना और सँभारू । तीनोंपात बराबरि डारू ॥
बरतनभरै अग्नि उसवावै । ताहि बफाराको करवावै ॥
जब सेराय तब यहै बधाई । पांच सात दिन करौ उपाई ॥

अन्य--लेप

अजवायन सिरकामें पीसै । गरम कराय होउपर परसै ॥
शामसुबहको यहै खवावै । एकछटांक प्रमाण बतावै ॥

अन्य--गोली

कुटकी श्याह मिर्चकोलीजै । आधपाव दोनोंकरिदीजै ॥
हींग अफीम देउ मिलवाई । दशदशमासे सो मगवाई ॥
बच्छनाग दश मासे लीजै । अरु वंडार सेरदुइ कीजै ॥
करुई तोंबी मदिरा लीजै । आध आध पावहिकरिदीजै ॥
सकलदवा बहु नान्हि पिसावै । मदिरामें गोली बनवावै ॥
छायासे परमात करीजै । नितप्रति एक खानको दीजै ॥

अन्य--लेप

मूरीबीज कलमिया सोरा । जलसों पीसि गरमकरघोरा ॥
सज्जी जवाखार मँगवाई । सेंधानमक ताहि मिलवाई ॥
आंबाहरदी पिपरी सरसों । बहुत महीनपीसियोकरसों ॥
सकलदवा समभाग करीजै । गरम कराय लेप करि दीजै ॥
ऊखकेर रसको चुपरावै । तासों माछी बहु लपटावै ॥
सूजन सकलचाटिसौलेहै । लीक होयपशु बहुसुखदेहै ॥

अन्य--दवा खानेकी

कुटकी काराजीरी सौंचर । टका टका भरतीनों समकर ॥
आठ दिनालों देउ खवाई । मृत्यु न हो नीक देखाई ॥

सूजनमिटानेका मसाला

घोड़वचचंपाचीत जवायनि । हरं नमक सैंधौ समलाइनि ।
एक छटाँक वजन तेहि कीजै । सर्पपतेल सानिकै दीजै ॥

अन्य--दागनेकी विधि

हुक्काकेरी चिलम मँगावै । पावक तप्तकाल करवावै ॥
कूलेढिग चुतरिनपर कीजै । यकयक दाग ताहिके दीजै ॥
सकल अंग जो सोथ देखावै । श्याममिर्च बहुताहि खवावै ॥
मुण्डीकेर बफारा दीजै । सूजन नीक होय दुख छीजै ॥

हैलुवानामरोगका लक्षण

दोहा--हैलुवा रुजको नाम है, देय महिष वृष सोग ।

ताके लक्षण कहत हौं, जो समुझैं सब लोग ॥

चौ० हलकते सूजन उतरै भाई । छाती लगै बढ़ति ॥
सो जाई ॥ अरु दुमतक याही विधि जानौ । ताकी
दवा करो बुधवानौ । जेहि कममतिकी रीति बखानैं ।
ते यहि जहरबातकरि मानैं ॥

दवा

सो सनकी जड अदरख लीजै । श्याममिर्च ताहीमें दीजै ॥
तीनों दवा पीसि सम लावै । सांझ भोर वृषखानको पावै ॥
काराजीर जवाइन गेरू । पीसि नीर कछु सिरका डारू ॥
गरम कराय लेप करि दीजै । रामकृपा तेहि नीको लीजै ॥

अन्य-बफारा

पत्थर तप्त बहुत करवावै । तेहि पर बकरी दूध डरावै ॥
की वाहीको सूत्र जराई । निकरै बाफ ताहि सेकवाई ॥

अन्य-मसाला

सोंठि पिपरी मिर्च मँगावै । वायविरंग चिरैता लावै ॥
जीरा श्वेत शतावरि गेरू । सोवाबीजसों काराजीरू ॥
कुटकी ककरा शृंगी लावै । लहसुन अरु वंडार मिलावै ॥
सकलदवासमभाग पिसाई । चना के आटा मानि खवाई ॥
आधपावकी वजन करीजै । प्रातः वृषके मुख भरि दीजै ॥
जीरा श्यामलीजियो हरदी । पाव पाव दोनों कर गरदी ॥
श्याम मिर्चसेर आधक लीजै । सकलछानि एकैमें कीजै ॥
एक छटांक खवावै प्राता । नीक होय दीज्यो दिनसाता ॥

आरजाकंठदुःख

दोहा-कंठदुःख यहि रोगको, नाम कहैं सब लोग ॥
ताके लक्षण परखिकै, दवा करौ यहि योग ॥

चौ०कानकि जरते सूजन जानौ । हलकगरे सोई
पहिचानौ ॥ चारा खाय न जलसों नेहा । दिन दिन
दूबरि होवे देहा ॥ पक्की ईट गरम करवावै । तासों
कईवेर सेंकवावै । जहँ सूजन होवै सुनु भाई । लोह
तप्त करि गोल दगाई ॥

यही शकलको दाग देवावै । तासों नीक होय सुख पावै ॥

अन्य

इन्द्रायनिकोफलएकलावै । भुलभुलाइकै ताहिपकावै ॥
यव आटासँग पिंड बनाई।मुख पसारि गलियायखवाई॥

अन्य

सोंठि मिरच अरु काराजीरी । तोले डेढडेढ करु फेरी॥
लहसुन आधपाव पिसवाई।आटामें करि पिंड खवाई ॥

अन्य लेप

गूदां अँविलतासको लीजै । पात मकोय ताहिमें दीजै॥
नींबछालिमिलि मिही पिसावै।गर्म कराकैलेप करावै ॥
कपराकी गादी बनवावै । तप्तनीरसे भिजै बँधावै ॥
बहुत दफा यकरोज करीजै।कंठदुःखरुजको हरिलीजै॥

हलकमें सूजन किस्म जहरवातकी होती है
दोहा वृषभ महिषके हलकमें, सोथ होय अधिकान॥
चारा पानी परिहरै, दुखित रहै तेहि प्रान ॥

चौ०--जहरवातकी दवा करीजै । तासों नीक होय सुख
लीजै ॥ इन्द्रायनजड़ कुटकी लावै । जीरा श्वेत अश्वेत
मँगावै ॥ इंदरयव मीठे मँगवाई । तामें हरदी देउ
मिलाई ॥ तोला तीनि तीनि यह लीजै । ता पाछे
विधि और करीजै ॥ लेउ मस्तमीरूगी भाई । वंश-
लोचनै ताहि मिलाई ॥ टका टकाभरि दोनों लावै ॥
सोंठि मिर्च यकपाव मिलावै ॥ पीसि कूटि कपरा
छनवाई ॥ थोरा थोरा प्रात खवाई ॥

दवा खरिष्टखुजलीकी । खुजली दुईतरहकी होती है

एक तर, दूसरी खुश्क

सवैया—वृष जौन देवाल औ वृक्षनमें रगरा करै देइसोइ
दुबराई । रसको सिरसा मदिरासम मेलि लगै तेहि अंग
महासुख पाई ॥ दिन पांच औ सातलों याहि विधानसों
देउ दवाई यही मनभाई ॥ मतिवान कहै खुसकी खुजली
नहि नेको रहै जरमूलते जाई ॥ १ ॥ नैनियगन्धक लै
हुइ भाग औ पारासों एकही भाग मिलाई ॥ कटुकैसों
बदामकी गूदी त्रिभागसों औषध डारू महीन पिसाई ॥
गोघृतमाँहि मिलै सबको वृषके सगरे सोइ देहमिलाई ॥
है निह चैनर है खुजली तनको करुवेग दवा सुखपाई ॥ १ ॥

अन्य

सोरठा—सुभग लेउ हरतार, साँभरि लौनै सम तहाँ ।
पीसि सो घृतमें डार, देहीमें मरदन करौ ॥
दिनातिनि अरुचारि, मालिसकरि घामें बँधौ ।
यहनिश्चयचितधारि, खुश्कजायखुजलीसकल ॥

तरखुजलीके लक्षण वा दवा

सोरठा—खाल फाटि तनुजाय, जगह जगह पानी बहै ।
यह लक्षण चितलाय, जानौ तरखुजलीहवै ॥ १ ॥
साबुन देशीराय, सेन्दुर तीनों भाग सम ।
रससिरकामें पिसाय, वृषभदेहमें सो मलै ॥ २ ॥

अन्य

पारा एकै भाग, और फटकरी भाग द्वै ।
 अर्क कष्ट धरि आगि, भस्म तीनि भागै मिलै ॥३॥
 रससिरकामें पिसाय गोघृत इकइस बेरध्वै ॥
 वाही दवा मिलाय, वृषदेही मालिस करौ ॥ ४ ॥

अन्य

साबुन नमक पिसाय, वाही विधि धोवै घृतै ।
 वृषके तनु मलवाय, तरखुजली जाती रहै ॥ ५ ॥
 दोनों किस्मकी खुजलीकी दवा
 सोरठा-हरित जो पीपरपात, जल मिलायकै पीसिये ।
 कटुकतेल मिलवाय, वृषके तनु मरदन करौ ॥१॥
 की तौ अग्नि जराय, वहै भस्म कटुकतेल संग ।
 सकल शरीर मलाय, युग खुजली जातीरहै ॥२॥
 चारी घरीके वाद अन्हवावै मलि मलि सकल ।
 आठ रोज परमान, नीक न होय तौ और विधि ॥३॥

अन्य

साँभरिनमक छटाँक, साबुन दोनों तासुको ।
 पानीमें पिसवाय, वृषतनुमें मालिस करै ॥ ४ ॥

अन्य

दोहा-दधि वारूद मिलायकै, वृषके तनु मलवाय ।
 तरखुसकी खुजली दुवो, सात रोजमें जाय ॥१॥

उर्ददालि लै पाव यक पानी सांझ भिजाय ॥
 मिर्चा अरुण छटांक भरि, बहुत महीन पिसाय ॥२॥
 प्रातसमय मालिस करौ, वृषभ अङ्गमें जाय ॥
 खुसकी तर खुजली डुवो, गेरहे दिवस नशाय ॥
 हुक्कनको पानी मलौ; पन्द्रह दिन नितप्रात ॥
 कि तौ तमाखू भिजैकै, मालिस करु तनु तात ॥४॥

अथ गजचर्म, दूसरा नाम चर्मदलकुष्ठरोग है ।
 दोहा-रोग कठिन गजचर्म है, जा वृषके तनुमाहिं ॥
 गजकी ऐसी खाल है, अति खादर कहि ताहिं ॥
 पहिले थोरी देहमें, फैलि सकल तनुजाय ॥
 मछरीके सिफनानसम, खजहर लखौ बनाय ॥
 चौ०-नेक पसीना तन नहिं आवै । कुष्ठरोग यह
 दोष कहावै ॥ याकी दवा करौ मनलाई । रोग दूर
 होवै सुखपाई ॥ कच्छूराक्षस तेल लगावै । तासों रुज
 यह नीक दिखावै ॥ अरु मिरचादिनाम यक तेल
 तेहिके मले रोग पर हेल ॥

अन्य लेपन

आंबकि फाँकी सूखि पिसावै थोरा सेन्धौ नमक
 मिलावै ॥ तांबेके बरतनमें धरिकै । रगरो ताहि देर
 बहु करिकै ॥ पानी डारि डारि पिसवावै । सकल
 अंगमें देउ मलावै ॥ एकमास या विधि करवावै ।
 त्वचा रोग यह खोय बहावै ॥

चौ०-अँवरा सूखलेउ मँगवाई।जलमें पीसि देउ चुपराई॥
बहुतरोजलग या विधि कीजै।रोगजाय तनुको सुखदीजै॥

अन्य

चौ०-जडकैथा अरुनींबि बकैना।छाली छील तिहूँकी
लैना॥ गदहपुरनवाकी जड़ लीजै।बीजपवार ताहिमें
दीजै॥ हरदीदारु हरद पदुमाषा।करवाकूट कहौ तेहि
भाषा।जटामासि अरुवायभिरंगा।सेंदुर चंदन अरुण
को अङ्गा॥ सकल दवा समभाग पिसाई।सर्षपतेल
लै छगुण मँगाई॥ दवा पीसि पानी घोरवावै।तेल
मिलाय अग्नि चुरवावै॥ जब जल जरै दवा पकि
जाई।पथराभे तेहि रगरि मिलाई॥ तेल चरमदलपर
मलवावै।एकमास परमान बतावै॥

अन्य

चौ०-श्यामा मिरच मैनशिल लीजै।हरदीदारु हरद
कहि दीजै॥ कनयर श्वेत अर्कजड लीजै।छाल छिल
बाकी धरि दीजै॥ अरु हरताल ताबकी लावै।करुवा
कूटै ताहि मिलावै॥ जडइन्द्रायन चन्दन अरुना।सकल
लेउ सम मिही पिसौना॥ गाय कलोरि होय अनव्यानी।
वाके सूत्रमें दवाको सानी॥ गो गोबररस लेउ निचोई।
चौथाई सब दवाको होई॥ दवाके षटगुण सर्षपतेला।
ताहि मध्य पचवै सबमेला॥ बरतनमें तेहि छानि
धरावो।रूजके ऊपर नित्य लगावो॥

अथ खौरारोगलक्षण

दोहा-खौरा रूज वृषके प्रगट, चट्टा सकल शरीर ।

सकल बतासाकी हुवें, कछु खजुली है पीर ॥

चौ०-खाल बहुत फूहर है जाई । श्याम वृषभको बहु
दुखदाई ॥ केतनौ जो बरदासि करीजै । दिन दिन दूबर
है तनु छीजै ॥ कछुक दिनामें खाल उधीलै ॥ याकी
दवाकरो मतिढीलै ।

दोहा--वृषभदाँत मुसकुरनके, ताके बीच बखानि ।

चना दालि सम होति इक, गूथीरूज जरजानि ॥

चौ०--ताको नखभेनोचिबहावै।ऊपरहरदीपीसिमलावै॥

कोई चरखी दंडीभेदागै । खौरारूज तनुतेसबभागै॥

तेल महामिरचादिबनावै।ताकोसकल अंगमलवावै॥

कच्छूराक्षस है एक तेल।ताहि लगाये रूजपरहेला

कच्छूराक्षस तेलका नाम, त्वचाके सर्वरोगनाशन ।

दोहा-कच्छूराक्षस तेल यह, वरणौ गुण तेहि अंग ।

त्वचा रोग जेतने हवें, लेप कियेते भंग ।

चौ०-भावप्रकाश ग्रंथ यक नामा।ताको मइ यह कहौं

ललामा॥सोंठिपषाणभेद अरु पियरी।कंजकिगूदी जर

करियरी॥कूठदतूनिकी छाली लीजै । चीतकि लकरी

तामें दीजै॥गन्धक अरु हरताल मिलावै।और कसीस

मयनशिल लावै ॥ सैधौलोन श्वेत मँगवावै । नीबपात

तामें डरवावै ॥ लेउ कटैयाजडकी छोली । जाके बीज

श्याम जनु गोली ॥ वीजपवारके वायभिरंगा । यतनी

दवा करौ एक संग। ॥ धेला धेला भरि सब लीजै । आगे वचन और कहि दीजै ॥ सेहुँड अर्कदूधको लावै । टका टका भरि ताहि मिलावै ॥ अरु गोमूत्र सेर दुइ लीजै । सर्षपतेल सेर एक दीजै ॥ जुदी जुदी मिलि नीर पिसावै । कल्क बनाय तेल पचवावै ॥ एक एक दवा देउ पकवाई । पाछेको गोमूत्र पचाई ॥ शुद्ध भये तब राखु धराई । मानुषत्वचा रोग लगवाई ॥ अरु पशुके तनुमें लगवावै । सकल कुष्ठरुज खोय बहावै ।

तैल नाम महामरिचाद्य

चौ०-है यह तैल महामरिचादी । ताके गुण सब कहि विधसाधी ॥ वृषभ अश्व गजवाई पकरै । मले तेल तनुको रुच बिगै ॥ और कुष्ठ फुरिया त्वचरोगा ॥ तेल लगाये तेहि सुख भोगा ॥ मिरच निसोत कूठ हरतारु । वायभिरंग खदिर बच डारु ॥ बीज पवार ककूदनि लीजै । गो गोबररस गुरच भनीजै ॥ बकुची दारुहरद औ हरदी । चन्दन लाल करौ बहुगरदी ॥ सेहुँडा अर्क दूध मँगवावै । अरु दतूनि की छाली लावै ॥ इन्द्रायन करियारी की जर । कजकी गूदी चीतकोलै धर ॥ कनयरजड़ की छालि मँगवावै । नागरमोथा ताहि मिलावै ॥ छालिनींब कुठ सिरसा लीजै । हेमदारु मयनाशिल दीजै ॥ सतउज छाली कोलै आवै । जटामासितेहिमें मिलवावै ॥ रोहिसनाम एक है घासा । कछुक नीक तामें है वासा ॥ काटका भरि सब पिसवावै । पानी डारि कल्क बनवावै ॥

टकादोइभि जहरसिंगिया।लेउ पिसाय ताहि धरि दिया॥
चौसठिटका तेल सर्षपका।तामें दवा पकाव सो नीका॥
दोहा-दुइसै छप्पन टकाभरि, ले गोमूत्र सुजान ।

पीछेको तेहि पचैके, रुजपर करौ विधान ॥

अथ परिहुल रोगके लक्षण वा दवा

दोहा-दांत ओठके बीचमहँ मुछुकुर, सूजे होय ।

परिहुलनामक रोग सोइ, जानिलेउ सब कोय ॥

चौ०-सोई पशुको बहु दुख देई । चारा दाना खान
न देई ॥ ताकी दवा लिखौ चितलाई । जातै पशुको
दुख मिटि जाई ॥ मेथी साभरि लोन मँगाई । अरसी
समकरि लेउ मिललाई ॥ पीसी वरमपर मालिस करई ।
देइ लगाय दुःख सब हरई ॥

दोहा-जो यह वरम गदूदकी, तरह देखाई देय ।

तौ नस्तरलै युगुतिसे काटि दवा यह देय ॥

चौ०-इरदीसांभरिलोनमँगाई।छिडिकिताहिपरदेइ लगाई
दोहा-सोंठि पान अरु मिरचले, समकरि देइ मिलाय ॥

पीसि तीनि दिन दीजिये, परिहुल रुज मिटजाय॥

अथ चुप्पारोगलक्षण वा दवा

चौ०-दूनहुँ ओठनके तर ऊपर । होत हैं वार जौन
तिनके तर ॥ खालके मध्य मांस बढि आवै । चुप्पा-
नाम सो रोग कहावै ॥ शकल गदूदकेरि असि होवै ।
चारा खात बहुत दुख देवै ॥

दवा

दोहा-नस्तरभे तेहि चीरिकै, डारु गदूद निकारि ।
 तापीछे यह दवा करू, लिखि जो हम निरधारि॥
 चौ०-हरदी अरु कोइलासम लाई । नींबकी
 छाली लेउ मिलार्इ ॥ पीसि महीन घाउमें भरिये ।
 चुप्पारोग पशुनको टरिये ॥ अथवा हरदी नमक
 मिलार्इ । मलते चुप्पारूज नशि जाई ॥

पिंगरोग दांतनका

दोहा-पिंगरोग पहिचानियो, दशन गिरैं यकवार ।
 दाना चारा खात दुख, वृषभ दोषको सार ॥
 अथ तारूरोगके लक्षण वा दवा

दोहा-रदनमूलते प्रगट ह्वै, तारूलग जा फूलि ।
 कबहुँ कोई वृषभके, छाला परै समूलि ॥
 चौ०-कछुदिन चारापरिहरै। दूबर होय बहुतदुखभरै ॥
 सोवा बीज जवायति लावै। दुइदुइ तोला तेहिचुरवावै ॥
 सीरोकरि मलितेहि छनवाई। केहूविधि वृष देइ पियार्इ ॥
 सूजनपर नस्तर लगवावै। चरिउचरखकिफस्तखोलावै ॥

अथ अनछरारोगलक्षण वा दवा

चौ०-जो पशुकी जवानकेऊपर। दानाछोटनोकीलेदुखकर
 सोरुजनाम अनछरा जानो। ताकी दवा करो बुधिवानो ॥
 खानेकी बहु इच्छा करई। दाने गड़े खात नहिं बनई ॥
 दवा-प्रथमबांसकीपरच मँगाई। तासे दाना देइ छोलार्इ ॥

दोहा-काराजीरी मिरच लै आंबाहरद मिलाड ।

पीसि बराबरि ताहि पर, बारहिवार लगाड ॥

चौ०-दूसरिदवासुनौ चितलाई।प्रथमहिधवकेफूलमँगई॥

दोहा-तिनकहँ जलमें भिजै पुनि, सेंधौं रसवत लेइ ॥

सोराकलमी सम करै, फेन समुन्दर देइ ॥

चौ०-मलै अनछरारुजपरजोई सत्य कहौं नीको पशु होई॥

दोहा-धोंकी जड़ अरु फूल त्वच, पाती लेइ मँगई॥

पानीमें औटाय जब, आधा जल रहि जाइ ॥

चौ०-वहजलदांतपरलगवावै।रोगअनछरासोमिटिजावै।

मेझुकीनाम रोग जीभपर होता है

फारसीमें अलाई नाम है

दोहा-वृषभमहिषि पशु और जे, रसनामध्य जो होय॥

ऊपरकी दिशि सोथ है, मेझुकी जानौ सोय ॥

चौ०-चाराखाइनजलसोंनेहा । नितप्रतिदूबरिहोवै देहा

घास खातिपर घुरघुरकरै । यहि लक्षण मेझुगीके धरै

दवा

बरजतिया एक सर्प कहावै ॥ ताहि निकाय सुखै धरवावै॥

तोलाभरि तेहि लेउ पिसाई । हरदी एक छटांक मिलाई॥

चरिपांचदिनपशुकोदीजै । मेझुकी नीक होय सुखलीजै॥

अन्य

मेलाबगुली एक मँगवै । पंख उखारिके मांस खवावै॥

(९२)

वृषकल्पद्रुम

वाके अस्थि पीसि रुज चुपरे । जहँ मेझुकीको ठाँउ निहारे
अन्य

मेझुकीले तीन दिन दीजै । याहूते रुज नीको लीजै ॥

मेझुकी दागनेकी विधि

रविदिन तेलपरी लोहेकी । गरम कराय छुवावौ मेझुकी ॥
की कपासकी लकरी लीजै । तप्त कराय वाहि विधि दीजै ॥
सात बार तेहि देउ छुवाई । मेझुकी नीक होय सुख पाई ॥
बुधजन दागैको नहिं भाखै । गिरा बहुत कोमलता राखै ॥
दागेते जो वृष मरिजाई । हत्या दोष मनुज सो पाई ॥
और दाग यकठौर विचारी । अजमावा है बहु विधि भारी ॥
तीन दाग घूटीके ऊपर । की ठाढेकी बेडे तेहिपर ॥
हलुक हलुक सो देउ दगाई । नीक होय मेझुकी सुख पाई ॥

एकदाग बांयेपग पिछले । जौन सकलको है यहखुले ॥
भितरी दिशि बदखुरी समूहै । दागे नीक होय रुज बहै ॥

बहतारोगनाम लक्षण

चौ० सूजै जीभ अधिक मुखमाही । बहै लार दुख बहुत देखाही ॥
अरु नेत्रनते पानी बहै । बहता रोग ताहिते कहै ॥
ताहि उपाय यतनते करै । जासों वृष मुख दूषण है ॥
दोहा—जीभके नीचे चारि रंग, चारौ फस्त खोलाउ ॥
नीक होय वृष महिष सो, याको यहै उपाउ ॥

सूतबामरोगका यही रोगकी तरह

कीबका नाम सूत खोलना

दोहा-महिषी महिषा गो वृषभ, सूतरोग मुखमाहिं ।

छिद्र होयँ तारू विषे, महाकठिन कहि ताहि ॥

लक्षण परखनेका

चौ०-आँसूबहैभूँखनहिंलागै । दिनदिनदूबरसबसुखभागै
जलके पीने जीव डेराई । छिद्रन परे पीर सरसाई
वाहीपीर नेत्रजलढरकै । मारे डरकै जलनहिंचभकै
मुख पसारिकैदेखौजाई । विवरसाफआँखिनदेखराई

दवा

सिरकीसींकनींबकेसिकवा । इन्हैलायतेहिछिद्र घुसेरवा
अधिक रहै सो डारू तोराई छिद्र बराबरिसो रखवाई
ऐसी जतन सींक डरवावै । आँखिनलगे जो नहिं पहुँचावै
जो आँखिनढिग सिरकी जाई । तो अंधा वृष होइ बनाई
जेहि माफिकको छेद देखावै । तेहिसमान सिरकीचलवावै
जसजस सींकविवरमें गलिहै । तसतसजखमनीकहैजैहै ॥
यहि सम औ उपाय न जानौ । नीकहोयसंशयनहिंमानौ

अथ आरजामुखबन्द

दोहा-दोनो दिशि मुखपर लखौ, कल्ला बहुत कठोर ।

रदनपैठ मालुम परै, गिरै फेन अति जोर ॥

चौ०-मुखनहिखोलैनाकछुखाई । पटकापेटमनहुँ दिखराई

सर्षपतेल नारिभरिप्यावै । छल्लनपर तेहि तप्त मलावै

रंडपात गोगोबर लावै । पीसि महीन गरम करवावै॥
कछन ऊपर लेप कराई । नीक होय वृष बहु सुखपाई॥

अन्य

जो नहिरुज नीको देखरावै । मृजन कछनकी दगवावै॥
जौन सकल हम लिखी बनाई । लोहतप्तकरि तैल दगाई
अथ वृषभके सुखमें कांटे होजाते हैं

दूसर नाम अवाल

दोहा—वृष मुख भीतर रोग है नाम अवाल बखानि ।
दूसर कांटा कहत हैं, गलफरमें पहिचानि ॥
चौ० चिपचिपकरि चारानहिं खाई । दिनदिन पशू जाइ दुब-
राई । गलफरमें कांटा जो होई । बढै बहुत पशुको दुख देई ॥
रविदिन भौमवार जब आवै । तब चमारते कांट कटावै
हरदी नमक पीसि चुपराई । तीनि दिनालग यहै खवाई

अथ घुमनारोग लक्षण व दवा

दोहा—घुमनारुज घूमै वृषभ, घूमि घूमि रहि जाय ।
चारा पानी परिहरै, कछु दिनमें मरि जाय ॥
चौ० गोपय सेर सवाइ कलावै । हरदी एक छटांक पिसावै
साँझ भोर दिन सात पियाई । एक खुराक लिखत हौं भाई॥

अन्य

कौनौ जगह देह जो सूजै । जानेउ रुज ताही मग भूजै॥
देउ दागि तेहि ठौर तताई । राम कृपा तनु नीक देखाई॥

अन्य

धुमनारोगझारनेका मन्त्र-सावर

समुद्रकिनारे अखैवर कविरवा तेहिके तरे बड़ीबड़ा,
बड़ीबड़ा का करै । छत्तीस रोग हरै ॥ कौन कौन रोग ।
धुमनहाई व्याधि ॥ छलक हाई व्याधि । काटि कूटि
समुद्रतीर बहावो ॥ समुद्रतीर हंसा । हंसा का करै ॥
डंक पसारै विष झरै । निरमंगा चंगा करै खादाय ॥
आनि केहि कै छत्तीस कोटि देवता की आनि केहिके ॥
छत्तिस कोटि ऋषिया । वाचा उलटै भय नेका खप्पर ॥
खाय ॥ वाचा उलटै बियानि मेहरिया का खप्पर खाय ॥
वाचा उलटै धोबी के नांद चमार के कूंडा नहाय ॥
गुरुगोविन्द गुरु होइ । गुरुमार हत्या ॥ जो बगल
मार है । तो फुरोवाचा ॥ आदेश गुरुकी ।

विधि

चौ० एक हाथमें जलको भरिके । इकइसबेर मंत्र पढ़िफूँके ॥
वहै नीर वृष छिरकनकीजे । बाकी रहै पियनको दीजे ॥
सांझ भोर दिनतीन प्रमाना । और दवाको करो विधाना ॥

उदरफूलेके लक्षण वा दवा

दोहा-फूले उदर जो वृष महिष, पांच विधिहिते जान ।
ताके लक्षण कहत हौं, भिन्न भिन्न पहिचान ॥

चौ० शरदकाल जाड़नमें जानो। जादामेहनति परे बखानो
 धूपकाल गरमिनमें कहिये । दौरे बहुत सो गरमी लहिये ।
 तीसरि विधि बदहजमी होई। चौथे पागुरि मूलते सोई ॥
 पंचमविधि यह रोग बखानो। हवा बंद तेहि उदर फुलानो ॥

दवा

शरदी बदहजमीते फूलै। ताकी औषधिकरौ उतहिलै ॥
 कुटकी लहसुनकारी जीरी। पिण्ड बनाय देउ मुखधारी ॥
 पागुरि भूले जो वृष फूलै। नींबलगाम देउ मुख खोलै ॥
 वायु बंद फूलो देखरावै। ताकी दवा जो यह मन भावै ॥
 हुक्कनको मँगवाओ पानी। तामें डारू तमाखू थुकनी ॥
 मलिकै छानि नीर सो लीजै। नारि भराय वृषभ मुख दीजै ॥
 गरमिनमें दौराये फूले। ताकी दवा करे मति भूले ॥
 हरियरि मेंह दीपात उस्यावै। वहै नीर वृषके मुख नावै ॥
 जो गरमीते उदर फुलाई। ताकी दवा सुनो मनलाई ॥
 जीरा श्वेत सौंफ मँगवाई। धनिया मलै ताहि पिसवाई ॥
 जौ आटा सँग खानको दीजै। पटकै वृषभ उदर जस लीजै ॥

कटकवायुके लक्षण

दोहा-कटक वायु लक्षण सुनो, फूलि पेट बहु जाय ।

हाथ पांव रगरै धरणि, वाकी दवा कराय ॥

चौ०-दूसरनाम कुलिज कहावै। हवा बंद तेहिते दुख पावै ॥

इन्द्रायन फल डेढ़ छटांका। ताहि कुचिलि जलमें करुपाका
 जब सेराय मलिछानि पियावै। फूलौ उदर नीक होइ जावै

गुदामें बाती चलानेकी विधि

चौ०-इंद्रायनफल गूद मँगावै। साबुनसमजलमें पिसवावै।
कपराचुपरि बाति बनवाई। गुदा मध्य तेहि देउ दबाई ॥

अन्य

रैंडीतेल पाव इक लावै। एक सेर गो दूध मिलावै ॥
गरम करायके देउ पियाई। वायुबंद खुलिहै सुखपाई ॥

अन्य

घृत अरु दूध गायको लावै। गरम कराय ताहि मुखनावै ॥

अन्य

खारीनमक छटाँक पिसाई। एक पाव गुड ताहि मिलाई ॥
जलमें औटि वृषभको दीजै। पटकै उदरनीक तेहि लीजै ॥

अन्य

लहसुन काली मिरच पिलाई। एक पाव जलमें पिसवाई ॥
चनाके आटामें सनवाई। पिंड बनाय के देउ खवाई ॥

सब तरहके पेटफूलेकी दवा

दोहा-फूलै वृषको उदर जो, काहू विधि पहिचानि।
ताकी दवा कराउ बहु, जासों होय न हानि ॥

चौ०-चारापागुरि नहिं वृषकरै। बहुतै दुखधीरजनहिं धरै ॥
रंडके घमिराके लै फूला। सर्षपतैल पाव इकतौला ॥
फूल पीसि तेलौ मिलवाई। नारि भराई वृषभ मुखनावै ॥

अरुण वर्णके चींटा होई। माटी खोदि जमांकर सोई ॥
 तेहि माटीको लेउ मैगाई। आध पाव तेहि लेतौलाई ॥
 पानी घोरि पकाय पियावै। जलदी वायु खुलै सुखपावै ॥

अन्य

अर्कफूल तोला दुइ लावै। गीले सूखे जो कछु पावै ॥
 फूल नहीं जो मिलै सुजाना। तो मुँह मूँदे पात विधाना ॥
 सर्षपतेल पावइक लीजै। फूल पीसि पानीसँग दीजै ॥
 तेल भराय नारिमें भाई। ऊपर फूल धराय पियाई ॥
 एक घरीमें नीक देखाई। वायु खुलै बहु सुख उपजाई ॥

अन्य

दोहा-दाना चारा खायकै, जो कोउ मेहनति लेई।
 तासों पागुरि बंद है, पेट फूलि है तेइ ॥

चौ०-सर्षपतेल पावइक लावै। खारीनमक छटाक मिलावै
 नारिभरायके देउ पियाई। फूलाउदरनीक है जाई ॥

अन्य

फूलै उदर बहुत दौराये। ताकी दवा करौ मन लाये ॥
 सर्षपतेल नाकमे प्यावै। तुरत नीक होवै सुख पावै ॥

पेट फूले तो मन्त्र साबर झारनेका

दोहा-गंग यमुन के बीचमें चर इक फुलवा गाय।

चवाचढिइहनुमन्तपुकारै, यहफुलवा झरि जाय ॥

दोहाई गौरा पार्वती की, दोहाई महादेवकी फुरो

मन्त्र ईश्वरोवाच ।

मन्त्रविधि

दोहा-गाँडरको खरू लीजिये, कितौ पतावरि होय ।

तासे झारै मन्त्र पढ़ि, वृष फूले तेहि होय ॥

अन्यदवा-फूले वृषभकी

चौ०-धायफलगाँजा पिसवाई, दुधियाकत्थादेउमिलाई।

डेढपाव तीनों सम करिये, आधसेर गुलकंदै धरिये ॥

पीसिकूटिबरतनधरवावै, आधपाउ नित प्रात खवावै ।

अन्य

अड़ अँजीरकि बकली लावै। हरियर मेहँदीपात मिलावै।

श्याम मिर्च समलेउ पिसाई। रससिरकामें उदर लिपाई॥

अन्य

आकस्मात पेट जो फूलै । ताकी दवा करौ मति भूलै

सर्षप एक छटाँग मँगाई । दोनों श्रवणमें भरवाई ॥

फिर हुक्काको पानी भरिये । पटकै पेट पेशाब खुलैये॥

अथ-शूलरोगलक्षण व दवा

दोहा-शूल रोग लक्षण कहौं, जेहिते रूज पहिचानि ।

दवा किये ते पशुनकी, होत दुःखकी हानि ॥

होत शूल बहुदुःख करै, इत उत करवट लेत ।

गोबर में दुर्गंध बहु, चारा पर नहिं हेत ॥

चौ०-बार बार उठिलौटै देखै। ताके उदर शूल अवरैखै

दवा-कज्राकी गूदी पिसवावै। मन्दआँच सुखीकलहरावै

जीरा श्याम श्वेत दोडलीजै। सोचरनोन सबै समकीजै॥

कूटि छानिकै पशुकहँ देई । शूलजनित सब दुख हरलेई ॥

अन्य

दोहा- कञ्जा केरे गूद सम, सूखि तमाखू डारि ।
आटामें जो दीजिये, उदरशूल देइ टारि ॥

अन्य

दोहा-सोंठि टकाभरि आनिकै, दोनों गुड़ में सानि ।
हींग चारि मासे मिले, गोली करु सुखदानि ॥
चौ०-दिनमहँ कहउ बेर जो देई । उदरशूलको डारै खोई ॥
पीने केरि तमाकू लाई । गुड पुरानदै लेउ चुराई ॥
नारि भराय वृषभ को दीजै । उदरशूल वाकी हरि लीजै
हर किस्मकी शूल वा बदहजमीकी दवा

चौ-इन्द्रायनिकी जड को लीजै । तामहँ अजवाइन जिजड़ दीजै
वायभिरंग बीज ढाँखेके । भटकटाय अरु सैंधौ लैके
यह सब टकाटका परमाना । आधपाव गुड लेउ पुराना ॥
निर्गुंडी दुइ तोला लावै । हरदी आध छटाँक मिलावै ॥
अजवायनि अरु हर मँगवाई । तोला पाँच-पाँच तौलाई ॥
तोला एक हींग भुनवाई । पीसि कूटिकै लेउ छनाई ॥
दोहा-शाम सबेरे तीन, पशुहि खवावै जोय ।
बदहजमी अरु शूलको, देवै जरते खोय ॥

अन्य

दोहा-लाय तमाकू पिवनकी, हुक्काके जल घोरि ।
देय नारिभरि पशुनको शूलरोग देइ तोरि ॥

अन्य

एरंडतेल पियावई गरमें जलमों डारि ।
पेटकि सूलन कब्जियत, शूलहि देवै टारि ॥
गऊदूधमें घृत मिलै गुन गुन देव पियाय ।
तेहि पशुकेरे उदरकी, शूल समूल नशाय ॥
पीपरिकेरी छालले, आधपाव परमान ।
बकलि यरंडामूलकी, एक छटांक सो आन ॥

चौ०-भटकटाइलीजैसहमूला । तितिलीकीपातीइकतोला
दोहा-पानीमें औटायकै, गुन गुन पशुको देय ।
शूल जाय सब दुख मिटै, छिनमें नीको लेय ॥
अजवायनि कालीमिरच, टका टका भरिलेय ॥
इकछटांक गुड डारिकै, तुरतहि पशुको देय ॥
चौ०-शूलरोगकीनाशनहारी । पशुनयोग्यबहुतै हितकारी
शूल जो बहुत दिन होय तिससे पेटमें
सूजन आवै तेहिकी दवा

दोहा-बहुत दिवसकी शूलकी, दवाकरौ यह सोय ।
तो सूजन अरुशूलकी, दवाकरौ यह सोय ॥
चौ०-केवैया समूल लै आवै । आधपावकरिताहितुलावै
लहसुन हर लेउ मँगवाई । तोलातीनितीनितौलाई ॥
हरदी एक छटांक प्रमाना । आधपावगुड लेइ पुराना ॥
दोहा-पीसि सकल गुड सानिकै, पशु कहँ देइ खवाय ।
उदरशोथ अरु शूलकहँ, छिनमें देइ बहाय ॥

ताजो महिषीकेर लै, गोबर गरम कराय ।
लेप कियेते उदरकी, सूजन देइ मिटाय ॥

अन्य

चौ०-पातसँभारूकेरमँगई। देतबफारादुखमिटिजाई ।

अथ करसारोगलक्षण

दोहा-करसारुज पहिचानियो महिषवृषभके होय ।

ताके अब लक्षण कहौं, गुण निदानयुत सोय ॥

चौ०फूलेउदरवृषभकोभाई।छुलकिछुलकिमूतैदुखपाई॥

गोलीलेंडी बहुत कठोरा । थोरा हगे चिन्हयहि केरा ॥

मूतै हगै न दिन दुइ चारी । फूला रहै न करै अहारी ॥

ताहिजानियो करसामारा।दवा देउ तेहि करो विचारा

दीन्हे दवा पेशाब लगाई।गोबरके रस समान हगाई ॥

दवा

आँबकिफाँकीसूखिमँगवै।पाव एक ताको तौलावै ॥

माटीके बरतन उसनावै । वाही जलमें बहुत मिलावै ॥

फाँकी मले खोज जो निकरै । ताकोफेंकिदेउ जलधारै॥

आधसेर घृत देउ मिलाई । नारि भराइकै देउ पिलाई ॥

याहू किये न नीको देखै । और दवा तेहि देउ विशेखै॥

अन्य

हरदी सोंठि लेउ मँगवाई । आधपाव दोनों पिसवाई ॥

दूध सेर दुइमें पकवावै । नारि भराय वृषभमुख नावै ॥

अन्य

पीपरपर नीबीके पाता । आधसेर लीजो तेहि प्राता ॥
एक छटांकपुरानि मिठाई।पीसि नारिभरि देउ पियाई॥

अन्य

हरदी साँभरि नमक मँगवै।श्याममिरच तामें मिलवावै॥
तीनि छटांक दवासम लीजै।बहुत मंहीन पीसि करि दीजै
सर्षपतेल पाव इक लावै सकल मिलाय नारिभरि प्यावै
एकै दिनकी यह परिमाना।पाँच सात दिन करौ विधाना
करसारोग नीक ह्वैजाई।दवाप्रमाणिक वृष रूज जाई ॥

गरदनकी नस वा पट्टा चढि जाय ताके

लक्षण व दवा

दोहा—गर्दनको पट्टा चढै, अरु नस चढै हमेश ।
ऐसी वैसी नहिं लखै, दवा करौ यह वेश ।
चौ० अकडाठाढरहैनहिं डोलै।चाराको मुखतनकनखोलै॥
बाँबीनई दिमककी माटी।भेंडकिलेंडी लै समबाँटी
गऊ कलोरि नईकोमूता।मिलै पकाय मलाउ बहुता॥

अन्य

गेरू साबुन समकरि लीजै।सर्षपतेल पकवन कीजै ॥
चारि पाँचदिन मालिस करै।पट्टा नशै खुलै दुखहरै॥

अथ नमका रोग लक्षण

दोहा—नमका रूजको नाम है, दूसर चिकना जान ।
याकै लक्षण परखिकै, कीजो दवा विधान ॥

(१०४)

वृषकल्पद्रुम

चौ-घींचवृषभकीबहुतनिजाई।कौनेउदिशिनहिंसुकैसुकाई
अतिकठोर है पशु दुख पावै।याकीदवा करो मन भावै॥

दोहा-पूँछके नीचे गुदाढिग, तेहि रगको पहिचान ।

बाकी फस्त खोलाइके, नीक होय जियजान ॥

चौ०-तेहि पाछे यह दवा करावै।सर्षपतेलनाकमगप्यावै
अन्य

गुडमीठा इकसेरखवावै।नितप्रति आठ रोज लग पावै॥

“इस रोगमें दागदेना वाजिब है दागनेकी विधि”

दोहा-गर्दनमें इक दीजिये, गोल गरेरि दगाय ।

हँसुली सूताकी तरह, जनु दीन्हो पहिराय ॥

रीर गूरियाके निकट, अंगुल चारि प्रमान ।

काँधेते अरु पूँछलग, दागौ ताहिसुजान ॥

चौ०-दोनोंतरफदेउडुइलीका।तेहिपाछेकरुऔरतरीका॥

यहि बेंडी डुइलीकें कही।डुइठाढी करुतामें सही॥

दागकी शकल



दुम उठाय इक दाग दिवावै।नीचेतरफ विधान करावै॥

पीछे सर्षपतेल पियाई । गरदनमें याही मलवाई ॥

अन्य

रीरके ऊपर फस्त खोलावै।ता पीछे फिरि तेल पियावै॥

अर्धगरोग-लकवाके माफिक होता है

दोहा-भाषों रूज अर्धगको, लक्षण कहौं निदानि ।

है असाध्य तेहि जानियो, पशुको करिहै हानि॥

चौ०-वातव्याधि जानो तेहि भाई।लकवाके माफिक ठहराई॥ दोनों कान सीध ह्वे जावै । लकरीसम कठोर देखरावै ॥ सकल शरीर जूड ह्वे जाई । चारों चरण लच्यो नहिं जाई॥ बैठत उठत न तेहि बनिआवै । याकी दवा करौ मनभावै॥ काला विषधर एक मँगाई। माटीके घटमें धरवाई ॥ तामें चना देउ भरवाई। सेर अढ़ै यक करि तौलाई ॥ पक्की तौल तोलि तेहि लीजै । गोबर घूरमध्य धरि दीजै ॥ एक वर्षभरि गाडि रखावै । फेरि खोदि लहिला निकरावै॥ सो अपने घरमें धरि राखै। जब रूज होय एक नित चाखै ॥ कोइ कोइ दुइ दुइ चना खवावै। जानिपरै तो यहै करावै॥ वातव्याधि सब-पर यह दीजै। चना खवाय बहुत यशलीजै॥ पशुके स्वामिनको यह चाहिये । चना बनाय घाममें धरियो॥ जबतक रोग नीक नहिं होई । तबतक चना खवाओ सोई ॥

अन्य

इस रोगमें दाग देनेसे जल्दी अच्छा होता है-

दागनेकी विधि



चौ०-बहुत दाग दीज्यो तनुमाहीं । जौन शकलको लिखि यहिमाहीं ॥ चारों पुट्टनपर दगवावै । दुइ दुइ दाग जरूर देवावै ॥ डाढिके नीचे दोनों ओरा । एक एक रुजरुजको झारा ॥ दुवो कनपटिनपर दुइ दीजै । दुइ चुतरिनपर दुये करीजै ॥ या विधि वृषभ देइ दगवाई । सो अर्धगरोग बहिजाई ॥

सीकुररोगका लक्षण व दवा

दोहा-सीकुररुजको नाम कहि, सिकुरा रहे बनाय ।

चारों चरणन वरम कछु, चलत बहुत लंगराय ॥

चौ०-चारा कम खावै वृष सोई । कछु दिनमें दूबर बहु होई ॥

वातरोग याको पहिचानौ । ताकी दवा सुनौ बुधिवानौ ॥

वरजतियाइक सर्प कहावै । वाकी मांजरि पीसि खवावै ॥

इक तोलेते दुइलग दीजै । सिकुरारोग नीक पुनि लीजै ॥

दोहा-पशुके रुजको नाम यक, है निर्घट सुजान ।

गो वृषके गलकंठमें, सूजन दुहुँदिशि जान ॥

चौ०-अँवराकेसम गोलदेखावै । दुख देवे सुख दूरिकरावै ॥

जो यह रोग हेमंतमें आवै । गोबर मूत्र बन्द होइ जावै ॥

धूपकाल गरमीमें होवै । चारा पानी सब तजि देवै ॥

दवा

बेनवर कुचिलि पोटरी कीजै । तासों सेंकि बहुत विधि दीजै
बेनवर मानुष मूत्र मिलाई । पीसि महीन गरम करवाई ॥
पांच सात दिन लेप करावै । नीक होय वृष बहु सुख पावै ॥

अन्य मसाला

गूद लेउ इन्द्रायन फलका । पीपरि मिर्च लोन सेंधौका ॥
अदरख मिलै पीसि समलीजै । नित प्रतिगेर ह दिन लौं दीजै ॥
बैंगलां पान देउ मेलवाई । बहुत फायदा करि है भाई ॥

हन्नवायु

दोहा- हन्नवायुरज कठिन है, पशुको काल समान ।

एक पहरमें जानियो, मृत्यु निकट नियरान ॥

चौ०- घूमि घूमि पशु गिरि गिरि परै । देही कांषि
कांषि पशु धरै ॥ कछुक देरमें सो गिरि जाई । चारों
चरण देइ फैलाई । हन्नवायुके लक्षण भाखैं । जो निदान
मतमें गुणि राखैं ॥

दवा

इन्द्रायनके फल दुइ लीजै । पीसि छानि मुखमें भरि दीजै ॥
व्याघ्रामिष जो देउ खवाई । हन्नवायु तुरतै खुलि जाई ॥
मृगाशृङ्गको रगरि पियावै । की तेहि लेंडी पीसि खवाई ॥
खुरासानि अजवाइन लीजै । दुइ तोला तेहि पीस धरीजै ॥

बारहसिंगा रगरि मिलावै । तोला एक प्रमाण करावै ॥
 हन्नाकी लेंडी मँगवाई । एक छटांग पीसि मिलवाई ॥
 अजयादूध सेर अध लावै । तामें औषध सकल मिलावै ॥
 अग्निपकाय वृषभको दीजै । हन्नवायुको नाशकरीजै ॥
 लंबग्रीवकी अस्थि घिसाई । एक छटांक वृषभ सोखाई ॥

टनकवायुके लक्षण व दवा

सोरठा-दवा किये खुलि जाय, ताकी यत्न कराइये ॥

पांड टनिकि लँगराय, टनकवायु ताकौ कहै ॥

चौ०-एकै चरण राहमें घिसिलै । सूध चलै तबहीं न सपिघलै ॥

करियारीजड़ खोदि मँगवावै ॥ दुइ तोलानित प्रात खवावै ॥

चनाके आटा मध्य सनाई । आठ रोज लगदीज्यो भाई ॥

मुरगीके अंडा मँगवावै । सर्पतेल मिलै लिपवावै ॥

मालिस करै टनकन सपिघलै । गेरहें दिनयाही रूज सकिलै ॥

पक्षी एक टिटिहिरी कहिये । ताके अंडार विदिन लहिये ॥

यवपिसानसँग वृषको दीजै । टनकवायुको नाशकरीजै ॥

वरजतिया इक सर्प कहावै । मूँड पूँछ तेहि काटि बहावै ॥

ता पीछे विधि और कराई । माटी चिकनी ताल किलाई ॥

ताकी ढिमकी कूटि करावै । माटीको इक घट मँगवावै ॥

तामें ढिमकी अर्द्ध भराई । आधा घट खाली रहि जाई ॥

तामें सर्प देउ धरवाई । फिरि माटी ऊपर भरवाई ॥

मोहरा बहुत बन्द सो करिये । एक मास लगता को धरिये ॥

फिरि सरपैको ढेउ फेंकाई । माटी कूटि पीसि छनवाई ॥

एक छटांक प्रमाण खवावै । बजराके आटा सनवावै ॥
 पांच सात दिन पशुको दीजै । टनकवायु ताकी हरिलीजै ॥
 लहसुन तोला चारि पिसाई । पारा षटमासे मिलवाई ॥
 चनाके आटा पिंड बनाई । यकइस दिन याही विधि पाई ॥
 हींग भूँजि तोला भरि लाई । चनाके आटा पीसि खवाई ॥
 यकइस दिनकी है यह रीती । और विधान सुनौ करि प्रीती
 दोनों कूलनपर दगवावै । जौन सकलको लिखा बनावै ॥



अथ वैषलावायुलक्षण व दवा

सोरठा—पाछिल धर बेकाम, उठै न पावै पशु कछू ॥
 रोग वैषला जान, दवा करो ततकालही ॥
 चौ०—अकस्मातरुज भेजाकरै । ताकी दवा करौ जो सपरै ॥
 मुरगी अण्डा सात मँगावै । बरजतियाकी मांजरि लावै ॥
 एक छटांक ताहि पिसवाई । चनाके आटा सानि खवाई ॥
 सर्षपतेल पाव इक लावै । मुरगी अण्डा मिलै घिपावै ॥
 तेहि पाछे यह देउ पियाई । नारि भराय वृषभ खनाई ॥
 बन्दमकान पवन नहिं लागै । तामें तोप करो दुख भागै ॥

(११०)

वृषकल्पद्रुम

जबहीं अङ्ग पसीना आवै। जलदीनीक होय सुखपावै॥

अन्य

कोमलशाक करौंदा लीजै। पात समेत काटि कुचिदीजै॥
बहुत नाहिं चींटी जो होई। तौ न मृत्तिका खोदिसो लेई॥
सेरसेर दोनों करवावै। जलमें चुरइ वृषभमुख नावै॥
बाकी रहै मलो जल अङ्गा। रोग वैषलाकी करि भंगा॥

सर्वरोगहरण उपाय

दोहा—लंबग्रीवको अस्थि जो, लाय धरो गृह कोय।
सकलव्याधि आवै नहीं, वृष पशुतनसुखहोय॥

अन्य

चौ०—श्वेतप्याजको लाय वरावै। दरवाजे ऊपर बँधवावै॥
कोई रोग न आवै ताकी दवा

चौ०—रविदिन खारीनमक खवावै। ता वृषको कोइ रोग न आवै

अन्य

सांभरिनमक टका भरि लीजै। पानी पकै प्रातनित दीजै॥
लेउ सोहागा खील कराई। पीसि छानि आटासनवाई॥
नित प्रति बारह मास खवावै। कोई रोग निकट नाहिं आवै
मनियां फूटैका रोग। दूसरा नाम रीवां पंचक

रीवांरुज इकनाम कहावै। त्वचा तैरे सो होते हैं।
कीरासूत्र ऐसे बहुपतरे। भीतर भीतर चलते हैं॥
जब कब छेद करैं ऊपरको। शोणित कछुक निकरते हैं।
केशवपरसाद बिचारिकहैं। वृष दिनदिन दूबर होते हैं॥१॥

दूसर नाम सुनौ यहि रुजको मनियाँफूटी कहते हैं ।
 चारा दाना कमी खात हैं दुखी बहुत पशु रहते हैं ॥
 याकी दवा प्याज बहुदीजै चारिदाँय नित कहते हैं ।
 केशवपरसाद विचारि कहैं वृष दिनदिन दूबर होते हैं २
 एक मासभर ताहि खवाओ वार्हा विधि करदेते हैं ॥
 जब वह सकल वेधि त्वच जैहै मरे किर्म सुख होते हैं ॥
 दवा नीकि परमानिक जानौ बुद्धिवान सुनि तरते हैं ॥
 केशवपरसादविचारि कहैं वृष दिन दिन दूबर होते हैं ३
 रूप घटै कमतागति होवै और दवा लिखि देते हैं ॥
 भुजबल चिरिया एक कहावै पंख सहित धर देते हैं ॥
 यवपिसानमें पिण्ड बनावै मुख पसारि भरि देते हैं ॥
 केशवपरसाद विचारि कहैं वृष दिनदिन दूबर होते हैं ४
 वर्षाऋतुमें दूढे मिलि हैं लैके वृषको देते हैं ॥
 नाम एक सीताकै ँडुरी किरवा वन वन होते हैं ॥
 की करिया झींगुरै खवावै भौमवारको कहते हैं ॥
 केशवपरसाद विचारि कहैं वृष दिनदिन दूबर होते हैं ५
 दोहा—करियासाँपकि केचुली, तोला भरि परमान ।
 गुडके साथ खवाइये, भौमवारको आन ॥
 जो कीरा यहि रोगको, देखनका मन होय ।
 जा छिन बूथीरुधिर चलि। चुटकीमें धरु सोय ॥
 चो०—बहुत जोरकर दाबो ताही। कीरनिकरै पकरोवाही।
 हौले हौले चुटकिन खैचै । कीरा एक हाथभरि ऐंचै ॥

(११२)

वृषकल्पद्रुम

निकर जाय जब कीरा तनते । सदा रहै वृष सुखसामनते
ओदीनाम रोग । बछियाबछरनके होता है

दोहा-गो महिषिनके शिशुनको, ओदीरुज है जाय ।
रोम गिरै लालो लखै, ताको करौ उपाय ॥
लीजै पात भठारिकै, कूटि पीसि मलवाय ।
की पानीमें उसनिकै, बच्चनको नहवाय ॥

अन्य टटका

मंगर की रविवारको, माटी चिकनी लेय ।
कारी कन्या विप्रकी, पोति सकलतनु देय ॥
रोगका नाम तूल । बच्चनके है जाता है ।

दोहा-तूलनाम रुजको कहौं, महा कठिन दुख देय ।
गो महिषिनके शिशुनको, पकरति देर न लेय ॥
चौ०-धरणि गिरै सोबहुमुरझाई । चारोंचरण देइ फैलाई ॥
ठाढ किये पगुभुईं नहिं धरै । डेढ पहरमें सो वह मरै ॥
सर्षपतेलछटांक मँगाई । नारिभरायकै देय पियाई ॥

अन्य दागनेकी विधि

नथुना ऊपर जहँ चिकनाई । तहँ दागेते नीक देखाई ॥

नेत्रपिरानेके लक्षण व दवा

दोहा-आँखियनमें सुरखी रहै, दिनको आंसु बहाय ।
रातिको कीचर आवई, जानो आँखि पिराय ॥

चौ०-शूकरविष्टा लेउ मँगाई।टकाएकभरिताहिखवाई॥

अन्य

दोहा-भुजयलपक्षी आनिकै पंख उखारु सुजान ।
धरु पिसानके मध्यमें, पशुको देउ विधान ॥

अन्य

चौ०-रविकेदिनबढ़ईबोलवावै।बसुलाऔररुखानीलावै।
इकइकचोटखुरनपरमारै।सुरदानखपरसोकरिधारै॥

अन्य

दोहा-रजस्वलास्त्री वसन, रुधिर भीज ढूँढ़वाय ।
थोरा पशू खवाइये, रवि कुज वासर लाय ॥

आंखिनमें ढरका वहै ताकी दवा

दोहा-आंसू आवै वृषभके, ढरका बहै निदान ।
ताकी दवा कराइये, दृगशीतल सो जान ॥

चौ०-सींगनबीचपछरीजानौ।खालीगडहासोपहिचानौ॥
तामेंतेलडारु रेंडीको।पांचसातदिनमेंलेनीको ॥

आंखिनकी फूली मांडाठेरकी दवा

दोहा-सकल चौपया पशु जवन, आंखिनरोगबखान ।
फूली मांडाकी दवा, अजमाई यह जान ॥

चौ०-अर्कदूध धेला भरि लीजै।सातबुंदसीरातेहिदीजै॥
रविके दिन यह करौ दवाई।चारों तरफआंखिकेभाई॥
सात दफा तेहि देहु गरेरी।बार बार अँगुरी लै बोरी॥

दूजी लीक होना नहिं पावै। ऐसी तरह दवा लगवावै ॥
खालउधिलिवहिठौरकिजैहै। फूलीनीकिसकलविधिहैहै ॥

अन्य

हरियरिचुरियाकाचकिलावै। डारिखरिलमेंखूबपिसावै ॥
शिरसपातकोरेसमिलवाई। तेहिके साथखरल करवाई ॥
सुरमाके सम है जब जावै। तबहीवाको सुख धरावै ॥
चुटकीभरिसोलेयनिकारी। आंखिनमें तेहिभरे विचारी ॥
सातरोज लग दवा करावै। फूली ठेठर नीक देखावै ॥

अथ रतौंधीकी दवा

दोहा—दिनका सुझै वृषभको, निशिमें आंधर होय ।
ताके अंजन लेषु दृग, जाइ रतौंधी खोय ॥
चौ०—मछरीकापितामधुलीजै। दोनोंसमकरिवेपिधरीजै ॥
यह अंजन देउ लगाई। पांच रोजमें नीक देखाई ॥

अन्य

हुकनको ले कीट मँगाई। पानीमें तेहि पीसि लगाई ॥

अन्य

गुंजादलको पीसि निचोवै। ताको सुरस नेत्रलगवावै ॥

जारामांडाफूलीठेठरके लक्षण वा दवा

दोहा—जारामांडा वृषदृगन, बहुत महीन देखाय ॥

फूली ठेठर मोट है, स्याहीपर लिखजाय ॥

चौ०—गजको लेउ नखूनमँगाई। पानीमें घसिदृग लगाई ॥

एकइसरोजकी है परमाना। नेत्ररोग ठेठर मिटि जाना ॥

दोहा-मामीरा अत्र तृतिया, सेंदुर, समकरि लेउ ।
निम्बु कागदीके रसहि, तामें खलकरि देउ ॥
चारि पहर तेहि रगरिकै, सुरमा लेउ बनाय ।
अँगुरीते आँखिन भरौं, सोरहदिन लग जाय ॥

अन्य चौपाई

चीनी बर्तनको ले टुकरा । अग्नि जराय ताहि लै धरा ॥
अरुण फिटकरी खील कराई । दोनों समकरि पीसिलगाई ॥

अन्य

गजनख सिंघनी बीज मँगाई । समकरि निम्बके रसै घोटवाई ॥
आठरोज दुँहु बेर लगावै । फूलौ ठेठर दोउ मिटजावै ॥

अन्य

मानुषशीशकी अस्थि मँगाई । बहुत पुरान लेइ डुँढ़वाई ॥
घिसि पानीमें ताहि लगावै । नेत्ररोगकी जर मिटजावै ॥

अन्य

सेंदुरुफ मिसिरी लेउ मँगाई । लाल फटकरी खील कराई ॥
औरखपरिया सब समडारी । पीसि खरल सुरमा करि धारी
जो नहिँ कहूँ खपरिया पावै । लँग बसरी तेहि योज मिलावै

अन्य

सेन्दुरुफ मिसिसमकारी दीजै । निंबूरससे खरल करीजै ॥
मुर्गीके परभे लगवावै । यह सुरमा रुज खोय बहावै ॥

अन्य

गेरू अरु सोरा पिसवावै । दोनों नेत्रनमें फुकवावै ॥

अन्य

आँखिनके जारा मिटानेकी गोली

सुरमा वोही लेउ मैगाई । और चाकसू रस उतलाई॥
 सोराकलमी गजको दन्ता । नीम्बूरस खरल करंता ॥
 चनाप्रमाण बटी बनवाई । घामें सुखै धरौ घर भाई ॥
 पानीमें घसि अंजन करिये । जारा कटै नेत्रदुख हरिये॥

अन्य

जारा मांडा फूली अच्छाकरनेकी दवा

श्यामकाँचकी चुरिया लावै।हरदीसाँभरिनमक मिलावै॥
 सम करि मिही लेउ पिसवाई।माँडा फूलीपर फुकवाई॥

अन्य

गोलिनदार कटैया लावै । ताके फलको रस निकरावै॥
 नेत्रनमें तेहि देउ चुवाई । नेत्रनका ठेठर मिटि जाई ॥
 प्रथम नेत्रमें वरमदेखावै।दवा नीकिबहुशकनहीं आवै॥
 फिर पीछेको नीक देखावै।अरुण वरण भीतर है जावै॥

रुजिनावृषभलक्षण वा दवा

दोहा-रोगजुवां रुजी कहौं, देहीमें है जाय ।

तासों पशु दूबर रहै, चारा थोरा खाय ॥

वृषभ रुजीला जानिये, रोम गिरे सब अंग ।

जहँतहँ खाल उधीलई, रूप होय बहु भंग ॥

चौ०-रुजीनामकिर्म इक होई।पशुकेतनु प्रगटै बहुसोई॥

खाल रोम सगरे खाई। दिन दिन दूबर है दुख पाई ॥

दवा

विनुवाँ कंडा भस्म करावै। नीर मिलाय अंग मलवावै ॥

अन्य

हरदी सर्षप तेल मिलाई। वाको लै तनमें चुपराई ॥

अन्य

बीज सरीफाके मँगवाई। की खिन्नीजल पीसि लगाई ॥

अन्य

तितिलीकी पाती पिसवावै। जलके साथ अंग चुपरावै ॥

अन्य

साँभरिनमक पिसावौ भाई। रसनामें दशदिन मिलवाई ॥

अन्य

आँबा भस्म कपर छनवावै। हुक्कापानी तेहि मिलवावै ।

सकल शरीर देहु मलवाई। कइउ रोजलग करौ उपाई ॥

अन्य

भुरजीभार करहुँवाँ लावै। गेरू सर्षपतेल मिलावै ।

देहीमें बहु मालिस करै। रूजी मरै रोगदुख हैर ॥

अन्य

नींबपात जलमें उसनावे। वासोमलि दशदिन अन्हवावै ॥

चपठी वा किलीननकी दवा

दोहा-चपठी और किलीन जो, वृषतनुमें है जाय।

ताकी दवा कराइये, किर्मरोग नशि जाय ॥

चौ० भुरकुडकीपातीमँगवावै। जलमें चुपरै वृषभ अन्हवावै।
लकरि भुरकुडकेरि मँगवाई। खूँटा गाडि वृषभ बँधवाई ॥

कमीलावृष लक्षण

दोहा-वृषभ कमीला जानिये, यहि परमेह सुनाम ।
दवा किये रूज जात है, तेहि मति राखौ धाम॥
झरा करै नरियाय बहु, दूबर रहै हमेश ।
कमताकत शेखी बडी, कछु तनु रहै कलेश ॥
“वृषभमहिषके झरीलारोगका लक्षण व दवा”

दोहा-वृषभ झरिला जानिये, जेहि नित झरै मनोज ।
दिन दिन दूबर होत है, तागति घटै सो रोज ॥

दवा

चौ० पीपरलाखकतीरालीजै। खदिरसफेदमिलै तेहि दीजै॥
दुइ दुइ तोला वजन करावै। जीरा श्वेत छटांक पिसावै॥
चावर साँठीके मँगवावै। आधसेर तेहि तौलि धरावै॥
गायके दूध पकायखधावै। प्रातकाल इकइस दिन पावै॥
झलबेरियाजड छोलिमँगवाई। सेंबरबबुरछाल मिलवाई॥
सुखै पीसि चूरण बनवावै। जो पिसानसँग पिंड खवावै॥

अन्य

दोहा-झलबेरिया अरु बबुरकी, जड़की छाल छोलाय।
दुइ दुइ तोला सब करौ, बबुरपात मिलवाय ॥
चौ०-केलाजड़तोला भरिलीजै। एकछटांक छोहाराकीजै॥
आधसेर गोदूध मँगवावै। सकल पीसि तेहि गुरै खवावै॥

सिंगरी बबुरकेरि मँगवाई । जामें बीज परे नहिं भाई॥
 चनाके आटामें तेहि दीजै । आध आधसेरै करि लीजै॥
 खदिर श्वेत केलाजड लीजै । और कतीराको तेहि दीजै॥
 तोला एक एक परमाना । यह आटा सँग देउ सुजाना॥
 सूरीबीज सौंफ सितजीरा । इक इक तोला ले सब धीरा॥
 यवआटामें पिंड बनवाई । सातरोजलग वृषहि खवाई॥
 श्वेत खैर अरु लेउ कतीरा । अँवरा मिलै करौ इक ठौरा॥
 इकइक तोलाकी परमाना । गेरह दिन लग यहै विधाना॥
 सांझ भिजैकै प्रात खवाई । रोग झरीका दूरि कराई॥
 बेरी अनार बबुरकी पाती । दुइ दुइ तोला करु यहि भांती॥
 फलबबुर दुइ तोला लीजै । पीसि महीन वृषभको दीजै॥

अंडकोश सूजै ताके लक्षण व दवा

दोहा—कटवा वधियाके किये, अंडकोश उसियायँ ।
 याकी चिन्ता मति करौ, जलदी नीक देखाय॥
 चौ०—दूसरिविधिवादीतेसूजै । तेहिकी दवा बहुत दिनकीजै॥
 तीसरिविधि गरमीते जानौ । ताकी दवा करी बुधवानौ॥
 यह रुज गरमीते कम होई । वादीते वृषको दुख देई ॥
 जो गरमीते वरम देखावै । सुलतानी माटी मँगवावै ॥
 शीतल पानीमें पिसवाई । अंडन ऊपर लेप कराई ॥

अन्य

जोसरदीवादी पहिचानौ । तेहिकी दवा बहुत विधि जानौ॥
 काराजीरी अरु अजवायन । गेरु सब सम नीर पिसायन॥

(१२०)

वृषकल्पद्रुम

गरमकराय लेप करि दीजै।सतयेदिन तेहिनीकौ लीजै॥

अन्य

पानीमें तिल श्याम पिसावै।अग्निपकाय लेप करवावै॥

अन्य

लेउ दालचीनी गुड भाई।पीसि गरम करि लेप कराई॥

अन्य बफारा

गोगोबर टाटक लै आवै।पानी मिलै पकाय लगावै॥

अन्य

योगिया रंडके पात मँगावै।जलमें चुरै बाफ सेंकवावै॥

बाही गरम नीरमें धोवै।पटकै अंड बहुत सुख होवै॥

अन्य

जलमें गेंदापात उस्यावै।अंडकोश पर बाफ देवावै॥

श्याम मिर्च इकतोला पीसै।लेपन किये सो रुजनहिंदीसै॥

अगर वह गेंदापात बँधावै।नीको होय बहुत सुख पावै॥

अन्य दवा खानेकी

सहिंजन छाली लेउ मँगाई।रंडाजडकी बकली लाई॥

गोल कटैया लेउ समूला।सुखैमहीन पीसि करि तोला॥

सोठिं लेउ मैदा पिसवाई।सकल दवाके सम मिलवाई॥

घृतमें एक छटांक मिलावै।प्रातहि दशदिन वृषहि खवावै॥

अन्य

जवाखार गेरु अरु पीपरी।सोठि मिलाय खरलमें रगरी॥

तोला तोला भरि सबलीजै।मदिरा आध पावमें दीजै॥

गजचरण रोग दूसरा नाम फीलपांव ।

दोहा—गजसमान जाके चरण, सूजे बहुत दिखाय ।

सो गजचरण बखानिये, रुजको नाम दिखाय ॥

चौ० दूसर नाम सुनो मनलाई फीलपांव सब कहैं सुनाई ॥

काहू के इक पांव में जानो । चारों में केहुरोग बखानो ॥

बदसूरति बहुतै है जावै । चलै न पावै पशुलंगरावै ॥

दवा

दोहा—लै पटोलजड निबदल, छोटी हरं मिलाय ।

पाव एक घृत में मिलै, पशुको देउ खवाय ॥

अजवाइन सैंधा नमक, वायभिरंग मिलाय ।

सोंठि पीपरी सम करौ, इक इक तोला लाय ॥

दोनों गुड में सानिके, पशुको देउ खवाय ।

फीलपांव रुजकी व्यथा, दुइ महिना में जाय ॥

अन्य चौपाई

लेउ फटकरिकाचि पिसाई । माखन में तेहि मिलै खवाई ॥

अन्य

जो इनते नहि नीक देखावै । तो नस्तर लै पीब बहावै ॥

जल में धोय साफ क्षत करिये । ता ऊपर यह दवा चुपरिये ॥

दोहा—एक छटांक खजूरिफल, जल में देउ भिजाय ।

दुइ दिन लग भीजै जबै, मलिकै लेउ छनाय ॥

सज्जी खार मँगाय अरु, जवाखारको लेउ ।

दुइ दुइ तोलाके वजन, ताही जल में देउ ॥

यह औषध गजचरणमें, एक मास लगवाय ।
नीक होय पशुसुख बढ़ै, करियो यही उपाय ॥

अन्य

गंधक तिलके तैलमें, पीसि लगावै कोय ।
फीलपांव गजचरण रुज, खोय बहावै सोय ॥
बहुत कठिन यह जानिये, नर पशुको दुख देव ।
दवा बहुत दिनलग करौ, नीक होय यश लेय ॥

जहरवातलक्षण व दवा

दोहा-जो जानौ पशुवृषभके, जहरवात रुज होय ॥
ताके लक्षण कहत हौं, जानि लेउ सब कोय ॥
चौ० गर्दनसूजिजायबहुभारी। चारापानीमुशकिलडारी॥
सूजन बहुतकठोर है जाई। सब पशुको दुखदेत सदाई॥

दवा

कुटकी औ बंडार मँगावै। तोला तोला करि पिसवावै॥
एक टकाभरि काराजीरी। आटा सानि जवनका धरी॥
एक दिनमें देउ खवाई। कैयो बेर ताहि मनलाई ॥

अन्य

कुटकी पिपरी बायविरंगी। चीत चिरैता ककराशृङ्गी॥
सोंठि मिर्च अरु जीरा श्वेता। काराजीरी समसब लेता॥
इक इकलेउ छटांक मँगाई। पीसि कूटि कपरा छनवाई॥
लहसुन अरु बंडार पिसाई। पाव पाव दुहुँ देउ मिलाई॥
यवके आटा मिलि सनवावै। एक छटांक प्रमाण बतावै॥

पाँचसातदिन पशुको दीजै। जहरवातरुजको हरि लीजै॥
मसला सब तरहके जहरवातपर खवानेके

लिये बहुत अच्छा है

दोहा—जहरवात सब तरहको, जो पशुके होजाय ।
ताको दवा खवाड यह, रोग दूरि बहिजाय ॥

चौ० चीतचिरैताककरा शृंगी। जवाखारकुटकी औभृङ्गी॥
पिपरी बडी पीपरामूरी । बीच पलासैं गूगुरु धरी ॥
सूख सँभारूपात मँगावै । और मरोरफली मिलवावै ॥
पाव पाव यहि दवा करीजै। आगेवजन और लिखिदीजै
सज्जी साँभरिनमक मँगावै। साधो खरिया कच्चा लावै ॥
काराजीरी घोडवच लीजै। जीरा श्वेत हींग मिलिदीजै॥
अजवायन देशी खुरसानी । राई अदरख फल इंद्रानी॥
नींब बकैना पात मँगावै। बेलगूद सब सुखे मिलावै ॥
मिरच इन्द्रयव देउ मिलाई । गुरच हर छोटी मँगवाई॥
आध आधसेरै सब लीजै। आगे और वजन सो कीजै॥
बडी हर हरदी बंडारा । कचरी सोंठि बहेरे डारा ॥
सँहिजनछालि पुदीना प्याजू। इकइकसेरदवा यह साजू
कोचिलातीनिछटाँकभिजावै। बकलाछीलताहिमिलवावै
लेउ सोहागा ओर फटकरी। दोनों खील पाव इक करी॥
सकलदवाकुटवाय छनावै। आधपाव मौताज खवावै॥
सर्व जहरवातनपर दीजै। नीक होय दुखको हरि लीजै॥

लेप अजमाया हुआ है

सुरस मकोइका काराजीरी। अरुवण्डार पीसि तेहि धरी॥
गुन गुन करि लेपै थोपवावै । ऊपर महुवापात बँधावै॥

दवा खानेकी

तूतकेरि पातीइक पाऊ । मिरचै एक छटांक मिलाऊ॥
कूटि पीसि आटा सनवावै। सोगलियाय वृषै मुख नावै॥
वह थोपै यह दवाखवाई। यहिते और अधिक नहि भाई॥

गरदब्बारोगलक्षण जहरवातकी तरह

दोहा-गरदब्बा रूज नाम है, महा कठिन गलशूल ॥

सूजन आवै हलकमें । जहँ रसनाको मूल ॥

चौ०-सुखमें हाथ डारिकै देखै। बहुत जूड ताको अवरैखै
लक्षण जहरवातके जानौ। है असाध्य याको पहिचानौ॥

प्रथम दान कछु वृषहित कीजो। तापीछे फिरि दवाकरीजो॥

मेथी आध पाव मँगाई । काँदा तिनि छटाँक मिलाई॥

पानीमें दोनों उसनावै। फिरि मलिकै तेहि छानि पियावै ॥

अन्य नासु

बेनवरधुवाँ नासुको दीजै । रोग गरदबा नीको लीजै॥

सर्षपतैल अफीम मिलाई । नासुवृषभको दीज्यो भाई॥

दवा खानेकी

दोहा-देउ मसाला वृषभको, ऋतु हेमन्त सो जानि ।

यासौ तनु मोटा रहै, महावृद्धि बलखानि ॥

करियारीजड लेउ मँगाई आधपाव पिसवाय खवाई॥
तेलियाकन्द दवाइक कहियो। जिमीकंद सम पातालहिये
तांको मूल लेउ खोदवाई। चनाके आटा पीसि खवाई॥
ग्राहशीशकी अस्थि मँगावै। ताहि पीसिकछु वृषहि खवावै
पशुशालामें जो धरवाई। तहाँ गरदबा निकट न जाई॥

अन्य

मनुषअस्थि छँटाक पिसावै। चनाके आटा सानि खवावै॥
पल्ली एक सजीव मँगाई। आटा सानि मध्य धरवाई॥
देउ खवाय वृषभको जबहीं। रोग गरदबा जाईतबहीं॥

अन्य लेपन

लै बंडार महीन पिसाई। काराजीरी सम मिलवाई ॥
सुरस मकोयमें ताहि पिसावै। महुवाकी पतरी बनवावै॥
गरम करै पतरी पर चुपै। टोटी हलके ऊपर धरै ॥
तेहिपर रुई पहल धरवाई। कपराभे तेहि देउ बँधवाई॥

अन्य बफारा

पातधतूर सँभारू पिलुवा। अंबरवेलि रूसकी मिलुवा॥
इन्है उसेइ बफारा दीजै। गरदब्बा रुज नीको लीजै॥

दागदेनेकी विधि

दहिने पुट्ठापर सुनु भाई। दाग त्रिशूल ठाड करवाई
रोगका नाम पटका

दोहा—एकी एका जो वृषभ, धरणीमें गिरि जाय ।
बेदम और बेहोश है, सो यमपुरको जाय ॥

चौ०—पहर एकदुईमें मरिजाई। यह रुज पटकाना म कहाई
उपाय

एककान वा आधेशिरतक। देउ दगायन कीजै कछुशक
मृत्यु न होय तो नीक देखावै। और उपाय न कछु बनि आवै
रोगका नाम बुडका

दोहा—बुडका रुज वृष महिषके, जो होवै पहिचान ।
बेदम और बेहोश है, बूड नीर जनु जान ॥
उपाय

चौ०—मीठा गुडशर सेर मँगावै। सात बेर वृषपर उतरावै॥
लै लै महावीरको नामा। सो धरि राखु आपने धामा॥
गुरधनियाँ वाकी बनवावै। भौमवार बैदरन चबवावै ॥
कछुक पुण्यवृषके हित कीजै। यथाशक्ति मनमें गुणिलीजै॥
और दवा याकी नहिं भाई। महावीरकी कृपा सेवाई॥
रोगका नाम घुरका यह जहरवातकी
किस्म गरदब्बाकी तरह है

दोहा—चुरचुराय घुरै घुरकि, लेफालार बहाय ।
सिगरे कर्ण विलोकिये, लक्षण दिये बताय ॥
चारोंपद फैलायके, लोटि धरणिमें जाय ।
सब शरीर शीतल करै नेत्र खुले रहिजाय ॥

चौ०—दोनों आँखि जाँय पथराई। अरु नथुन न तेनीर बहाई
श्वास गभीर कण्ठरूँधि आवै। चुरचुरायके शब्द सुनावै
ताते घुरका नाम कहावै। गरदब्बा की दवा करावै ॥

वेधनरोगका नाम

दोहा-वेधन रुजको नाम कहि, महाकठिन है जेर ।

ताके लक्षण परखिकै, दवा करो मति देर ॥

चौ०-हैजासम तेहिजानौ भाई। वृषभमहिषिको है दुखदाई

मरै बहुत नीके होय थोरा । ताके लक्षण सुनौ घनेरा ॥

आंवखूनमिलि दस्त जो आवै । फाटफाट गोबर देखरावै ॥

बहुत पातरा पोंकै भाई । वेहि अधिक कछु है चिकनाई ॥

दवा

दोहा-बन्बूररियाँ दक्षिणी, और सिलमिली जानु ।

आधसेर पाती हुवो, पीसि तक्रमें सानु ॥

चौ०-पाँचसेर माठा मँगवावै। तीनों घोरिके नारि भरावै ॥

साँझ भोर दुहुँबेर पियाई । अर्द्ध अर्द्ध परमान बताई ॥

तीनि दिवस याविधिकरु भाई । नीकन होय तो और उपाई ॥

अन्य

पाती सरसइ हरियरि लावै । आधसेर ताको कुचिलावै ॥

और कतीराको कुटवाई । आध पावकी वजन कराई ॥

घडा एक पानी घोरवावै । राति ओसमें ताहि धरावै ॥

थोर नीर वहि घरते लीजै । दुइनारी वृष प्रातहि दीजै ॥

साँझ भोर पीवै दिन तीनी । रोग मिटै सब संशय हीनी ॥

अन्य

मदिरा गुडकी लेउ मंगाई । एक पाव ताको तौलाई ॥

तामें ईसबगोल भिजावै । एक छटांक वजन करवावै ॥

(१२८)

वृषकल्पद्रुम

साँझ भोर दिनतीनि खवाई । वेधन रोग दूरि हैजाई॥

अन्य

अँबिलीकी पाती ले आवै । पीसि छानिकै ताहि पियावै॥
एक दिनामें केतन्यो बैरै । देउ वृषभ वेधन रुज हैरै॥

अन्य

सिरकाकी सिकञ्जी बनावै । अर्क गुलाब मिलाय पिलावै

अन्य

मिसिरी आधपाव पिसवाई । एक सेर पानी घोरवाई॥
निंबू निचोय कागदी दीजै । नारि भराय वृषभ वह पीजै

अन्य

पोदीना इक पाव मँगवै । तोला एक मिरच मिलवावै॥
जलमें पीसि वृषभको दीजै । वेधनरोगको नीको लीजै॥

अन्य मसाला चालीसा यह चारों रोगोंका है
सुनासिब है घरमें तयार धरा रहे वक्तपर काम आवैगा॥
दोहा-पटका बुडका धूरका, अरु वेधनका रोग ।

चारों रोग असाध्य कहि, सुनौ चातुरे लोग ॥
चौ०-चूरण नाम कहौ चालीसा । करि है सर्व रोगको खीसा
अँवरा हरं बहेरा लीजै । मेथी और कचेलिया दीजै ॥
आध आधसेर यहि लावै । आगू और प्रमाण बतावै॥
साँठि पीपरीमिरच भरंगा । अँबिलतास अजमोदै भंगा॥
तवाखीर अरु मूढ मँगवै । चीतकि लकरी ताहि मिलावै
साँभरि साँचर नमक जो खारी । जवाखार अरु गूगुरडारी

घोडवचमिलै तौलिसबलीजै । पाव पावकी वजनकरीजै
छालि सहीजन सुखै पिसाई । चारिसेर तेहि लै तौलाई
एकसेर करु सौंफविधाना । आगे और प्रमाणबखाना ॥
जीरा श्वेत असेतै हरदी । बीच पलाशै आँबा हरदी ॥
बेलगूद अरुककरा शृङ्गा । काचिफटकरी खीलसोहोगा ॥
असगंध सोवा बीज दुरदुरा । लोधपठानी काराजीरा ॥
फली मिरौर कलौंजी कुटकी । सर्वरोगको देहै फटकी ॥
इतनी दवा प्रमाण करीजै । आध आध पावै सबलीजै ॥
कूटि पीसि कपरा छनवावै । आध पाव नितप्रातखवावै
बरहौ मास तुरगको दीजै । सर्वरोग ताको हरि लीजै ॥

जो चमार बैलको जहरकी गोली खवाइके मारि

डारते हैं, तेहिके लक्षण व दवा

दोहा-जे चण्डाल चमार अरु वृषको जहर खवाय ।

जीव मारि हत्या करै, खाललोभ अधिकाय ॥

चौ०-गोली जहर तीनि विधि जानो । वत्सनाभ
शंखिया बखानो ॥ तीसर नाम सिंगिया कहिये । इन
गोलिनते मृत्यु जो लहिये ॥ तिनके लक्षण अरु पहि-
चानी । खायेपर परखो बुधवानी ।

चिह्न

जीभ ओठ सूजन देखरावे । बेहोशी हफफनिमुख आवे
मुखते बहुदुर्गंधि सो जानो । अरु आँखैटेढी पहिचानो
ये लक्षण पशुके तनु देखै । वत्सनाभ विष दियो सोलेखै

दवा

सधुई और पलाँकी लाई । दोनोंके रस लेउ कढाई ॥
 एक एकको अलग देखावै । दोनों मिलिकै चहै पियावै ॥

अन्य

गर्म दूध बकरीको दीजै । गऊ दूध विधि यहै भनीजै ॥

अन्य

खट्टा तक्र लेउ मँगवाई । निबूको रस मिलै पियाई ॥

अन्य

दोहा-यहि रूज में दुइ रात तक, चारा खान न देइ ।

जलकी जगह गुलाब दै, जहरदुःख हरि लेइ ॥

शंखियाकी गोलीके लक्षण

दोहा-दाँत जीभ सूखी लखे, मुखपै जलन देखाय ।

आँखें माफिक रक्तके, देह बहुत गरमाय ॥

श्याहखून पोंकै अधिक, बहु बदहोश जो होय ।

हाथ पाँय फैलायके, परा रहे पशु सोय ॥

चौ० यहिलक्षणयुत देखिय जाही । दीन शंखिया जानौ ताही

दवा

दोहा-गौके दूधनमें मिलै, घृत तेहि देइ पियाय ।

बढो शंखियाको जहर, ताही छिन हटि जाय ॥

अन्य

कत्था श्वेत गुलाबमें देवै । जहर शंखियाको हरि लेवै ॥

केलाकी जडको जल लीजै । मिलै कपूर नारि भरि दीजै ॥

अन्य

ले गुलाब उत्तम मँगवाई । मिलै कपूर सो देउ पियाई ॥

अन्य

अजादूधमें घृतहि चुरावै । नारि भरायकै ताहि पियावै ॥

अन्य

ईसबगोल लवाब बनाई । गौ को दधि देइ मिलाई ॥

डारि गुलाब नारि भरि दीजै । जहरशंखियाको इरिलीजै ॥

अन्य

विहिदाना लवाब लैलीजै । याही विधि पशुखानको दीजै ॥

सिंगिया जहरकी गोलिनके लक्षण व दवा

दोहा-पोंकै मूतै रुधिर बहु, अरु बेहोश देखाय ।

दशन जीभ नीलेवरण, जहर सिंगिया आय ॥

दवा

चौ०-गाइदूधतेहि बहुत पियावै । ताको पशुको जहर मिटावै

अन्य

बरफके पानीमें मिलवाई । पीसि कपूरे देउ पियाई ॥

जो यह पानी नहि कहुँ पावै । तो गुलाबमें मिलै पियावै ॥

की खीराको जल निकराई । अरु तरबूज नीक बहु भाई ॥

ईसबगोल लवाब निकारै । की विहिदाना भिजै सवारै ॥

इनमें कोह एकौ मिलि जावै । पीसि कपूर मिलै तेहि प्यावै ॥

खुरपकाज्वरलक्षण व दवा अँगरेजी मत

इलाजुलवहायम किताबका मत

दोहा-कहौ खुरपका ज्वर प्रबल, याको सुनौ हवाल ॥
 तीनि विलायतके वृषभ, कीन्हेंसिसकलबिहाल ॥
 चौ०-हिंदुस्थानअवधकेदेशा। तहँखुरपकाकरेकमकीशा।
 जेतने पशु रोगनतेज करै । दवा कियेते जल्दी सँभरै ॥
 जे वृभ बेबरदाशिरहतहैं। कोइ कोइतामेंमृत्यु गहत हैं॥
 फिरंगस्तान राज अँगरेजी । तहँखुरपका करैज्वरतेजी॥
 गरुव शरीरकेर वृष जानौ। ताखूते बडदुःख बखानौ ॥
 थोरे पशू मरत हैं भाई । फिरंगस्तान दवा अधिकाई॥
 इंगलिस्तान मुलुक इकहेवै । तहँखुरपकादुःखबहु देवै ॥
 जेतने पशुनकेर ज्वरआवैं । तामेंआधे तेहि मरिजावैं॥

लक्षण

सकल शरीर थरथरी पहिलै । फिरबोखारदेहीमें फैलै॥
 चरण हाथ मुख सींगगरमहैं। दाना परैं जीभमुखमेहैं॥
 हाथ पाँव मुख थन नथुननमें। परफैंफोला यहि ठौरनमें॥
 श्रवण शरद मुखलारबहतहैं। क्षुधाजायतनुरोमफटतहैं॥

दवा

दोहा-चरण खुरी मुख धोइये, प्रतिदिन षटवर जान ॥
 गर्म नीर करवायकै, साफ करो बुधवान ॥
 चौ०-पाँचटाँकफटकलैआवै। आधसेरपानीघोरवावै॥
 जखम औरमुखयासोंधोवै । जल्दी नीककरैसुखहोवै॥

बगलअयनथनसाफरखावै। औरजखम जहँ होइ धोवावै
कपराकी पोटरि सेंकवाई। माछिनकी कछु जतन कराई ॥

तेल खुरपकाके जखममें लगानेका

चौ०-पावएक अरसीको तेल। एकछटांककपूरै मेल॥
तारपीनको तेल मँगावै। तोला डेढ ताहि मिलवावै॥
अग्नि पकाय कपूरै डारै ॥ शीशीमें भरिकै तेहि धारै॥
जखमके ऊपर चुपरे जबही। कीरा मरें न औरौ परहीं॥
माछी लगैं जो मुखमें आई। तेल कपूर मिलाय लगाई ॥
जो तेजी बहुज्वरकी होई। औरौ दवा करौ पुनि सोई॥

दवा खानेकी

नव मासे करपूर मँगावै। तोला भरि सोरा मिलवावै॥
दोहा-मदिरा तोला तीन लै, पीसि कपूर मिलाय॥
ता पाछे सोरा मिलै, या विधि करौ उपाय ॥
शीतल पानी सेर इक, तामें सकल घोराय ॥
नारि भरायकै दीजिये, ज्वरको शांति कराय॥

अन्य

चौ०-कटुकचिरैतालेडमँगाई। तोला तीनिताहि पिसवाई
उतनै साँभरि नमक मिलावै। पंद्रह मासे सोरालावै॥
राब मिठाई डेढ छटांका। पानी आधसेर कूपैका ॥
सकल पीसिकै एकमिलावै। नारि भरायवृषभमुखनावै॥
हरियरि नरमघास तेहि दीजै। तापाछेविधिऔर करीजै॥

अन्य भोजनपथ्य

चाउरकी दरिया पकवावै । वृषको पेट भराय खवावै॥
 डेढ छटांक मिठाई नावै । अर्द्धछटांकनमकमिलवावै॥
 दुइइकबेर यहै विधि कीजै । दरिया मिलै खानको दीजै॥

हिन्दुस्तानी मत लक्षण व दवा

दोहा-दमै बहुत शोभा अधिक, चारा खाय न नेक॥

नथुना बोल वृषभके, चरण, धरणि नहिं टेक॥

चौ०-मुखमें हाथ डारिकै देखै । तप्तजानि ज्वरताहि विशेषै
 लार वहै कछु मुखते आई । याके लक्षण दिये बताई॥
 चारों चरण उतरि ज्वर आवै । फूटै खुरी रोग दरशावै ॥

दवा

गुजादल इक पाव पिसाई । जलके साथ मिलै मुखनाई

अन्य

श्याममिर्च दुइ तोला लावै । तामें घृत इक पाव मिलावै ॥

जलके साथ मिर्च पिसवाई साँझ भोर दिन तीनि पियाई

अन्य

ईसनिमूरि पाव इक लीजै । ताहिं पीसि मिलि घृत संग दीजै

तीनि दिवस नित प्रात खवावै । पीछे दवा और करवावै ॥

अन्य

पीपरपरकी नींब मँगाई । वाके दल इक पाव पिसाई ॥

गोघृत वजन बराबरि लीजै । तामें मिले वृषको दीजै॥

अन्य

तिल्ली श्वेत आधसेर लावै । जलमें पीसि वृषभमुखनावै
दोहा-श्याम उरद पिसवायकै, रोटी लेउ बनाय ।
एक तरफ काची रहै, एक तरफ पकिजाय ॥

चौपाई

तामें सर्षप तेल लगावै । छेदि गूँदिकै बहु चुपरावै ॥
थोरा थोरा वृषहि खवाई।खुरपक्का ज्वर दूरि कराई॥

अन्य

श्मशानकीमाटीलावै।कछुक अस्थिमिलिताहिखोदावै॥
पीसि कूटिकै राखुधराई।चारि पांच दिनवृषहिखवाई॥

अन्य

बब्बुरकी छाली उसनावै।सोजल बहुत गाढ औटावै॥
खुरके जखम देउ चुपराई।बहु मजबूत होय सुनु भाई ॥

खुरपक्काखुरहा ज्वर झारनेका मन्त्र साबर
अकतरखुरबावकतरदार । पाकै नीर मँदिर उजियार॥
आगेअर्जुनपाछे भीम।मोरखोरनाग्वादैंसिंह॥गोरखनाथ
निहालीबाली । गोरखनाथकी बाचा फिरी ॥मेरीभक्ति
गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच आदेश गुरुकी॥

मन्त्रविधि

चौ०-यहैमंत्रपठिकरौविधाना।खुरज्वरनाशनहैपरिमाना
एकहाथमे जल भरिलावै। पढौ मन्त्र मुख फूँकत जावै

(१३६)

वृषकल्पद्रुम

इकइसबेर मंत्र पढ़ि कीजै वाही जल मुख छींटा दीजै॥
देहीं छिरकि चरण छिरकावै। जौन बचै सो मुखै पियावै॥
तीनि दिवसनित प्रातै करै। औरौ कछुक दवा अनुसरै ॥

दूसरा मन्त्र साबर, धुरका, बौड़ी, डिवरा,

खुरपक्का रोगनाशन

गंग यमुन दो बहैं सरस्वती । गऊ चरावै गोरखयती ॥
गोरखयती कि बाचा फुरी । मानहुँ फूटे न आवै खुरी ॥
जारामारा मांढ बिसहरी । बडुका बौड़ी डिमरा रुजजारी
भस्मखुरखुट दोहाई नोना चमारी की मेरी भक्ति ॥

गुरुकी शक्ति पुरोमन्त्र ईश्वरोवाच

मन्त्रविधि

चौ०-नींबकेटेरुवाभे झारवाई। पाँचबेर पढ़ि मन्त्र सोहाई
तीसरा मन्त्र खुरपक्का ज्वर झारनेका

गुडहोय झोपरी मुहैन आव फूटै खुरी मैराजाका कुर
हिलहोय रजै महिका सौपी गाय मोरे चराय वहिल
वियाय मोरे चराये वेढि न जाय वेढे जायसहर दुइघोडे
दोहाई पांचो वीर पँडवनकी धनछाड़िकै सोरि न जाय ॥

मन्त्रविधि

चौ०-एकहाथमें नीरभरावै। पढ़ि पढ़ि मन्त्र ताहि फुकवावै॥
ग्यारह बेर मंत्र पढ़ि फूँकै। फेरिवहै जल मुखपर छिरकै॥
थोरा वृषभैयनको दीजै। सांझ भोर दिन तीन करीजै॥

विषहरारोग लक्षण वा दवा

सो०-शुटकी मिली गंधाय, गोबर पोंकै नीरसम ।

पेट झरै अधिकाय, दिन दिन दूबर होत है ॥

चौ०-गोवृषमहिषीमहिषबखानौ।रोगकठिनयहदवाप्रधानौ

वनमें विरवा एक कहावै । ताको नाम विषहरा गावै॥

पात पलाशकेर अनुहारी । बोडा चलै महीपर भारी ॥

आधपाव तेहि पात पिसाई । नारि भरायकै देउ पियाई

सातरोजलग प्रात खवावै।नीक होय पशुबहुसुख पावै॥

विषहरारोग दूसरे किस्मका ताके लक्षण

दोहा-रोग बिसहरा जानियो, वृष महिषीके होय ।

थरथराय कांपै अधिक, मुख सूखै दुख होय ॥

चौ०-चारा खाय न जलसोंनेहा।नितप्रतिदूबरिहोवैदेहा

यहि रूजके लक्षण पहिचानौ।बहुत मरैनीकेकमजानौ॥

अधिक उपाय दवा जो करिहै।मुश्किलतेसोनीकोहोइहै

दवा

बांबी दीमककी माटी लावै।जौन नवीन बहुत देखरावै॥

पानीमें तेहि पीसि सनावै।वाकी गुरिया गोल बनावै॥

शनरसरीमें सकलगुहावै । माल बनाय वृषभ पहिरावै॥

अन्यलेप

सोवाबीज जवायनि सरसौ।पाकी अंबिलीं कालेसरसौ

सैंधौ जवाखार अरु राई । हरदी तामें देउ मिलाई ॥

सकलदवा समभागपिसावै।गुनगुनकरि मुखलेपकरावै॥

ऊपरते पट देव बँधाई । तीनि रोजलग यहै लगाई ॥
झारै मन्त्र नीक ह्वै जावै । दुहूँ विषहरनको यह भावै॥

मन्त्र साबर

आरासारासरसरसरा । चरें समुद्रके तीर ।

पंख डोलावै विषझरै । निर्विष होय शरीर ॥

दोहाई नोनाचमारन । इति मन्त्रझरनेकी विधि
चौ०—अर्कपातछोटा पलईका।तापर डारूदूध वाहीका॥
पांच बूँदको है परमाना । ताहि बराबरि गोघृत साना॥
कुशकीलाभ लेउ इकआनी।तापर घेपि घेपि पढुवानी॥
पढिपढिमन्त्रफूकुपातापर । कुशभे घेपि घेपि वाहीपर
गेरह बार मन्त्र पढि झारै । ताके पाछे और विचारै॥
कान तरे कनपटी कहावै । बाई तरफू पात तहँ छावै॥
छुवतिछुवतियाही विधि जावै।पूँछलगे फिर दहिने आवै॥
छुवतछुवत पातालेंजाई।दाहिनि कनपटिमैं चपकाई ॥
तहां सूजि आई बहु भावै।तब जैहै रुज सुख उपजावै॥
सरदी वा वादीते वृषभ पोंके दोनोंके लक्षण एक हैं
दोहा-शरदीवादी दुहुँनते, वृष पोंके अकुलाय ।

ताके लक्षण कहत हौं, समुझे एक देखाय ॥

चौ०—बोले पेट पियासनलागै।ठंड शरीर रहै सुख भागै॥
गोबर बोहिदार कछु जानौ।ताकेलक्षण यह पहिचानौ॥
साँचर सेंधौ साँभरि लीजै।जवाखार सज्जी मिलि दीजै
हरं बहेर अँवरा डारो।हरदी छोटी हरं विचारो ॥

जीरा श्वेत असेत मंगावै। भाँग ककूँदनि ताहि मिलावै॥
 देवदारु मिरचै लै कारी। पिपरी पिपरामूर सो डारी॥
 मूरी सोवा दुहुनके बीजै। वायभिरंग शतावारि लीजै॥
 नागौरी असगंध लै धरिये। सोँठि मँगाय ताहि लै डरिये
 अजवायन अजमोद कहीजै। छालि सहीं जनता में दीजै॥
 टका टका भरि सब पिसवावै। दुइ तोला नित प्रात खवावै॥

गरमीते वृष पोंकाकरै ताके लक्षण

दोहा-जो गरमीते वृषभको, पेट झरै दुख होय।
 ताके लक्षण समुझिकै, दवा करौ सबकोय॥
 दमैं अधिक श्वासा चलै, प्यास बहुत सरसाय।
 हाथ धरै तन गरम है याको यहै सुभाय॥
 चौ०-एक छटांक कतीरालीजै। साँझ भिजे प्रात वृष दीजै॥
 जव आटामि लिपिंड बनाई। जे नहिं खाय तो देउ खवाई॥

अन्य

धनियाँ जीरा श्वेत मँगवै। टका टका भरि दुवो पिसावै॥
 एक छटांक भाँग मिलवाई। यव आटा सँग सानि खवाई॥
 साझ भोर दुहुँबेर खवावै। अर्द्ध अर्द्ध ताको करवावै॥

अन्य

फलस छालि लीजौ मँगवाई। आध पाव ताको पिसवाई॥
 यव आटामें पिंड बनावै। साँझ भोर दुहुँबेर खवावै॥

अन्य

जमुनी आँबकी गुठली लावै। छोटी माँई ताहि मिलावै॥

(१४०)

वृषकल्पद्रुम

पीसि यवनके आटा साने । पिंड बनाय वृषभमुख आने ॥

अन्य

आधपाव अरसी पिसवाई । यव आटासँग सानि खवाई ॥

महिष वृष रक्त पोंकै ताकी दवा

चौ०-पोंकै रुधिर महिष वृष जोई । गरमीते पहिचानौ सोई
धनियाँ सेंधौ नमक पिसाई यव आटा मिलि पिंड खवाई ॥

अन्य

और कतीरा भिजै खवावै । यवके आटामें सनवावै ॥

पेशाब बन्द होइ ताकी दवा

दोहा-गो महिषी वृष पशुनको, मूत्र बन्द दुख होय ॥

रूजनाशन विधि कीजिये, सुखी रहे वह सोय ॥

चौ०-राई बहुत महीन पिसावै । जलके साथ गरम करवावै ॥

अंडकोश पर लेपन करै । खुलै पेशाब दुख रूजहरै ॥

अन्य

बानरके दुइ जुवां मँगाई । दोनों श्रवणनमें डरवाई ॥

कलमीसोरा नान्ह पिसावै । तोला दुइकी तीनि करावै ॥

गोदधिसेर एक मेलवाई । नाज भरायके देउ पियाई ॥

अन्य

मदिरा गोघृत देउ मिलाई । आध पावतेहि वृषहि पिलाई ॥

वधियारोगलक्षण दूसरा नाम

दुरगवाँछा कहते हैं

छन्द—इक मक्षिकाको काम । है वाधिया तेहि नाम॥
 सो गुदाके ढिग जाय । पेठे उदरमें घाय ॥
 माछी जिये कछु देर । दुख रहै ताको घेर ॥
 इक जुवाँको लै आव । सो श्रवणमध्य चलाव॥
 ले नीबतेल मँगाय । सो गुदामध्य फुँकाय ॥
 एक चौगमें भरि फूक । जो कर याहि सलूक ॥
 कटूतेल लेइ पाव । सो वृष मुखमें नाव ॥
 हुक्काकी नीर मँगाय । सो श्रवणमें दे नाय ॥

लोहजारोग-लक्षण

दोहा—सुस्त रहै वृष जो बहुत, आकस्मात सुजान ।
 कछुक देर पीछे लखौ, मूतै रुधिर निदान ॥
 चौ०—याकोलोहजानामबखानौ। दवाकियेवृषनीकोजानौ
 बबुरपात इक पान मँगाई । हरदी दुइ तोला पिसवाई॥
 जलमें घोरिनारिभरिदीजै । साँझभोरदुहुँबेरकरीजै॥

अन्य

ककईपात पावभरि लीजै । अजै दूधइकसेरमें दीजै ॥
 दोनों मिलै नारिभरिप्यावै, तीनिबेर परमाण बतावै ॥

अन्य

दोहा—शिखरन दीजै वृषभको, जो लोहजा पहिचान ।
 तक्र मिठाई मिलैकै, दीज्यो ताहि सुजान ॥

जुलाब जब कोई दवा, न असर करै तब देय ॥
दोहा-लोहजा मरै वृषभको, नीक न होय सुजान ॥

तो जुलाब यह दीजिये, जलदी खुलै निदान ॥
चौ०-मेथीअजवाइनिअरुहरदी।तीनोंपीसिकरौबहुगरदी
पात कसौंजी और बकैना । ककईपात कंजके लेना ॥
यहि चारों पाता मँगवावै । गाँडरजड़पियाजकोलावै॥
लहसुनगोलकटैया पाता।टकाटकाभरिसमकरुभ्राता॥
दुइसेरपानीमें पिसवावै।नारि भराय वृषभमुख नावै ॥

दूसरी किस्मका लोहजारोग रक्त मूता करै
दोहा-जो गरमी मारा वृषभ, रुधिर मूति असलाय ॥
भूख घटै तनु दूबरो, बाकी दवा कराय ॥
चौ०-सूखी फाँकी आँमकी लावै।पक्के आधपाव तौलावै॥
माटीबरतन साँझभिजाई।प्रातै मलि खौजी फिकवाई॥
पाँच सातदिनवृषभकोदीजै।शीतलरहैदुःखसबछीजै॥

अन्य

दोहा-तिछी श्वेत भिजायके, एक पाव दिन सात ।
प्रातै पीसि पियाउ नित, शीतल ह्वैहै गात ॥

“पैरमें रसबादी उतरै ताके लक्षण”

दोहा-रसबादी जेहि वृषभके, उतरै चारों पाय ।

दवा करो ततकाल ही, रुज दूषण मिटिजाय॥
चौ०चारोंचरणकिगांठिजोसूजै।रसबादीतेहिनामकहीजै
गौ वृष महिषीके रस उतरै । ताहि मसालादै रुज हरै॥

मसाला

वायविरंग भाँग अजवायन । सहिजन जड़की छालि
मिलायन॥निर्गुंडीअरुबीजपलासा।सैंधौसौचरनमकसों
वासा॥सकलदवासम भाग पिसाई। चूरणकरिधरिराखौ
भाई॥एकमासलगपशुकोदीजै।रोगहरै बहुसुख बढीजै ॥

अन्यलेप

योगियारँडजड़छालि मँगावै। पातधतूर सँभारू लावै ॥
भाँग मिलै समभाग पिसाई। गुनगुनकरि लेपन करवाई
दागनेकी विधि—(यहि सूरतिका दाग देइ)



गांठि गरेरि गोल दगवावै । मध्य लकीरै दुइ करवावै ॥
जौन सकलकी लिखी बनाई। यहविधि चारोंगांठि दगाई

आगीमें जो वृषभजरिजाय ताकी दवा
दोहा—पावकमें वृष जो जरै, जलदी दवा कराउ ।

प्याज पीसि ताको सुरस, ऊपर तेहि टपकाउ ॥

चूनाको जल लीजिये, अरु अरसीको तेल ।

दुवौ बराबरि घेरिकै, पोति देउ सब मेल ॥

रोगका नाम परका

दोहा-पंखनदार भुजङ्ग इक, चिटकै कछुक उड़ाय ।

जो वृष ऊपर नीकरै, तेहि रूज यह ह्वै जाय ॥

चौ०-परकारुजतेहिनाम कहावै। सकल अङ्गछालापरिजावै
चारा खाय न कछु करिनेहा । नितप्रति दूबरि होवै देहा
जो गफलतिमें दवान करिहै। खालचिटकतनुकी सबजैहै
दूसरनाम भुजंगको जानौ। उड़ानाग ताको पहिचानौ॥

दवा

दोहा-गेहूँका भुस लायकै, अग्नि देउ सुलगाय ।

ताकी धुई देवाइये सकल शरीरमें जाय ॥

अन्य

चौ०-रविदिन अरुण बनातै लावै। ताहि धोय वृषके मुखनावै
बहै बनात शीशपर बांधै। पांचरोज दोनों विधिसाधै ॥
यह विषधर काहूको काटै। सकल अंगटुकराह्वै फाटै॥
परछाहीं जेहि ऊपर परै। ताहूको कछु नाकिस करै ॥

रोगका नाम जरा शरदऋतुकी घासमें फेना

उठता है सो खायेते यह रोग होता है

दोहा-कीट होत इक शरदऋतु, तृणपर ताको वासु ।

श्वेत फेन मुखते द्रवै, जरानाम कहि तासु ॥

चौ०-दूसरानाम चौखरा कहिये। जोर अढ़ाई दिन लगरहिये
महिषी वृष वनमें जो चरई। वहाँ घासखाये रूज बढ़ई॥
खातै घास बैठि पशु जाई। कुछ न बसाय हिलै नहिं पाई॥

जहेरदारकिरवा अरु फेना । याकी दवा करो बुध ऐना॥

पहिचान

पशुकेतनुश्याही कछु दरसै । जानौ जरारोग वृषतरसै॥

दवा

कूटिपीसिइकसेरकरेला । वृषभ खवाय देउ मुख मेला ॥

अन्य

श्याम मिर्चामिलि घृतै पियावै । तासों जहर मिटै सुख पावै ॥

अन्य

कुम्हडा पीसिकै नीर निच्चावै । नारि भराय वृषभ मुख नावै

अन्य

दोहा-नीबपात पिसवाय बहु, आधासेर रसु लेउ ।

एकपाव गोदधिहि मिलि, वृषभ नारि भरि देउ ॥

अन्य-टटका

दोहा-वृषभ पीठिपर काग जो, बैठे आय बनाय ।

ताही क्षण विष सकल हर, सुख बाढै अधिकाय ॥

चौ०-ताहित और जतन को कीजै जाविधि काग बैठि दुख

छीजै थोरा दधि पीठी पर छिरकै । बैठिकाग खावै मन भरिकै ॥

सरेदमी रोग लक्षण । घुरघुराकरै, श्वास बहुत चलै,

मेहनतिमें जीभ काढि देत है

दोहा-घुरघुराय श्वासा चलै, मेहनत परे कलेश ।

जीभ काढि ठाढो रहै, सुस्त बहुत नहि वेश ॥

(१४६)

वृषकल्पद्रुम

चौ०-साँसउखरिताहिकोजाई।याकीदवाकरौमनलाई ॥

दवा

दुइतोलाभरिसोरा लीजै।यव आटा सँगखानको दीजै ॥

अन्य

सौंफकुलींजनमिरचैंकारी।तोलातोलाभरिसब डारी ॥

आधपाव सक्कर मिलवावै।अरुणवरणकी जौनदेखावै ॥

आधसेर गो दूध घोराई।प्रातसमय वृषके मुखनाई ॥

अन्य

सौंठिअतीससौंफकोलीजै।मिसिरीश्याममिरचसमकीजै

पीसिछानिबरतनभरिलीजै।साँझसमय वृषखानकोदीजै

आधपाव परमान बतावै।यव आटामें पिण्ड खवावै ॥

अन्य

सितासौंफइकपावमँगवाई।तोलासात मिरच मिलवाई

औरा एक टकारि लीजै।कंजगूद इक तोला दीजै ॥

भोनयनू दुइटका करावै।सकल महीन पीसि घेपवावै

आटामें दुइ पिंड बनाई।सांझभोर पशुके मुखनाई ॥

अन्य

मदिराआधपावपरमाना।एक मास लग देउ सुजाना ॥

अन्य

किसिमिसिऔरमुनक्कापिपरी।मिरचसौंफअदरखलैधरी

जीरा श्वेतलेउ विहिदाना।मौरेठी मिलिकरौविधाना ॥

सकलदवासमभागपिसाई।बबुरगोदजलमेंझिजवाई ॥

तेहि पानी गोली बनवावै । तोला इक परमान करावै ॥
सांझ भोर इकएक खवाई । रोगजाय पशु बहुसुख पाई ॥

अन्य

प्याज यतरि इक पाव सोलीजै । तामें नमक टका भरि दीजै ॥
जल पियायकै देउ खवाई । इकइस रोज प्रमाण बताई ॥

अन्य

नीब पातको रस निकराई । तामें सर्षपतेल मिलाई ॥
गोदधि तीनों सम घेपवावै । सातरोजलग वृषहि पियावै ॥
घामेमें फिरि बहु दौरावै । सर्षपतेल नाक मग प्यावै ॥

अन्य

जीरा श्वेत पाव इक लीजै । सूखपात मेंहदी सम कीजै ॥
श्वेतखदिर अरु लेउकतीरा । आधपाव लै दूनो धीरा ॥
रसवत तोला तीनि मँगावै । सकल पीसि नान्ही करवावै ॥
बाकी तीनि खुराक करीजै । सांझ भिजै प्रात वृषदीजै ॥

अन्य

प्याज कतीरा कुचिलि बनावै । जल पियायकै ताहि खवावै
आरजा साँकदमीका

दोहा—सरेदमीते अलग है, साँक दमीरुज येह ।
साँकलेन मुशकिल करै, दुबरावै बहुदेह ॥
चौ०—सरेदमीको मेहनत परई । नरीसाँक घुरघुरधुनिकरई ॥
साँकदमीमें यह नहिं सोई । इतने भेद कहत सब कोई ॥

चौ०-अँबराहरबहेरा लीजै।श्याममिरचचारोंसमकीजै॥
पावपावभरिवजनकरावै।दुइसेर चावल मिलै पकावै॥
शक्कर लालि आधसेरडारी।हलुवाकरितेहिलेउउतारी॥
तीनिछटांकप्रात निशिदीजै।सांकदमीको अंत करीजै॥

दोहा-सँहुडकेरी डारलै, दुइ तोला परमान।
आगिमैं भूजै ताहि कछु, पीसै तौन सुजान ॥

चौ०पिपरामूलमिरचलैकारी।इकइकतोलातामहँडारी॥
यवकीआटामिलैखवावै।सांकदमीसोरुजमिटिजावै॥

दोहा-इंद्रायनकी मूल अरु, पीपरि मिरच मिलाय ॥
रंडाके जरकी त्वचा, पिंपरामूल मँगाय ॥
अजवायनि वंडार अरु, त्रिफला हरदी दारु ॥
कूलींजन खारी नमक, सेंधों सोंचर धारु ॥
दुइदुइ तोलाके वजन, सबकी लेइ तुलाय ॥
गेहुँके आटा सेर इक, रोटी लेइ बनाय ॥
बिनुवा कूंडन मध्यधरि, वाको दीजै फूँकि ॥
कोइलाकरि बरतन धरै, ता रोटीको बूँकि ॥

चौ०-दवा तीनितोलेलैलीजै।यवपिसानमेंसानिकेदीजै॥
आधीआधीदुहुँबेरदीजै।सांकदमीकादुखहरिलीजै॥
“रोग खाँसी व धाँसैका शरदी व गर्मी दुहुँनतेहोता है”

दोहा-धांसकरैबहुजोरसे, खाँसी अधिक बढ़ाय।
शरदीगरमीदुहुँनते, ताको करो उपाय ॥

चौ०-जो गरमीते धांसकराई । ताकेलक्षणसुनौबताई॥
 सूखीखांसीवृषभको आवै।तौगरमीकी दवा करावै॥
 दवा-बब्बुरगोदकतीरालीजै।टकाटकाभरिपीसिकरीजै॥
 जवआटामें ताहिसनावै।पिंडबनायवृषभमुखनावै॥

अन्य

शक्करसोंफमिरचले कारी। गोघृतसकल बराबरिडारी॥
 दोहा-चारों रकम पाव इक, यव आटामें सान ।
 इकइस दिन लगु दीजिये, याको यही विधान ॥

अन्य

चौ०-लेउमलाइदूधकीभाई। जलपियायइकपावखवाई

अन्य

एकछटांक रूसके पाता। सांभरिनमकटकाभरिलाता॥
 यवआटामें पीसि मिलाई। पिंडबनायके देउ खवाई॥

अन्य

जवाखारइकतोलालीजै। सोंठि छटांकपीसिधरिदीजै ॥
 रसकोसिरकादेउमिलाई। नारिभराय वृषभमुखनाई ॥

अन्य

मदिरा लेउ मिठाईकेरी। गोघृत ताहि मिलावो घेरी॥
 आधपाव दोनोंतुलकीजै। नारिभराय वृषभको दीजै॥
 गोघृतसहतबराबरिलावै। कछुककैफरा पीसि मिलावै॥
 थोरा गुनगुन ताहि कराई। नथुननके मगदेउ पियाई॥

सर्षपतेलनारिभरि दीजै । खाँसी धांसदुहूँरुछीजै ॥

शरदीते खाँसी धांस होय ताका उपाय

दवाका नाम महाकल्याणपिंड

दोहा-सोंठि सोहागा कैफरा, कुटकी वायभिरंग ।

हींग फटकरी मिर्चलै, जीरा श्वेतै रंग ॥

चौ०-सकलदवासमभागपिसाई।मेथीआटादूनमिलाई॥

जलसोंसानिपिंडबनवावै । एकछटांकप्रमाणकरावै ॥

गोली एक प्रातनितखाई । वृषको रोग दूरिहै जाई ॥

औररोगजोहोयदिमाकी । ताको नीककरै मनताकी ॥

अन्य

तीनिवर्षका गुड लै आवै। एकछटांक प्रमाण करावै॥

एकटकाभरिसोंठि पिसाई । दोनों मिलैके देउ खवाई ॥

अन्य

दोहा-सोंठि पीपरी मिरच अरु, लहसुन चारों पीस ॥

तोलातोला भरि सकल, रुजको करि हैं खीस ॥

चौ०-मेथीकेरपिसानमँगावै।ताहिमिलायवृषभमुखनावै

अन्य

हींग अघेला भरि पिसवाई। अदरखएकछटांकमँगाई ॥

तेहिको चीरि हींग भर दीजै। ऊपरते कपरौटी कीजै ॥

आगीकीभुलभुलिमेंधरियो।पाकीजायतबदवानिकरियो॥

पीसि महीन ताहिकौ कीजै। जलपियायकैपीछूदीजै ॥

सात रोजलग यहै खवावै। शरदी खाँसी धांस मिटावै॥
बांसपात नितप्रात खवाई। याहूते धांस सब मिटिजाई॥

अन्य लेपन दिमागका

पड़वा महिषक गोबर लावै। आध पाव ताको करवावै॥
खरीनमक टकाभरि लीजै। जलसाँघोरि पकाय धरीजै॥
शिरपर लेपन यहिको करै। तीनिरोजमें तेहि रुजहरै॥

अन्य

दोहा—आजदूध अरु सहतको, पाव पाव भरिलेउ।
सोंठि टकारि पीसिकै, मिलै प्रात नित देउ ॥

अन्य

घेलाभरि अफीम मँगावै। अदरखमें तेहि चीरिभरावै ॥
अग्निपकायपीसितेहिलीजै। तीनि खुराक यहीकी कीजै ॥
तीनि रोजलग प्रात खवावै। खाँसी धांस नीकहै जावै॥

अन्य

हरियरिबोडीपुस्तकिलावै। ताहिपीसिकैसतनिकरावै ॥
अदरख चीरि सतैको भरै। माटी लेसि भारमें धरै ॥
जब परिपक्वहोय निकराई। पीसिवृषभको देउ खवाई ॥
याविधिचारिपांचदिनकीजै। धांसजायरुजदुखहरलीजै॥
दोहा—दोनों दवा अफीमकी, अधिक गरम तेहि जान॥
बहु उपाय करि थकिरहै, तब यहकरौ विधान॥

अथ तिलानाम रोग

दोहा-तिलानाम रुज होत है, गोवृषमहिषीमाहिं ।
 ताके लक्षण कहतहौं, समुझि लीजियो ताहिं ॥
 दमै अधिक शोसा बहुत, देह दूबरि होय ।
 रंगति बदलै भूख कम, ये लक्षण वृष सोय ॥

चौ० आवैसांसखुरखुरीगरमें, तिलानामरुजजानोतनमें॥
 कारेतिल अरु सोंठि मँगावै। मूसरि श्वेत मिठाई लावै॥
 सकल पीसि घृतदेउ मिलाई। पाव पाव समले तौलाई॥
 गेहूँ सेर अढाइक लावै । सांझ भिजै प्रातै कुटवावै ॥
 पंद्रह पिंडमिलैकै बाधो। प्रात सांझ नित वृषमुख साधो॥
 दोहा-जौन नीबके वृक्षमें, पानी बहै बनाय ।

ताकी लीजै पाव इक, नारिभराय पियाय ॥

चौ०-आठरोजजलगुदीज्योभाईतिलारोगनीकोह्वेजाई॥

अन्य

महिषी कोखि दुवौ दगवावै। याहुँते रुजखोय बहावै॥

कृमि उदर नाशन जोंकी वगैरह

दोहा-गोवृष महिषीके उदर, जो जोंकी जाय ।

दवा करौ तेहि पशुनकी, तासोरुजबहिजाय॥

घास एक बहुत जमाई, गंग नदिनके तीर ॥

ताकै खाये प्रगटतन, जोकी उदरशरीर ॥

चौ०-वृषभमहिषदूबरह्वेजाई। कछुकदिनामेंसोमरिजाई॥

श्वेतवरणकी जोंक दिखावै। कबहूँ गोबरसंगइक आवै॥

दवावकी क्वाथ

चौ०—मैलाबगुली एक मँगावै । दससेर पानीमें उसनावै ॥
अष्टविशेषी जबरहि जाई । तबमलिकै सब अस्थि फेंकाई ॥
जेहि पशुको इकदिवस पियावै । जोंकी झरै बहुत सुख पावै ॥
निंबकौरीको तेल मँगावै । आधपावनित प्रातपियावै ॥
पांचसातदिन पशुको दीजै । जोंकी झरै नीक तोहि लीजै ॥

अन्य

बहुहुक्कनको लीजो पानी । तामें घोरुतमाखूफुकनी ॥
कपरछानि भरि नारि पियावै । जोंकी उदर केरि झरि जावै ॥
पाव एक राई पिसवावै । आधसेर दधिघोरि पियावै ॥
तीनिचारिदिन दीज्यो भाई । जोंकी उदर केरि झरि जाई ॥

अन्य

एकछटाक पलासपापरा । पाव एक गुड़ मिलिकै धरा ॥
पांचसातदिन लगु यह दीजै । जोंकी सकल उदर कीछीजै ॥

अन्य

पलासपापरा राई लीजै । अजवाइनको मीला दीजै ॥
खारीनमक सकल समडारौ । पीसिकूटि बरतनमें धारौ ॥
एकछटाक दवा तौलाई । आधपाव दधिमें सनवाई ॥
यवके आटा पिंड बनावै । पांचसात दिन लगु वृषपावै ॥

अन्य

त्रिफलापातसरीफालीजै । और गंदनापात कहीजै ॥

इंद्रायनिकीजरमिलवाई । सकलदवासमभागपिसाई ॥
एकछटाँकवजननितकीजै । दधिमें घोरि पियनको दीजै ॥

अन्य

लहसुन अरुगुलकन्द मिलाई । आधपाव दोनों पिसवाई
गूगुरुतोलाएक मिलावै । चनाके आटा सानि खवावै ॥

सर्वविषनिवारण गरुडमन्त्र

छिपॐ स्वाहा

दोहा—गरुडमन्त्र पहिचानियो, याको बहुतविधान ।

सर्वहलाहलको हरै, जानौ चतुर सुजान ॥

मन्त्रमहोदधि ग्रंथ इक, है चौदहों तरङ्ग ।

ताहि अन्तमें लिखो यह, याको सकल प्रसंग ॥

चौ-सर्पबीछिकुत्ताअरुस्याहू।लघुअरुबड़ेजीवविषधारू

औरजहांलगविषधरयोनी । तिनकेकाटेमृत्युजो होनी ॥

विषपत्थरकाष्ठादिमें जानौ।मूलपत्रफलमाहिबखानौ ॥

धोकेनर पशुखायजो कोई । नाशहोयतेहिजानौ सोई ॥

येसबजहरनाश करवावै । गरुडमन्त्रविधिवतझरवावै ॥

कोई पशु सूजी खाय जाय ताके लक्षण

दोहा—गोवृषमहिषी और पशु, सूजिखाय जो जाय ।

ताके लक्षण ओषधी, जो अजमाई आय ॥

चौ०कठिरोगयहपशुकोजानौ।मानौकालआयनियरानौ

जे चण्डालवैरकरिपावैं । ते नरपशुको सूजि खवावैं ॥

आटाकोगोलाइककरिकै । ताके बिचमें सूजीधरिकै ॥

देय खवाय पशुको जबहीं । उडैझोंझ आंतनमें तबहीं॥
 औरसूजिकोन्योविधिखावै । दानाअरुचारापरिजावै ॥
 दरद उदरमें पैदा करै । भूख पियास सकल परिहरै॥
 सुस्तशरीर रहै दिनराती । नीर बहै नयनन बहुभांती॥
 दिनदिनदेहजातदुबराते।फिरिमरिजायकछुकदिनबीते॥
 पेटचिरायचमारनदेखा।बहुत पशुनको करिकै सीखा॥
 चोंकी सूजि झोंझ आंतमें।रुजलक्षण चीन्हे पशुतनमें॥

दवा खानेकी

चुंबक पत्थर नाम कहावै।मकना तीस फारशी गावै॥
 लोहेते बहुप्रीति रखावै।छुवते लपिटि जायतेहि भावै॥
 दुइ तोला लै मिही पिसाई।अरु गुलाबके नीर घोराई॥
 नारि भराय पियनको दीजै।याके खायेरुज यहछीजै॥
 पीछे तीनि दंड घटिकाके।और दवा तेहिकी ज्योनीके॥
 रेंडीतेल आधसेर लीजै । पक्की तौल कि वजन करीजै॥
 डेढ़सेर गौदूध मिलावै । थोरा थोरा पशुहि पियावै ॥
 यहिते सूजि झोंझते निकरै।सुखी होय पशुको दुखहरै॥

अन्य

दाख मुनक्का एक छटांकै । रेंडीतेल उतनहीं लेकै ॥
 सनईकी पाती मँगवावै । आधपाव परमान बतावै ॥
 दोहा-पानी लीजै सेर इक, दूध गऊ दुइ सेर ।

गुड पुरान इकपाव भरि, पीसि एकमें गेर ॥

फिरि आगीमें चुरैके, जब पानी जरिजाय।

दूध रहै तब छानिकै, धरु बरतनमें लाय ।

पहिले चुंबक वृषको, पीसि फँकाउ प्रवीन ॥

पीछे दवा पियाउ यह, सूजिगिरे दुखहीन ।

चौ०-फेरिमसालादेउबनाई । साँझभोरजोहजमकराई ॥

चारानरमवृषभवहपावै । नितप्रतिथोराथोरबढ़ावै ॥

मसाला हाजमेंका

चौ०-घोडवचवायभिरंगमँगवावै । अजवायन अरुकुटकीलावै

छोटीबडीहरअरुमोथा । करपसकाराजीरी साथ ॥

हींगसोहागाखीलकरावै । वजनबराबरिसबपिसवावै ॥

जलपाके इकसेर चुराई । हींग पीसि तामें पकवाई ॥

जबपानी आधाजरिजाई । सकलदवातेहिदेउमिलाई ॥

एकएकतोला जो नित खाई । साँझभोर दुहुँबेरबताई ॥

धूपकालगरमीजब आवै । चौथाई तब सौंफमिलावै ॥

सुजवारोगलक्षण

दोहा-सुजवाको पहिचानियो, सूजिजाय सब अंग ।

ताके अब लक्षण कहौ, दवा किये रूज भंग ॥

दावै ऐचे खालके, चुरचुरात मरराय ॥

ताको सुजवा नाम कहि, लक्षण दिये बनाय ॥

चौ०-आधपावगेरूमँगवावै । नींबपातइकसेरमिलावै ॥

पीसिछानिकैताहिपियाई । पुनिकरिगरमदेहमलवाई ॥

अन्य

सांभरिनमकमहीनपिसावै । सकलअंगमेंसूखमिलावै ॥

बहै पसीना तनमें जबहीं । सुजवा रोग जायगो तबहीं॥

अन्य

श्यामकसौंजी पात पिसाई । आधसेर ताको तौलाई॥

एकछटांक मिरच मिलवावै । जलमेंघोरिवृषभमुखनावै

दूसरी तरहके सुजवाकी पहिचान

दोहा-फूले उदर जो वृषभको खालछुयेचरराय ।

ताकी दवा बखानिये, सुजवा एक कहाय ॥

चौ०-साबुनपानीमें पिसवावै । गुरियारिकेउपरमलावै

बहुत देरतक मालिस करै । दवा खाय तुरतै दुखहरै ॥

अन्य

साबुन एक छटांक मँगवावै । गोघृत आधपावऔटावै

तामें साबुन देउ मिलाई । जब सेराय तब देउ पियाई

पांचसात दिन याविधिकीजै । सुजवानीकहोयदुखछीजै॥

सरी तरहके सुजवाकी पहिचान

दोहा-सुजवारोग बखानिये, सूजै सकल शरीर ।

अंगुरी देइ गडाइये, मडहा होय गँभीर ॥

चौ०-बठियाकेकंडनकीरूनी । पावएकपिसवावौआनी

एकसेर पानी औटावै । ताहि घोराय सेराय पियावै ॥

तीनि रोज लग दीज्यो भाई । सुजवारोगदूरि हैजाई॥

महुवावीसी रोग लक्षण

दोहा-भौहैं सूजैं वृषभकी, श्रवण सूजि बहुजायँ ॥

थलथलाय थलकै वदन, महुवा वींसी आय ॥

चौ०-सेर एक महुवा पिसवावै। एक पाव गुड ताहि मिलवै ॥
 चारि सेर देत क मिलाई। एक खुराक प्रमाण बताई ॥
 या विध चारि पांच दिन दीजै। महुवा बीसी रोग हरीजै
 रसपित्ती उझरै कालक्षण व दवा

दोहा-रसपित्ती रूज नाम है, वृषभ महिष तनु माहि ।
 भौहैं तों दी सृज बहु, थल थलाय दुख ताहि ॥

चौ०-सकल शरीर ददोरा परै। कछुक चले कछुलंबे धरै ॥
 महुवा वृक्ष किरूनी लावै। आध पाव ताको करवावै ॥
 उतनै गोहूँ चपरी लीजै। गरू एक छटांक करीजै ॥
 धेला भरि अफीम मिलवावै। दुव तोला तेहिन मकडरावै
 सर्प तेल आध सेर लीजै। दवा पीसिता में मिल दीजै
 सकल अङ्ग में देउ मिलाई। शर दी ऋतु में धुवांत पाई
 बेर किल करीको फुकवावै। ताकै धुवां अग्नि तपवावै
 मसाला वसंत ऋतुको-अर्षवती सा

पंचक-अर्षवती सालिख्यो वृषभको वृक्षवती सकिछालै है
 ऋतु वसंत में वृष पियावै बढै सुखनको जालै है ॥
 अर्जुन आँविली आँव अकोहर अँवरा कीज्यो ख्यालै है
 केशव परसाद विचारिक है फिर यही काय ही हेवालै है ॥
 कैथा अरू कचनार करौंदा कटहरकै वांगवालै है ॥
 केलवेल सौधवेहना वब्बूरलेउ वकैनाछालै है ॥
 सिरसा अरू सिरसईसहोरासहिं जनसरोविशालै है ॥
 केशव परसाद विचारिक हो फिरियाहिकाय ही हेवालै है ॥

पिछुवा कहीं पलाशपदोंरूपी परको अरझालैहै॥
 महुवा लेउ मयनफलजमुनीनीबखँभारिकरीलैहै ॥
 कनकोहरि फल गोल देखावै कंजाकांटकटीलै है ॥
 केशवपरसादविचारिकहैफिरियहिकायहीहेवालैहै ३
 इनको छीलिकूटिसुखवावैमनभरिसमकरितोलैहै ॥
 मीठागुडइकमनहि मिलावै नामजासुको भेलै है ॥
 पानी डारि कपास उठावै मदिराचुवै अमोलै है ॥
 केशवपरसादविचारिकहैफिरियहिकायहीहेवालैहै४
 पावसेर नित देउ वृषभको नारिभरि मुखमें लै है ॥
 प्रातकाल इक मास पियावै भूँख बढै तनुपालै है ॥
 दूबर पशु मोटो है जावै रुजका मानौ कालै है ॥
 केशवपरसादविचारिकहैफिरियहिकायहीहेवालैहै५

मसाला ग्रीष्मऋतुका

दोहा—ग्रीष्मऋतुहि बखानियो, धरती तपै अकाश ।
 हाहाकरि मारुत बहै, कीज्यो दवा प्रकाश ॥
 चौ-एकछटांकमिरचपिसवावै।वतनोसाँभरिनमकमिलावै ॥
 पावएक घृत तामें दीजै । यव पिसानमें पिंड करीजै ॥
 ग्रीष्मऋतुहि विशेषखवावै।दृष्ट पुष्टतनुरुजनहि आवै ॥

मसाला वर्षाऋतुका

दोहा—वर्षाऋतुमें वृषभको, देउ चनेठि विशेष ।
 भूँखबढै ताकति करै, कहीं ग्रंथके लेख ॥

चौ०-हरदीखारीनमकमँगवै।चनायवनकोआटालावै॥
 असगंधकीजरसुखैपिसावै । टाटपुराना काटिकुटावै॥
 दुइदुइ सेर दवा सबकीजै । पांचसेरगुड तामें दीजै ॥
 माटीकेबरतनभरिधरिये।मनुभरितक्रमहिषिकोडरिये।
 जहँ गोबरको घूर देखावै।एक मास तहँ गाडि धरावै॥
 पीछेखोदिवोलिमुखधरिये।कीरापरैसिद्धितबकहिये॥
 दोहा-सकलमीसिमलिमिहि पट, छानिधरो बुधवान ।
 इकइक नारि पियाइये, सांझभोरसो जान ॥
 चौ०-प्रथमबनायजेठमेंधरिये।वर्षाऋतुमेंवृषैपियाइये॥
 माछीमसाडांसनहिलगिहै।हृष्टपुष्टतनुबलउपजैहै॥

मसाला शरदऋतुका

दोहा-शरद-ऋतुहिमें दीजिये, सीरा महा अनूप ।
 दुर्बलते मोटा करै, बाढ़ै अंग स्वरूप ॥
 गुम्माको बिरवा हरा, लेउ समूल उखारि ॥
 पांचसेर मुसरे कुचिलि, दे हाँडीमें डारि ॥
 चौ०-दशसेरसीरादेउमिलाई।घामेंआठदिवसधरवाई॥
 नवयें दिन नारीमें भरै । वृषभ पियाय पुष्ट बहुकरै ॥
 गेरहादिन लगदेउ सुजाना । ताके पीछे और विधाना॥

अन्य

पावसेर नित प्याज कुचावै।एकमासलगताहिखवावै॥

अन्य

काई ताल केरि पिसवाई।एक पाव नित प्रात खवाई॥

यव पिसानमें पिंड बनावै। अठयेंदिन ऋतुमाहिं खवावै॥
मोटा होय अधिकसुखलीजै। चाराबहुतहजमकरिदीजै॥

अन्य

दोहा—लेउ चमरौधा खोदिके, एक पाव परमान ।

शरद ऋतुहिमें दीजिये, यव पिसानमें सांन ॥

“मसाला चनेठि शरद व हेमन्तऋतुमें देय ।”

दोहा—कहाँ चनेठी वृषभकी, शरद हिमन्तै होय ॥

शीत न व्यापै बलकरै, रुज नहिं आवै कोय ॥

चौ०—चना यवनको आटालीजै। मेथी हरदी कूटिधरीजै॥

राई लहसुन कुचिलि पिसावै। पाँच पाँच सेरै सबनावै॥

साँभरि लोन प्याज कुटाई। सर्षप तेल देउ मिलाई ॥

गुम्मा लेउ समूल उखारी। चारों दवा एकमन डारी॥

माठा मन पाँचकतेहि भरौ। माटीके बरतन करि धरौ॥

क्वांरमास धरि घूरे धरिये। कातिकमें वृषमुखमें डरिये॥

पाव येक नित वजन करावै। यवके आटा सानिखवावै॥

मसाला हेमन्त ऋतुके घुघुवारी पिंड

दोहा—घुघुवारी यह पिंड है, सकल सुखनकी खानि ।

ऋतु हेमन्तमें दीजिये, वृषको कहाँ बखानि ॥

चौ०—झिकवारीको गूद मँगावै। तौल पसेरी पाँचकलावै॥

कारेतिल अरु लेउ मिठाई। तामें महुवा देउ मिलाई॥

तीनों दश दश सेर करीजै। और दवा आगे लखिलीजै॥

सोवा बीज जवायनि हरदी। राई चदसुर सब करगरदी॥

राई जौन वनरसी भाई । सेर सेर पाँचौ पिसवाई ॥
 कूटिछानि सब दवा मिलावै । महुवातिल मूसरकुटवावै ॥
 माटीके बरतन भरि धरिये । एक सेर नित प्रातखवैये ॥
 चनाके आटामें तेहि दीजै । रोगहरै तनु पुष्ट करीजै ॥

मसाला औटि शिशिरऋतुमें देय

दोहा-औटी दीजै वृषभको, शिशिर ऋतुहिमें मीत ।
 अति बलिष्ठ तनु रुज हरन, करौ ग्रन्थ परतीत ॥
 चौ० हरदी एकछटाँक पिसावै । साँभरितोलातीनि मिलावै ॥
 आधसेर गुडतामें दीजै । दुई सेर पानीमें औटीजै ॥
 अठ्यें रोज वृषभ जो पावै । भूख बढ़ै तनु मोट देखवै ॥

मसाला शरीर पुष्ट करनेका हेमंत ऋतुको

दोहा-देउ मसाला वृषभको, ऋतु हेमंत सो जानि ॥
 यासों तनु मोटो रहै, महावृद्धि बलखानि ॥
 चौ०-बैंगन भांटा लेउ मँगई । लंबे लंबे कहि देखराई ॥
 डेढसेर तेहि तौल करीजै । दुई सेर महिषी तक्र धरीजै ॥
 भांटा नीर उसेय मिलावै । आधसेर साँभरि तेहि नावै ॥
 तीनों मिले एकत्र करीजै । आधसेर नित प्रातहि दीजै ॥
 चुकि जावै तब और बनावै याही दवा जरूर करावै ॥

नासु हिमंतऋतुको

दोहा-नासु दीजिये वृषभको, बहुदौरे करिरोश ।
 नथुनाते बोलै नहीं, हलुको रहै हमेश ॥

चौ०-आँवा हरदीको पिसवावै।सर्षपतेलैताहि मिलावै॥
नासु वृषभ हिमऋतुमें दीजै।दौरै बहुत सकल सुखलीजै ॥

अन्य

यलुवा नकछिकनी मँगवावै।रीठी डारि सूख पिसवावै॥
पैसा पैसा भरि परमाना । रंडकि चोंगी भरौ विधाना॥
नथुनामें ताकी फुलवावै । दौरै रोशकरे सुखपावै ॥

मसाला यलुवापाग हेमन्त वा शिशिर ऋतुमें देय
दोहा-यलुपागहि दीजिये, हिमऋतु शिशिरमें जानु॥

याके गुण अब कहतहौं, समुझि देखु यह मानु॥
चौ०-दौरावै मैजलिबढवावै।थकवाही कबहुँ नहि आवै॥
कदम साफ बहुतै सो होई । कदकस कोस बढै बहुसोई॥
दोहा-यलुवा लीजै टकाभरि, पीसि महीन कराय ।

एक सेर गोदूधमें, हांडी मध्य पकाय ॥

मीठी आँच कराइये, युगल यामलों तात ।

चारा दाना देइकै, दवा खवायो प्रात ॥

चौ०-आठरोजलगवृषकोदीजै।नवयेंदिनते मेहनतिलीजै।
दौरावै नित कोश बढावै । भोजन बहु बरदासिकरावै॥
घीव मिरच साँभरि नित दीजै।दानाभिजै चनातेहिलीजै॥

मसाला सेन्दुरुफगुटिका दौराये बहुत दमकस

रहै रंगति बढै

दोहा-दौरै बहु दमकस रहै, रंगति बढै अनूप ।

भूख अधिक मोटा रहै, देह न लागै धूप॥

चौ०-मैजालिकीसाधनकरवावै।इकदुइनित्तैकोशबढावै॥
सेन्दुरफ गुटकानामकहीजै।माधवमासमें वृषकोदीजै ॥

दवा

सेन्दुरफ चारभरि पिसवावै । एक छोहारामें भरवावै ॥
दूध गायका दुइ सेर लावै । इक हाँडीमें ताहि पकावै ॥
तामें डारि छोहारा दीजै। दीनभरि मीठी आँचकरीजै॥
आधा दूध रहै जब भाई। काढिछोहारा पीसिमिलाई॥
सेन्दुरफसहित दूध वृषदीजै॥एकमास भरि यतनकरीजै॥

मसाला छोहारावटी पाग

दोहा-पौष माघको मास जब, धन अरु मकरबखानि॥
कहौ छोहारा वटीतब, वृषभ खवावो आनि ॥
चौ०-बहुत बलिष्ठ पुष्टस्थूला।होय अरोग्यहरें सबशूला ॥
शिरसाके बीजा मँगवावै । बकला फौरिकै गूदपिसावै॥
एकछोहाराकोलेलीजै।गुठलू काढिकै ताहि भरीजै ॥
ऊपरते तागा भरि बांधौ । एक सेर गोपयमें राँधौ ॥
आधा दूध रहै जब भाई । पीसि छोहारा देड मिलाई॥
एक मास नित प्रात खवावै ।रंगतिबढैबहुत सुखपावै ॥

मसाला क्षुधाकरण

दोहा-कहौ मसाला वृषभको, अति मोटा ह्वै गात ॥
मगमें थकै न भूखबहु, अति आहारकरिजात ॥
गोल कटैया सुखैकै, मूलसहित पिसवाय ॥
हरदी उतनी डारिये, साँभरि सेर मिलवाय ॥

चौ०-पाँचसेरमीठागुडलीजे । गूगुरआधपावतेहिदीजे॥
कारीजीर पाव इक लावै । सकल दवाको पीसि छनावै॥
धरौ मिठाईमें सब सानी।डेढ पाव नित प्रात बखानी ॥

मसाला हाजमा व पाचनका शिशिरऋतुका
दोहा-कहौं मसाला पचनको, और नीर बहु पेय ।
यासों तनु मोटो रहै, शिशिरऋतुहिमें देय ॥
चौ०-टाटपुरानाकोफुकवावै।कोइलाकरिकैताहिधरावै॥
गोलकटैया लेउ समूला । फूँकि करौ ताहीकोकोइला ॥
साँभरिनामक पीसि सब लीजै।तीनों दवा बराबरि कीजै॥
प्रातहि एक छटाँक खवावै । चूनको आटा ताहि मिलावै ॥

मसाला सर्वरोग उदरव्याधिवगैरहपर
दोहा-कहौं मसाला वृषभको, सब रोगनपर देय ।
भूख बढ़ै मोटा करे, सकल रोग हरिलेय ॥

चौपाई

नित प्रति बारहमास खवावै।ताकेरोगनिकटनहि आवै॥

दवा

त्रिफला बीज पवाँर जवाइन । सेंधौराई सोंठि मिलाइन
कचरीसहिंजनछालि मँगावै । सकल दवासमभागपिसावै
माटीकी मटुकीमें भरिये । दहीमिलायओरविधिकरिये
तुरँग लीदिमें देउ गड़ाई । सातरोज पीछे सुखदाई ॥
शिशिरहेमन्तशीतजबआवे । सिरकादधिकेयोजमिलावै
एक पाव नित वृषभको दीजै।सुखीरहैसब रुजहरिलीजै

अथ मसाला कमताकति वृषको

दोहा-अबल वृषभको सबल जो, कीन्हो चहौ सुजान॥

तो यह दवा पियाइये, मोट होय बलवान ॥

चौ०-महिषिवियानिजौनदिनजानौ । ताही दिनते यह परमानौ ॥ उत्तम पहिला भैसि बियानी । मध्यम दोहला तिहला जानी ॥ अथवा वृद्ध युवा जेहि पावै । ताको दूध वृषभ सुखनावै ॥ तीनि छटाँक घृतै मिलवाई । नारिभरायकै देउ पियाई ॥ बारहदिन लग या विधिकरै । सुखी रहै तन बल बहु धरै ॥

मसालाको नाम अठरोजा हरमहीनेमें

आठरोज देना चाहिये

दोहा-कहाँ मसाला अठरोजा, हर महिनेमें देय ।

उदर व्याधि सगरी मिटै, बादीको हर लेय ॥

चौ० पिपरीपियरामूरिजवाइन । मिरचसोंठिजरलेइंद्रायन कामीला असगंध नागौरी । बीज पलाश ताहि वेधरी ॥

पीपरजडकीछालीसुखावै । अरुहुरहुरासमूल मँगवै ॥

अजमोदै अरु वायभिरंगा । सोवा पात सूख तेहि संग

दोहा-इक इक लेउ छटाँक सब, पीसि मिही छनवाय ।

श्वेत तिलनको तेल तेहि, पाव एक मिलवाय ॥

तीनि बरसको लाय गुड़, सबके दूना डारि ।

हाथेभे सब मिलै करु, बरनन धरौ विचारि ॥

चौ०-परिवाते आठइलग खाई प्रातै एक छटाँक बताई

मसाला सर्वउदरव्याधिपर बादी, बदहजमी, पेट फूलै,
पेट बोलै, हेरुहा, जोकी वगैरहका है

दोहा-कहौं मसाला उदरका, सर्व व्याधि हरि लेय ।

बादी बदहजमी मिटै, किर्म जिगर नहिं होय ॥

चौ०-गलगलायबोलैवृषपेटा। अरुफूलैबहुताहिसमेटा ॥

हरबहेरा अँवरालीजै । कचरी अजवायनि तेहि दीजै ॥

मिरच पीपरी हरदी लावै । राई गूगुर भांग मिलावै ॥

सेंधा सोंचर नमक मँगाई। इंद्रायन जर ताहि मिलाई ॥

इतनी दवा भागसमलीजै । इक इकताहि छटाँक करीजै

झिकवारीको गूद मँगावै । तामें अदरख पीसि मिलावै ॥

पावपाव दोनों परमाना । गो दधि सेर अढाइक जाना ॥

पीसिमिलै वरतन धरिराखै। एकछटाँक प्रातनितचाखै ॥

मसाला बदहजमी व देह सूजि जाय तेहिका

चौ०-त्रिकुटा काराजीरा लीजै । जीरसफेदचीतवचदीजै

हींग सौंफदेशी राईलेई ॥ कचरी अजवायनि हरदी देई ॥

भूजि सोहागा औरफिटकरी। सेंधौ सोंचर अरुभैडखरी ॥

त्रिफला वायबिडङ्ग मँगाई। कुटकी सजीखार मिलाई ॥

जवाखार मिलिसबसमकरै । पीसिछानिबरतनमां धरै ॥

बदहजमी अरु सूजनि जावै। काम परै जो पशुहि खवावै

सारा मसाला

चौ०-माठापन्द्रहसेर मँगाई। तौलिडुसेर पियाजुमिलाई ॥

पांच सेर आटा गेहूँका । खारी नमक सेर पांचैका ॥

दोहा-मटुकामें देहिभरि सब, सातरोज लगुसारि ।

अठय रोज पियावई, गुण सुनिये निरधारि ॥

चौ०-होयतयारभूखबहुलागै।माँछीडांसदेखितेहिभागै॥

मसाला तयारीका

दोहा-दानाको यह हजमकरि, अरु चारा बहु खाय ।

होय मोटबल अधिकतनु, लक्षण कहौं सुनाय ॥

चौ०-अदरखमिरचपिपरामूरी।गूदबदामलेउतेहिफोरी॥

तजसमेत यह पांचौ लीजै।आधआध पावै समकीजै॥

लौंगै एक छटाँक मंगावै । और दवाकी वजन करावै ॥

दोहा-जावित्री अरु जायफल, छोटि इलाची जान ।

सोंठि सहित चारौ रकम, छःछः टंक बखान ॥

चौ०-बगलापान वारिसौलीजै।सकलदवामिलिकुटीधरीजै

सांझ सुबहदुहुँ बेर खवावै।पैसापैसा भरि करवावै॥

मसाला बदहजमीका

दोहा-बदहजमी वृषको लखै, ताहि मसाला देउ ।

सांझ भोर दुहुँ बेर कहि, यह खुराक करि लेउ ॥

चौ०-घोडवचमिरचहींगमंगावै।अरुअजमोदाताहिमिलावै

पैसा पैसा भरि सब लीजै।साधोएकछटाँककरीजै॥

कूटि छानि सब पिंड बनावै।चनाके आटा मिलै खवावै॥

मसाला वाथी वदहजमी रफाकरनेका

दोहा-यहै मसाला वृषभको, प्रात टकाभरि देय ।

बादी बदहजमी दुवौ हजम नीक तेहिलेय ॥

चौ०—सैंधोंनमकभांगअजवायन।नागौरीअसंगंधमिला
यन।पाव पाव चारों करिलीजै। आगे और प्रमाणकरीजै॥
सोंचरनमकलेउसेरआधो । सांभरिसेरसवाइकसाधौ ॥
अजवायनखुरसानीलीजै । लोटासजीतेहिमिलिदीजै ॥
एक पाव दोनों परमाना। कूटि छानिसबधरो सुजाना॥
चनाकेआटा पिंड बनावे । प्रातटकाभरिनित्त खवावै॥

मसाला यह बहुत फायदेका है

दोहा—कहौ मसाला नीक कह, सकल फायदा होय ।

टका एकभरि दीजिये, प्रात पिंडकरि सोय ॥

चौ०अजमोदाअजवायनहरदी।त्रिफलात्रिकुटाकोकरुग
रदी।भैंगरैला अरु भांगभरङ्गी।पांचोंलोनकरोसमअंगी॥

फस्तखोलै रुधिर लेवेकी जगह जो रगनके नाम

वा इन फस्तनके खोले जो रोग अच्छे

हैं जाते हैं तिनके नाम

दोहा—प्रथम रगनको परिखिबो, जानो नाम सुजान ।

तेहि पाछे नस्तरहनो, रुधिर लेउ परमान ॥

चौ०-विन जाने छेदैँनसकोऊ।हाथ काटिडारोतेहिहोऊ

सकलचौपयापशुतनजानो।रक्तलेनइकइसपहिचानो

तिनके नाम सुनो मनलाई।भिन्नभिन्न मैं कहों बनाई ॥

जीभमें दुइ रगेहैं तिनके नाम—जफदयन

जीभके नीचे दुइ रग जानौ।दांतनके सामुहैं बखानौ॥

इन फस्तनके खोले भाई।मुखके रोग सकल बहिजाई॥

दोनों नथुनोंमें दुइरंगें हैं तिनके नाम—अकरन
 दोनों नथुनोंमें दुइ जानो । दोनोंको इक नाम बखानो॥
 बहुनिगाहकरि देखो जाई । तब पहिचान परैगो भाई ॥
 इन फस्तनके गुण निलीजै । नेत्ररोग सगरे हरलीजै ॥
 नाक श्रवण अरुमुखके जानो । इन फस्तनभेनीक बखानो
 दोनों श्रवणनके नीचे दुइ रंगे हैं तिनके नाम—दुवाजीन
 दोनों श्रवणनके तर जानो । एकएक रंगसो पहिचानो ॥
 सो गरदनकी तरफ गई है फस्त खोलि गुण बहुतकही है
 खुजली बदखोरा मिटि जावै । फूलपरै तनु ताहि मिटावै
 जितने रुज गरमीते जानौ । खोलै फस्त नीक तिहिमानौ ॥

दोनों मोढनते दुइ रंगे पीठिके तरह गई हैं,

तिनके नाम—आखिरसान

दुइरंग दोनों कन्धमें जानो । एक एक दुहुँ ओर बखानो ॥
 सो पीठीकी तरफ गई है । इनकी फस्त कइ ऊरुजमें है ॥
 पीठ कमरके रोग बहावै । उठ बैठेमें चरण खिचावै ॥
 बोझा नहिं कछु उठै उठाई । और खुरनके रोग नशाई ॥
 जो पशु तन यह फस्त खोलावै । इतने रोगनीक ह्वै जावै ॥

दुइरंगे दोनों मोढनके अगारी छातीपर सेपेटकी तरफ

दोनों ओर एक गई हैं तिनके नाम—वारजीन
 दोनों मोढन अग्र बखानो । भितरी तरफ सोइ पहिचानो ॥
 छातीपरते प्रगट सो कहिये । पेट ओर इक एक सोलहिये ॥
 इनमें फस्त लिये तेहि जानो । केतनो रोगनाश करि मानो ॥

दीमागी मुडहलना होई । खपती बेहोशी कहि सोई ॥
बदहवास घबराहट तनमें । इतने रोग जाँय इक पलमें ॥

डुइरगें दोनोंतरफ छाती-सीनामें एक एक हैं सो

दिमागपरकोगई है तिनमें नाम अदजान
दोहा-छाती सीनामें प्रगट, दुर रग कहौ सुनाय ।

एक एक दुहुँ तरफ हैं, सो दिमाग पर जाय ॥

चौ०-इनमें फस्तखोलि जो जानै । छातीके सब रोग हेरानै
अरु अगिले पैरनके रोगा । ते सब नीक होयँ यहि योगा ॥

ये चारों रगें चारों पाँयनमें घुटुना गाँठिनके नीचे
भीतरीतरफ होती हैं तिनके सात साफिनात
दोहा-यहि रग चारों चरणमें, गाँठि घुटुना जौन ।

ताके नीचे कहतहौं, तरफ भीतरी तौन ॥

चौ० ईनचरहुनमें फस्तखोलावै । खुरनरोग सगरे मिटि जावै
चलै सुस्त पगु जखम जो होई । लीन्हें रुधिर नीक सो होई ॥

यह चारों रगें चारों पाँयनमें घुटुना गाँठिनके

बाहिरीतरफ वही रगनके सामने होती हैं

तिनके-नाम वहसियात

दोहा-यहि चारों रग जानियो, घुटुना गाँठिन माहि ।

बाहिरीदिशि ये प्रगट हैं, बहु निगाह करु ताहि ॥

चौ० भितरी रग जो प्रथम बखानी । तिनके समुहे हैं यहि जानी
इन फस्तनको खोलि जो जानै । छाती भरी जकरि खुलि मानै
पग के रोक हरारति तनकी । नीक होय यह जानी मनकी ॥

यह एक रग दुमके नीचे जरमें बहुत पतरी बड़ी
निगाहते देखि परति है तेहिका नाम । जनव ।
दोहा—यहरग एक बखानियो, दुमनीशे जरमाहि ।

बहुत पातरी होति है, करु निगाह बहुताहि॥
चौ० यहरगफस्तखोलि जौ जानै । अंडकोशकेरोगनशानै
उदरमें झोरिया जो बच्चनकी । तेहिकेरोगहरै यह नीकी ॥
दूध सूखि जावे जेहि पशुको । अरु बढहजमी होवे वाको
इतने रोग सकल हरि जाई । जो मन चितते करो उपाई

अग्निपुराणे द्विनवत्यधिकद्विशततमेऽध्याये

गोशांतिर्लिख्यते । धन्वन्तरिरुवाच

श्लोक—गोविप्रपालनं कार्यं राज्ञा गोशांतिरेव च ॥

गावःपवित्रा माङ्गल्या गोषु लोकाःप्रतिष्ठिताः ॥ १ ॥

शकृन्मूत्रं परं तासामलक्ष्मीनाशनं परम् ॥

गवां कण्डूयनं वारि शृंगस्याघौघमर्दनम् ॥ २ ॥

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिश्च रोचना ॥

षडङ्गं परमं पाने दुःस्वप्नादिनिवारणम् ॥ ३ ॥

रोचना विषरक्षोघ्नी आसदः स्वर्गगो गवाम् ॥

यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः ॥ ४ ॥

परगोआसदः स्वर्गी गोहितो ब्रह्मलोकभाक् ॥

गोदानात्कीर्तनाद्रक्षां कृत्वा चोद्धरते कुलम् ॥ ५ ॥

गवां श्वासात्पवित्रा भूःस्पर्शनात्किल्बिषक्षयः ॥

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ॥ ६ ॥

एकरात्रोपवासश्च श्वपाकमति शोधयेत् ॥
 सर्वाशुभविनाशाय पुराऽऽचरितमीश्वरैः ॥ ७ ॥
 प्रत्येकं च त्र्यहाभ्यस्तं महासान्तपनं स्मृतम् ॥
 सर्वकामप्रदं चैतत्सर्वाशुभविमर्दनम् ॥ ८ ॥
 कृच्छ्रातिकृच्छ्रं पयसा दिवसानेकविंशतिम् ॥
 निर्मलाः सर्वकामाढ्याः स्वर्गगाः स्युर्नरोत्तमाः ॥ ९ ॥
 त्र्यहमुष्णं पिबेन्मूत्रं त्र्यहमुष्णं घृतं पिबेत् ॥
 त्र्यहमुष्णं पयः पीत्वा वायुभक्षः परं त्र्यहम् ॥ १० ॥
 तप्तकृच्छ्रव्रतं सर्वपापघ्नं ब्रह्मलोकदम् ॥
 शीतैस्तु शीतकृच्छ्रं स्याद्ब्रह्मोक्तं ब्रह्मलोकदम् ॥ ११ ॥
 गोमूत्रेणाचरेत्स्नानं वृत्तिं कुर्याच्च गोरसैः ॥
 गोभिर्ब्रजेच्च भुक्तासु भुञ्जीताथ च गोव्रती ॥ १२ ॥
 मासेनैकेन निष्पापो गोलोकी स्वर्गगो भवेत् ॥
 विद्यां च गोमतीं जप्त्वा गोलोकं परमं ब्रजेत् ॥ १३ ॥
 गीतैर्नृत्यैरप्सरोभिर्विमाने तत्र मोदते ॥
 गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः ॥ १४ ॥
 गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम् ॥
 अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम् ॥ १५ ॥
 पावनं सर्वभूतानां क्षरन्ति च वहन्ति च ॥
 हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान्दिवि ॥ १६ ॥
 ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमेषु योजिताः ॥
 सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ॥ १७ ॥

गावः पवित्रं परमं गावो मांगल्यमुत्तमम् ॥
 गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः ॥ १८ ॥
 नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥
 नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ १९ ॥
 ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् ॥
 एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति ॥ २० ॥
 देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभिः सकलं जगत् ॥
 धार्यते वै सदा तस्मात्सर्वे पूज्यतमा मतः ॥ २१ ॥
 पिबन्ति यत्र तत्तीर्थं गंगाद्या गाव एव हि ॥
 गवां माहात्म्यमुक्तं हि चिकित्सां च तथा शृणु ॥ २२ ॥
 शृङ्गामयेषु धेनूनां तैलं दद्यात्ससैन्धवम् ॥
 शृङ्गवेरबलामांसीकल्कसिद्धं समाक्षिकम् ॥ २३ ॥
 कर्णशूलेषु सर्वेषु मंजिष्ठाहिंगुसैन्धवैः ॥
 सिद्धं तैलं प्रदातव्यं रसोनेनाथवा पुनः ॥ २४ ॥
 बिल्वमूलमपामार्गं धातकी च सपाटला ॥
 कुटजं दन्तमूलेषु लेपात्तच्छूलनाशनम् ॥ २५ ॥
 दन्तशूलहरैर्द्रव्यैर्घृतं रामविपाचितम् ॥
 मुखरोगहरं ज्ञेयं जिह्वारोगेषु सैन्धवम् ॥ २६ ॥
 शृङ्गवेरं हरिद्रे द्वे त्रिफला च गलग्रहे ॥
 हृच्छूले बस्तिशूले च वातरोगे क्षये तथा ॥ २७ ॥
 त्रिफला घृतमिश्री च गवां पाने प्रशस्यते ॥
 अतीसारे हरिद्रे द्वे पाठां चैव प्रदापयेत् ॥ २८ ॥

सर्वेषु कोष्ठरोगेषु तथा शाखागदेषु च ॥
 शृङ्गवेरं च भांगीं च कासे श्वासे प्रदापयेत् ॥ २९ ॥
 दातव्या भग्नसन्धाने प्रियंगुर्लवणान्विता ॥
 तैलं वातहरं पित्ते मधुयष्टीविपाचितम् ॥ ३० ॥
 कफे व्योषं च समधु सपुष्टकरजोऽस्त्रजे ॥
 तैलाज्यं हरितालं च क्षतभग्ने शृतं ददेत् ॥ ३१ ॥
 माषास्तिलाः मागोधूमाः पशुक्षीरं घृतं तथा ॥
 एषां पिंडी सलवणा वत्सानां पुष्टिदा त्वियम् ॥ ३२ ॥
 बलप्रदा विषाणानां ग्रहनाशाय धूपकः ॥
 देवदारु वचा मांसी गुग्गुलुर्हिंसुसर्पिणी ॥ ३३ ॥
 ग्रहादिगदनाशाय एष धूपो गवां हितः ॥
 घण्टा चैव गवां कार्या धूपेनानेन धूपिता ॥ ३४ ॥
 अश्वगन्धतिलैः शुक्लं तेन गौः क्षीरिणीभवेत् ॥
 रसायनं च पिण्याकं मर्त्यो यो धारयेद्गृहे ॥ ३५ ॥
 गवां पुरीषे पञ्चम्यां नित्यं शांत्यै श्रियं यजेत् ॥
 वासुदेवं च गन्धाद्यैरपरा शांतिरुच्यते ॥ ३६ ॥
 अश्वयुक्कुक्षुपक्षस्य पञ्चदश्यां यजेद्धरिम् ॥
 हरि रुद्रमजं सूर्यं श्रियमग्निं घृतेन च ॥ ३७ ॥
 दधि सम्प्राश्य गाः पूज्य कार्यं वह्निप्रदक्षिणम् ॥
 वृषाणां योजयेद्युद्धं गीतवाद्यरवैर्बहिः ॥ ३८ ॥
 गवां तु लवणं देयं ब्राह्मणानां च दक्षिणाम् ॥
 नैमित्तिके माकरादौ यजेद्विष्णुं सह श्रिया ॥ ३९ ॥

(१७६)

वृषकल्पद्रुम

स्थण्डिलेऽब्जे मध्यगतं दिक्षु केसरगान्सुरान् ॥
सुभद्राजो रविः पूज्यो बहुरूपो बलिर्बहिः ॥ ४० ॥
खविश्वरूपा सिद्धिश्च ऋद्धिः शांतिश्चरोहिणी ॥
दिग्धे नवो हि पूर्वाद्याः कृसरैश्चन्द्र ईश्वरः ॥ ४१ ॥
दिक्पालाः पद्मपत्रेषु कुम्भेष्वग्नौ च होमयेत् ॥
क्षीरवृक्षस्य समिधः सर्षपाक्षततण्डुलान् ॥ ४२ ॥
शतं शतं सुवर्णस्य कांस्यस्य च द्विजे ददेत् ॥
गावः पूज्या विभोज्याश्च शांत्यै क्षीरादिसंयुताः ॥ ४३ ॥

अग्निरुवाच

शालिहोत्रः सुश्रुताय हयायुर्वेदमुक्तवान् ॥
पालकोप्यङ्गराजाय गजायुर्वेदमब्रवीत् ॥ ४४ ॥

इति श्रीवृषकल्पद्रुमे गोवृषशुभाऽशुभलक्षणचिकित्सा-
मन्त्रयन्त्रगोशांतितन्मूर्तार्तिनिरूपणं समाप्तम्

शुभं भूयात्



हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

७ वीं खेतवाडी बेंक रोड कार्नर,

मुंबई - ४०० ००४.

दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास

६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,

पुणे - ४११ ०१३.

दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

लक्ष्मी वेंकटेश्वर-प्रेस व बुक डिपो

श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस विल्डींग,

जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,

कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.

दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास

चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.

दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

